ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

वैसाख-ज्येष्ठ, संवत् नानकशाही ५४६
वर्ष ७ अंक ९ मई 2014

संपादक : सिमरजीत सिंघ *एम. ए, एम. एम. सी.*
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ *एम. ए, एम. एम. सी.*

चंदा	
सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन: 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**
फैक्स: 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

सलोक मः ३ ॥
माणसु भरिआ आणिआ माणसु भरिआ आइ ॥ जितु पीतै मति दूरि होइ बरलु पवै विचि आइ ॥
आपणा पराइआ न पछाणई खसमहु धके खाइ ॥ जितु पीतै खसमु विसरै दरगह मिलै सजाइ ॥
झूठा मदु मूलि न पीचई जे का पारि वसाइ ॥ नानक नदरी सचु मदु पाईऐ सतिगुरु मिलै जिसु आइ ॥
सदा साहिब कै रंगि रहै महली पावै थाउ ॥१॥
मः ३ ॥ इहु जगतु जीवतु मरै जा इस नो सोझी होइ ॥ जा तिन्हि सवालिआ तां सवि रहिआ जगाए तां सुधि होइ ॥
नानक नदरि करे जे आपणी सतिगुरु मेलै सोइ ॥ गुर प्रसादि जीवतु मरै ता फिरि मरणु न होइ ॥२॥
पउड़ी ॥ जिस दा कीता सभु किछु होवै तिस नो परवाह नाही किसै केरी ॥
हरि जीउ तेरा दिता सभु को खावै सभ मुहताजी कढै तेरी ॥
जि तुध नो सालाहे सु सभु किछु पावै जिस नो किरपा निरंजन केरी ॥
सोई साहु सचा वणजारा जिनि वखरु लदिआ हरि नामु धनु तेरी ॥
सभि तिसै नो सालाहिहु संतहु जिनि दूजे भाव की मारि विडारी ढेरी ॥१६॥ *(पन्ना ५५४)*

'बिहागड़े की वार महला ४' शीर्षक के अंतर्गत श्री गुरु रामदास जी द्वारा उच्चारण की गई उक्त पउड़ी के साथ श्री गुरु अमरदास जी द्वारा उच्चरित दो सलोक दर्ज हैं। इन सलोकों में श्री गुरु अमरदास जी फरमान कर रहे हैं कि जो मनुष्य जन्म से ही विकारों में ग्रस्त है वो जीवन में कुकर्म करता हुआ मद (शराब) में गलतान रहता है। ऐसा (मद) पीने से उसके दिमाग से अक्ल ख़त्म हो जाती है तथा वो जो मुंह में आए बोलता रहता है। कहने से तात्पर्य, मद आदि पीने से मनुष्य की अक्ल मारी जाती है तथा वो मुंह से गलत बोलकर अन्य लोगों के हृदय को ठेस पहुंचाता है। ऐसे मनुष्य को अपने-पराए की पहचान नहीं रहती तथा वो मालिक (प्रभु) की दरगाह में भी धक्के खाता है अर्थात् प्रभु उसे पसंद नहीं करते। ऐसा पदार्थ, नशा, जिसके पीने से प्रभु याद नहीं रहता तथा प्रभु-दरगाह में सज़ा मिलती है, जहां तक वश चले कभी सेवन नहीं करना चाहिए। जिसको प्रभु-कृपा से प्रभु-नाम (रूपी नशा) मिल जाता है तथा जिसे सतिगुरु मिल जाता है वो मनुष्य प्रभु के नाम-रंग में रंगा रहता है और प्रभु-दरगाह में उसे सम्मान मिलता है।

गुरु जी का दूसरे सलोक में फरमान है कि जब इस संसार के जीवों को सही समझ आ जाती है तब वे ज़िंदा ही मर जाते हैं अर्थात् माया में विचरण करते हुए भी माया से उपराम रहकर मुक्तावस्था को प्राप्त करते हैं। मगर यह समझ तभी आती है जब जीवों पर प्रभु खुद कृपा करते हैं, वरना जीव माया की निंदा में सोये रहते हैं। प्रभु अपनी कृपा द्वारा जीवों को सतिगुरु से मिलाते हैं और ऐसे में जीव जीवित अवस्था में ही मरण अवस्था अर्थात् मुक्तावस्था को प्राप्त कर लेते हैं।

'पउड़ी' में श्री गुरु रामदास जी पातशाह फरमान कर रहे हैं कि प्रभु को किसी की कोई परवाह नहीं, क्योंकि सब कुछ करने-कराने वाला वो स्वयं है। सारे जीव उसका दिया ही खा रहे हैं, सब उसके मुहताज हैं। जो जीव प्रभु की प्रशंसा करता है, उसी पर प्रभु की कृपा होती है, उसे ही सब कुछ प्राप्त होता है। वही शाहूकार है, सच्चा व्यापारी है, जिसने प्रिय 'नाम' का व्यापार (जपना और जपाना) किया है। अंतिम पंक्ति में फरमान है कि जिस प्रभु की कृपा से मन से माया का साया ख़त्म हो गया है उसी की सभी जन प्रशंसा करो, उसी का गुणगान करो!

सारा ब्रह्मांड ही किरत के सिद्धांत में संलग्न है

ब्रह्मांड की उत्पत्ति तथा प्रसार को अगर गहनता से देखा जाए तो इसके कण-कण में किरत (श्रम) विचरण करती नज़र आती है। इस ब्रह्मांड का प्रत्येक जीव अकाल पुरख द्वारा बख़्शे किरत सिद्धांत में लगा हुआ नज़र पड़ता है। छोटे-छोटे पक्षी अपने सुंदर-सुंदर रैण-बसेरे (घोंसला) बनाने के श्रम में लगे दूर-दराज़ से तिनका-तिनका इकट्‌ठा करते हैं। जब घोंसलों में बच्चे पैदा होते हैं तो उनके आहार के लिए पक्षी दूर-दूर तक उड़ान भरकर, खाने के लिए कुछ-न-कुछ लाकर अपने बच्चों के मुंह में डालते हैं। यह दृश्य हर मनुष्य को आश्चर्म में ले जाता है। इसी तरह हमारी धरती अपनी ही लय में श्रम कर रही है। सूर्य के इर्द-गिर्द चक्कर लगाने का श्रम अगर धरती भूल जाए तो इस रमणीक ब्रह्मांड का अंत हो जाएगा। यहां तक कि एक छोटी-सी चींटी भी अपने छोटे-से जीवन में कभी निठल्ली नहीं बैठी दिखती। बात क्या, ब्रह्मांड की हर वस्तु अपने-अपने श्रम में लगी हुई है। अकाल पुरख को इस सारे ब्रह्मांड के प्रसार का कर्त्ता होने के कारण सबसे बड़ा श्रमकार माना गया है क्योंकि वो बिना आराम किए हर पल अपने श्रम में लगा रहता है। ब्रह्मांड में हर समय तीन काम एक ही समय में निरंतर चलते रहते हैं- वस्तुयों का पैदा होना, विकास होना तथा खत्म होना। ये समय आदि काल से बिना रुके निरंतर चल रहा है। अकाल पुरख के इसी श्रम करने के स्वभाव के कारण श्री गुरु नानक देव जी ने उसे कर्त्ता/करतार का विशेषण दिया है। गुरबाणी में अकाल पुरख के इस करतारी गुण का विवरण जगह-जगह दिया गया है।

श्रम-विभाजन के आधार पर समाज चार वर्गों में बांटा गया, जिसके तहत एक वर्ग द्वारा खुद को अन्य सारे समाज से बेहतर करार दिया गया तथा समाज के उन अन्य लोगों का श्रम-विभाजन कर उनको अपना गुलाम बना लिया। ऐसा करने से कुदरत के नियमों में विघ्न पड़ा। यह वर्ग श्रम करने के बजाए निठल्ला बैठकर दूसरों के श्रम में सेंध लगाने लग गया। श्री गुरु नानक देव जी के समय तक यह बुराई समाज के लिए नासूर बन गई। मनुष्य ही मनुष्य पर जुल्म करने लग गया। अपनी खुशहाली की खातिर दूसरों का शोषण करने लगा। मानवों की पशुओं की तरह खरीदो-फरोख़्त होने लग गई। इस प्रवृत्ति ने कुदरत द्वारा सृजित इस रंगीन दुनिया को धूमिल कर दिया।

श्री गुरु नानक देव जी ने मानवता में फैल रहे इस रोग को दूर करने के लिए तीन सिद्धांत कायम किए-- नाम जपो, किरत (श्रम) करो तथा वंड छको। इस तीनों महान सिद्धांतों पर ही श्री गुरु नानक देव जी ने सिक्ख धर्म की स्थापना की। इन सिद्धांतों द्वारा समाज में वर्णननीय क्रांति आई। यदि हम नाम-सिमरन के सिद्धांत को गहनता से देखते हैं

तो हमें भक्ति लहर के दौरान आई क्रांति भली-भांति महसूस हो जाती है। इन सिद्धांतों के अधीन ही गुरु साहिबान ने जनमानस को समझाया कि प्रभु-नाम-सिमरन के लिए घर-बार छोड़कर जंगलों में भटकने की आवश्यकता नहीं। अकाल पुरख हमारे दिलों में बसता है। बस, ज़रूरत है हमें अपने दिलों के भीतर झांकने की, दिलों को शुद्ध करने की, इसमें जनमानस के लिए समाया दर्द महसूस करने की। श्रम को छोड़कर जंगलों में जाकर निठल्ले बनकर घूमने तथा अपने आहार के लिए दूसरों पर बोझ बनने से अकाल पुरख खुश नहीं होता, क्योंकि श्रमिक अकाल पुरख को तो श्रमिक मनुष्य ही अच्छा लगता है। भक्ति लहर की उत्पत्ति भी मुख्य रूप से उन हमलावरों के विरुद्ध हुई थी जो बाहर से आकर खुद श्रम करने की जगह दूसरों द्वारा किए गए श्रम को लूट लेते थे तथा दूसरों को खुद से घटिया समझकर अपनी सेवा करवाना अपना अधिकार समझते थे।

लूटपाट का शिकार हो रही जनता को जागृत करने के लिए श्रमकार महापुरुष सामने आए। ये श्रम करते हुए प्रभु की स्तुति में लीन रहते थे। गुरु साहिबान के अतिरिक्त भक्त साहिबान ने भी खुद जनता के लिए ऊंचा व सुच्चा मॉडल पेश कर श्रम की महानता को दर्शाया, जिससे वे जनसमूह में हरमन-प्यारे हो गए। इन महापुरुषों ने जनमानस को परमात्मा की प्रेमा-भक्ति की ओट (आश्रय) प्रदान करवाकर प्रत्येक जीव को श्रम की ओर प्रेरित किया। इससे समाज में नयी जागृति पैदा हुई, समाज में नया सुधार आया। यह कोई आसान कार्य न था। भक्ति लहर के संचालकों को इस मार्ग पर चलते हुए अनेक मुश्किलों का सामना करना पड़ा। इस लहर के संचालक जात-पात, ऊंच-नीच, वर्ग-विभाजन तथा ऐशप्रस्ती वाले जीवन से कोसों दूर थे। कथित स्वर्ण जातियों का कहर इन पर जमकर टूटा। पुजारी वर्ग इनके सख़्त विरोध में था। घोर संघर्ष के बाद विजय श्रमिक वर्ग की हुई। इससे भक्त साहिबान की सारी दुनिया में जै-जैकार फैल गयी। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी हमें कभी निठल्ले वर्ग की बात करती महसूस नहीं होती। उदाहरण के रूप में भक्त कबीर जी ने कपड़ा बुनते हुए, भक्त नामदेव जी ने कपड़े रंगने का कार्य करते हुए तथा भक्त रविदास जी ने जूते गांठते हुए श्रम की महानता को दर्शाकर अकाल पुरख की आराधना करके साबित कर दिया कि श्रम भक्ति में कोई बाधा नहीं डालता बल्कि प्रभु की समीपता को महसूस करने में अधिक सहायक सिद्ध होता है। श्रम से ही समाज के निर्माण में योगदान डाला जा सकता है जिससे प्रभु खुश होता है :

नामा कहै तिलोचना मुख ते रामु संम्हालि ॥
हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजन नालि ॥ *(पन्ना १३७५)*

गुरु साहिबान ने समाज को सही दिशा देने के साथ-साथ खुद भी इन सिद्धांतों को पूर्ण रूप से धारण किया। श्री गुरु नानक देव जी ने व्यापार, नौकरी, कृषि-कार्य आदि करते हुए समाज को सही दिशा-निर्देश दिए। गुरु साहिब ने खुद गृहस्थ जीवन में रहते हुए श्रम कर

श्रम की महानता को दर्शाया। उन्होंने श्रम को गुरमति जीवन का प्रधान तत्व मानते हुए साधक के लिए नियम कायम किया :

घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥ नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ (पन्ना १२४५)

गुरमति का उद्देश्य सदैव ही निठल्ले लोगों के विपरीत रहा है। गुरमति में समाज के प्रति मनुष्य की जिम्मेदारी को बारीकी से समझाया गया है। गुरु साहिबान ने समाज से पलायन कराने वाली तथा निठल्ले बैठकर दूसरों पर बोझ बनाने वाली वृत्ति को खत्म कर श्रम के सिद्धांतों की स्थापना की है। श्री गुरु अरजन देव जी का फरमान है :

उदमु करेदिआ जीउ तूं कमावदिआ सुख भुंचु ॥
धिआइदिआ तूं प्रभू मिलु नानक उतरी चिंत ॥ (पन्ना ५२२)

गुरु साहिबान ने अपनी बाणी के साथ-साथ अन्य महापुरुषों की बाणी को भी संभाला। यही बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में सारी दुनिया को नाम जपने, किरत करने तथा बांटकर छकने का उपदेश दे रही है। नाम जपते हुए किए गए सच्चे-सुच्चे श्रम को बांटकर छकने अर्थात् अपनी आय में से अपनी आवश्यकता नुसार ज़रूरतमंदों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए दसवंध देना ही गुरमति का प्रमुख सिद्धांत है। हमें इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि चोरी, ठगी, बेईमानी, धोखेबाज़ी, रिश्वतखोरी, समगलिंग, ब्लैक मार्केटिंग आदि साधनों द्वारा इकट्ठी की गयी कमाई को श्रम नहीं कहा जा सकता। आजकल देखा जा रहा है कि लगभग प्रत्येक व्यक्ति श्रम से जी चुराता है और जल्द से जल्द अमीर बनना चाहता है और अमीर भी इतना कि पूरी दुनिया की दौलत अपने बैंक खातों में जमा करना चाहता है। अधिकांशत: इस तरह की दौलत श्रम की कमाई से इकट्ठी करनी मुश्किल होती है। दूसरी तरफ आजकल बहुत-से निठल्ले व्यक्तियों ने श्रम से पीछा छुड़ाकर घर-घर जाकर भिक्षा मांगने का काम पकड़ लिया है जो कि गुरमति के बिल्कुल विपरीत है। ऐसे निठल्लों की कोई कमी नहीं जो अज्ञानतावश जनता को सामाजिक, आर्थिक तथा मानसिक पक्ष से लूट रहे हैं। इस कार्य के लिए प्रिंट मीडिया तथा इलेक्ट्रानिक मीडिया का भी भरपूर लाभ लिया जा रहा है। साधारण लोगों में पसर रही काम-चोरी की मनोवृत्ति ऐसे लोगों की ही देन है। इस मनोवृत्ति को मात देना आज के समय की मुख्य ज़रूरत है।

श्रम करना मनुष्य को अलाही आदेश है। आइए! प्रण करें कि हम सब मिलकर निठल्लेपन, निकम्मेपन तथा कामचोर मानसिकता वाले लोगों से पीछा छुड़ाकर गुरु साहिबान के बख़्शे सिद्धांत-- नाम जपो, किरत करो तथा वंड छको पर डटकर पहरा देंगे।

श्री गुरु अमरदास जी का व्यक्तित्व

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

सिक्ख धर्म और सिक्ख समाज में सिक्ख गुरुओं के उपदेशों के कारण ही गुरु, गुरु-घर की सेवा करने की भावना बहुत प्रबल रूप में पाई जाती है। सभी गुरु साहिबान, जो स्वयं अपने हाथों से भूखे-प्यासों, रोगी, ग़रीब व दुखी लोगों की सेवा करने को प्राथमिकता देते थे, का आदर्श जीवन हम सबको नाम-सिमरन करने के साथ-साथ सेवा करने की भी प्रेरणा देता है। सच्चा सिक्ख वही होता है, जो अपने गुरु व गुरु-घर के प्रति पूर्ण निष्ठा व समर्पण-भाव रखता हो और नाम जपने के साथ-साथ सेवा हेतु भी सदैव तत्पर रहता हो।

शब्द **'सेवा'** कहने, पढ़ने व सुनने में बेशक छोटा महसूस होता हो, लेकिन इसके अर्थ और भाव बहुत गहरे हैं। सेवा द्वारा प्रभु के निकट जाया जा सकता है; उसकी दया-दृष्टि प्राप्त की जा सकती है; दुखों से छुटकारा पाया जा सकता है। गुरबाणी का फ़रमान है :

विचि दुनीआ सेव कमाईऐ ॥ ता दरगह बैसणु पाईऐ ॥
गुर सेवा ते सुखु ऊपजै फिरि दुखु न लगै आए ॥
(पन्ना २६)

जिस व्यक्ति ने लगन के साथ तथा समर्पण-भाव से अपने गुरु की और असहाय एवं दुखी लोगों की कभी सेवा न की हो, उस व्यक्ति द्वारा किए गये अन्य सभी कार्य निष्फल ही समझने चाहिए। भाई गुरदास जी मार्गदर्शन करते हैं :

विणु सेवा ध्रिग हथ पैर होर निहफल करणी।
(वार २७:१०)

सेवा करने से प्रसन्नता, संतुष्टि व तृप्ति तो प्राप्त होती ही है अपितु घमंड व अहंकार से भी मुक्ति प्राप्त होती है। सेवा से नम्रता, कोमलता, परोपकार की भावना जैसे गुण भी मन में पैदा होते हैं। मन की कठोरता, निष्ठुरता जाती रहती है। सेवा से मन को सच्ची शांति की सौगात मिलती है। सेवा द्वारा मानव जीवन को सार्थक बनाया जा सकता है और जन-कल्याण के बड़े-बड़े काम किए जा सकते हैं। सेवा के बल पर एक आम व्यक्ति संत, महापुरुष बन जाता है, सब भ्रमों से छुटकारा पाकर गुरु की पदवी को प्राप्त कर लेता है। तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी की संपूर्ण जीवन-गाथा इस सच को उजागर करती है।

श्री गुरु अमरदास जी का जन्म पिता श्री तेज भान जी के गृह में माता श्री सुलक्खणी जी की कोख से ८ ज्येष्ठ, संवत १५३६ तदनुसार ५ मई सन् १४७९ को गांव बासरके, ज़िला श्री अमृतसर में हुआ। दूसरे पातशाह श्री गुरु अंगद देव जी से मिलाप होने से पूर्व वे आम प्रचलित रीति-रिवाज़ों में विश्वास रखते थे। तीर्थ-स्नानों में वे जीवन की सफ़लता व मुक्ति को तलाशा करते थे। उन्होंने अपने जीवन में बीस बार गंगा-स्नान किया। २१वीं बार गंगा-स्नान के मौके पर एक ब्रह्मचारी द्वारा उन्हें 'निगुरा' (बिना गुरु वाला) होने का उलाहना दिया गया। उनके हृदय को चोट लगी और वे गुरु की तलाश में निकल पड़े।

**बी-एक्स ९२५, मुहल्ला संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, मो. ९८७२२-५४९९०*

एक सुबह गांव बासरके में उनके कानों में बीबी अमरो जी द्वारा गाए जा रहे मधुर, इलाही, मीठे शबद की आवाज़ पड़ी। मन तरंगित हो उठा। आत्मा की व्याकुलता शांत हुई। पूछने पर बीबी अमरो जी ने बताया कि यह शबद श्री गुरु नानक देव जी का है और अब उनकी गुरगद्दी पर श्री गुरु अंगद देव जी विराजमान हैं। फिर वे बीबी अमरो जी को साथ लेकर खडूर साहिब पहुंच गए। जिस सहारे की उन्हें तलाश थी, वह मिल गया। उन्होंने सेवा के माध्यम से जीवन-सफलता प्राप्त करनी शुरू की।

श्री गुरु अमरदास जी सन् १५४१ से १५५२ ई: तक श्री खडूर साहिब में रहे और उन्होंने पूर्ण निष्ठा व समर्पण से सेवा की। रोज़ाना आधी रात को जाग जाते तथा दरिया ब्यास से जल लाने के लिए चले जाते। लाए गए जल द्वारा अपने इष्ट श्री गुरु अंगद देव जी को स्नान करवाते। वे लगातार इसी प्रकार सेवा करते रहे। उनका उत्साहपूर्ण व परोपकारपूर्ण स्वभाव बन रहा था। रूह रोशन हो रही थी। रोम-रोम में प्रसन्नता व प्रफुल्लता समा रही थी। छ: वर्षों के बाद श्री गुरु अमरदास जी को ऐसा अनुभव हुआ कि उनके भीतर (अंत:करण में) एक नया सूर्य उदय हो चुका है और जगत के कल्याण हेतु आध्यात्मिक व दिव्य शक्तियों का खज़ाना उन्हें मिलने लगा है।

श्री गुरु अमरदास जी सेवा में जी-जान से तल्लीन, मग्न थे। इतनी अधिक सेवा जी-जान लगाकर की . . . फिर कहीं अपने सतिगुरु के पास कबूल हुए। 'महिमा प्रकाश' ग्रंथ में इस कठिन सेवा का वर्णन इस प्रकार किया गया है :

रहे पहर रात तब जल भर लिआवै।
सतिगुर को इशनान करावै।६७।
इशनान कराए इकंत बह रहें।
काहू सु किछु सुने न कहें।
सतिगुर मूरत हिरदे धरे।
खान-पान कछु सुध नहीं करे।६८।
इह बिध दुआदस बरख बिताये।

श्री गुरु अंगद देव जी की आज्ञानुसार उन्होंने श्री गोइंदवाल साहिब नगरी बसाई। वहां के मरवाह क्षत्रिय (खत्री) भाई गोंदा ने श्री गुरु अंगद देव जी के पास विनती की कि उसकी ज़मीन पर एक नगरी बसाई जाए। उक्त ज़मीन पत्तन (नदी-तट) पर थी। चहुं ओर से निरीक्षण किया गया। वह जगह सुंदर थी। लोग भूतों आदि के डर से वहां पर बसते नहीं थे। श्री गुरु अमरदास जी ने उस जगह को आबाद कर लोगों को ऐसे भ्रम से मुक्त किया।

उनकी अन्य व्यस्तताएं एवं प्राथमिकताएं बेशक बढ़ती गईं परंतु उन्होंने गुरु-सेवा में कमी न आने दी। वे गुरु-हुक्म में पूरे बिंधे हुए अर्थात् समर्पित थे। उनके जीवन से संबंधित एक घटना बहुत प्रसिद्ध है, लगभग प्रत्येक सिक्ख ने यह पढ़ी-सुनी हुई है :-

सन् १५५२ का जनवरी महीना था। वर्षा वाला दिन था और ठंड भी बहुत ज्यादा थी। श्री गुरु अमरदास जी सदैव की भांति उस दिन भी दरिया ब्यास से पानी लेने गए। वे जब वापिस लौट रहे थे तो उन्हें ठोकर लगी। मानो पूरी धरती कांप उठी हो। उनके सिदक (निश्चय) व सेवा की परीक्षा की घड़ी थी। वहां पर एक जुलाहे की खड्डी थी। ठोकर खाकर श्री गुरु अमरदास जी उस खड्डी में गिर गए। ठोकर लगने के बावजूद भी उन्होंने गागर का पानी बहने न दिया, संभाले रखा, मानो सिदक, निश्चय, निष्ठा को संभाले रखा हो। वाहिगुरु का उन पर प्यार उमड़ रहा था। जुलाहा आवाज़ सुन हड़बड़ाकर उठा तो उसकी

पत्नी (जुलाही) ने ताना दिया, "होगा अमरू निथांवां (निराश्रित), जो आ गिरा है अपने समधियों के पांव में!" इसके अलावा अन्य भी कुछ बुरे शब्द उसने कहे। सदैव मीठा बोलने का सबक देने वाले गुरु जी ने इतना ही कहा, "मैं नहीं निथांवां, तू कमली (बावरी) है, जो ऐसा सोचती है।"

उपरोक्त बात श्री गुरु अंगद देव जी तक जा पहुंची। उन्होंने श्री गुरु अमरदास जी को पूरी संगत के सामने सम्मान देते हुए कहा :

तुसीं (आप) निमानों का मान हो!
निथावियों का थाओं हो!
निओटियों की ओट हो!
निधरियों की धर हो!
निआसरियों का आसरा हो!
गई बहोड़ हो! बंदी छोड़ हो!
भंनण घड़न समरत्थ हो!
रिजक की कुंजी (चाबी) तुम्हारे हत्थे है!
पुरखा जी तुम धन्य हो!

(महिमा प्रकाश, पृष्ठ ३८)

श्री गुरु अंगद देव जी ने निर्णय ले लिया कि उनके उत्तराधिकारी श्री गुरु अमरदास जी ही हैं। उन्होंने अपने निर्णय से माता खीवी जी को अवगत कराया। उन्होंने भी अपनी सहमति दे दी। गुरु-घर में सेवा-भाव, समर्पण रखने वालों का स्थान निजी संबंधों से सदैव ऊंचा व श्रेष्ठ रहा है।

श्री गुरु अमरदास जी ने गुरु-घर में जी-जान से की जाने वाली सेवा की परंपरा को न केवल कायम रखा बल्कि इसे और भी दृढ़ता प्रदान करते हुए आगे बढ़ाया। यही परंपरा सिक्ख धर्म, कौम तथा सिक्ख समाज में आज भी तन, मन व धन से खुशी-खुशी निभाई जाती है और पुरस्कारस्वरूप अपने गुरु की शाबाशी, खुशी, बख़्शिश पायी जाती है, अपना जीवन सफल बनाया जाता है। जब भी कहीं गुरुद्वारा साहिब या अन्य पवित्र स्थान पर कार-सेवा का काम शुरू होता है तो लाखों श्रद्धालुओं द्वारा की जाती कार-सेवा गुरु-घर की सेवा को पराकाष्ठा पर पहुंचा देती है।

सन् १५५२ की २९ मार्च को श्री गुरु अंगद देव जी ने गुरगद्दी सेवा के पुंज श्री गुरु अमरदास जी को सौंप दी।

कविता

बाणी है पतवार

बाणी है पतवार ऐ लोगो, बाणी है पतवार!
डूब रही जीवन की नाव, पल में लगा दे पार!
बाणी अमृत की मटकी है, हर इक सिर पर ही लटकी है,
दुनिया सैहरा में भटकी है, कैसे हो उद्धार? बाणी है पतवार . . . !
दुख में मानव बेचारा है, बाणी सुख का हरकारा है,
बाणी रस की जलधारा है, रूहानी उपचार। बाणी है पतवार . . . !
जो बाणी की शरण में आये, उसका जन्म सफल हो जाये,
सब के बिगड़े काम बनाये, करती परोपकार। बाणी है पतवार . . . !

-स. करनैल सिंघ (सरदार पंछी), जेठी नगर, मलेरकोटला रोड़, खन्ना-१४१४०१ (पंजाब) मो. ९४१७०९१६६८

श्री गुरु अमरदास जी : गुरु-पद-प्राप्ति से पूर्व का जीवन

-डॉ. मनजीत कौर*

दुनिया में सर्वत्र गुणों का सम्मान होता है। इसमें लिंग या आयु बाधक नहीं होते। गुणों से जीवन में कब, किस पद की प्राप्ति हो जाए, इसका अंदाज़ा श्री गुरु अमरदास जी के जीवन से सहजता से लगाया जा सकता है। भट्ट भल जी ने उनके अनुपम गुणों को विलक्षण तथा अतुलनीय कहा है :

घनहर बूंद बसुअ रोमावलि कुसम बसंत गनंत न आवै ॥
रवि ससि किरणि उदरु सागर को गंग तरंग अंतु को पावै ॥
रुद्र धिआन गिआन सतिगुर के कबि जन भल्य उनह जुो गावै ॥
भले अमरदास गुण तेरे तेरी उपमा तोहि बनि आवै ॥ (पन्ना १३९६)

श्री गुरु अमरदास जी का जन्म ८ ज्येष्ठ, सं. १५३६ तद्नुसार ५ मई, १४७९ ई. को श्री अमृतसर ज़िले के बासरके नामक ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम श्री तेजभान जी तथा माता का नाम श्री लखमी जी था। कुछ इतिहासकारों ने इनकी माता का नाम 'सुलक्खणी' तथा 'लक्खो' भी लिखा है। इनका विवाह श्री देवी चंद की सुपुत्री माता मनसा देवी, जिन्हें माता राम कौर भी कहा जाता है, के साथ हुआ। आप जी के दो सुपुत्र-- बाबा मोहनी जी एवं बाबा मोहरी जी तथा दो सुपुत्रियां-- बीबी दानी जी तथा बीबी भानी जी थीं। बीबी भानी जी का सिक्ख इतिहास में अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है, जिनका विवाह भाई जेठा जी के साथ हुआ, जो बाद में गुरु-घर की अनथक सेवा के फलस्वरूप चौथी पातशाही श्री गुरु रामदास जी के रूप में प्रसिद्ध हुए।

श्री गुरु अमरदास जी बचपन से ही धार्मिक प्रवृत्ति के थे। पूर्वजों के कार्य-व्यवहार में कुशलता से हाथ बंटाते और ईश्वर-भक्ति में लगे रहते। हरि-यशोगान आपकी बाल्यावस्था से ही आपके कर्म के साथ एक रूप हो गया था। आपको हर समय ईश्वर-भजन में लीन देख लोग आपको संत के रूप में पहचानने और मानने लगे। वैष्णव मत के अनुयायी होने के कारण आप हर वर्ष पैदल हरिद्वार गंगा-स्नान हेतु जाते। इतिहासकार लिखते हैं कि आपने यह यात्रा इक्कीस बार की और २१वीं यात्रा में आपके जीवन में एक क्रांतिकारी मोड़ आया।

आपके साथ यात्रा कर रहे पंडित दुर्गादत्त ने आपसे पूछा कि तुम्हारा गुरु कौन है? आपने सहजता से उत्तर दिया कि मेरा तो कोई गुरु नहीं है और मैंने कभी इस विषय पर सोचा भी नहीं। इनके प्रत्युत्तर में उस वैष्णव पंडित ने क्रोध में आकर कहा कि "मैं इतना समय निगुरे के हाथ से खाता रहा हूं! तुम्हारे साथ रहकर तो मेरे सारे धर्म-कर्म ही नष्ट हो गए तथा मेरा जीवन भ्रष्ट हो गया है।" श्री (गुरु) अमरदास जी के हृदय को गहरी चोट लगी। मन में तीव्र वैराग्य उत्पन्न हो गया; दिन-रात गुरु-प्राप्ति की चाहत बनी रहती।

*२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९९२९७-६२५२३

'जहां चाह वहां राह' अर्थात् किसी चीज़ को पाने की तीव्र इच्छा के फलस्वरूप सही मार्ग मिल ही जाता है और जब दिशा सही मिल जाए तो दशा सुधरते देर नहीं लगती। फिर कामयाबी की मंज़िल भी दूर नहीं रह जाती।

एक दिन प्रात: अमृत वेला में आपने अपने भतीजे की पत्नी बीबी अमरो जी, जो कि श्री गुरु अंगद देव जी की सुपुत्री थीं, के मुख से (दूध बिलोते हुए) श्री गुरु नानक देव जी की अमृतमयी बाणी श्रवण की। बाणी की मिठास ने आपके अंदर प्रेम की ऐसी ज्योति जगाई कि आप तुरंत बीबी अमरो जी को साथ लेकर श्री गुरु अंगद देव जी की सेवा में हाज़िर हो गए। उस समय आपकी उम्र लगभग ६२ वर्ष तथा श्री गुरु अंगद देव जी की उम्र लगभग ३६ वर्ष थी। यहां तो न उम्र का तकाज़ा था और न ही कोई रिश्तों का बंधन। गुरु-चरणों में नत्मस्तक होकर मानो सच्ची शांति और आनंद की प्राप्ति हो गई, जो २१ बार तीर्थ-स्थानों पर पैदल जाकर भी नसीब नहीं हुई थी।

श्री गुरु अमरदास जी गुरु की शरण में आकर, सेवा की मूरत बनकर दिन-रात सेवा-सिमरन में मगन रहते। अमृत वेला, सवा पहर रात रहते उठकर, सिर पर गागर उठाकर लगभग ४-५ किलोमीटर दूर ब्यास नदी पर पैदल जाकर गुरु साहिब के लिए जल लाते, उन्हें स्नान करवाते, फिर सिमरन में जुड़ जाते, साथ-साथ संगत की टहल-सेवा में भी लगे रहते। निष्काम सेवा का यह क्रम निरंतर लगभग ग्यारह वर्ष तक चलता रहा।

इसी दौरान श्री गुरु अमरदास जी के जीवन में एक और घटना घटित हुई। (गुरु बनने से पूर्व) आप एक दिन अपने नित्य-नियमानुसार ब्यास नदी से जल की गागर भरकर ला रहे थे। अत्यधिक सर्दी का मौसम था। उस दिन अचानक तीव्र वर्षा होने लगी तथा तेज आंधी भी चलने लगी। रास्ते में कीचड़ व फिसलन हो गई। रास्ता अस्त-व्यस्त हो जाने के कारण श्री गुरु अमरदास जी ठोकर लगने के कारण जुलाहे की खड्डी में गिर गए, मगर उन्होंने अपने सिर से जल की गागर को न गिरने दिया। गिरने की आवाज़ सुनकर अंदर से जुलाहे ने अपनी पत्नी से कहा, "शायद कोई खड्डी में गिर गया है!" जुलाही ने उत्तर दिया, "वही होगा 'अमरू' निथांवां, जो अपने कुड़मों (समधि) के यहां रह रहा है।" इतना सुनते ही श्री गुरु अमरदास जी के मुखारबिंद से निकल गया, "कमलीए (पगली)! मेरा गुरु तो दीन-दुनिया का मालिक है। मैं उनकी शरण में हूं। मैं बेसहारा नहीं।" जब श्री गुरु अंगद देव जी ने श्री गुरु अमरदास जी से पूछा तो उन्होंने सारा हाल कह सुनाया। श्री गुरु अंगद देव जी ने श्री गुरु अमरदास जी को बख्शिशें प्रदान कीं और वचन किया, "तुम निमाणों के माण हो! निआसरों के आसरा हो! तुम्हारी सेवा सफल हुई! प्रवान हुई!!" श्री गुरु अंगद देव जी ने ३ वैसाख, सं. १६०९ तद्नुसार २९ मार्च, १५५२ ई. को इन्हें गुरगद्दी बख़्शी। श्री गुरु अमरदास जी ने गुरु-पद पर आसीन होकर भी सेवा-सिमरन में ही अपना शेष जीवन व्यतीत किया, समाज-सुधार के अनेक कार्य किए और ९५ वर्ष तक मातलोक में रहकर १५७४ ई. में गोइंदवाल साहिब में ज्योति-जोत समा गए।

गोबिंद वालु गोबिंद पुरी सम . . .

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'**

विश्व में गोइंदवाल साहिब की ख्याति सिक्खी के धुरे अर्थात् सिक्ख विचारधारा के केंद्र के रूप में है। श्री अमृतसर साहिब से ४० किलोमीटर, श्री तरनतारन साहिब से २० किलोमीटर और श्री खडूर साहिब से ८ किलोमीटर दूर स्थित यह गुरु की नगरी तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी की कर्म-भूमि और साधना-स्थली रही है।

नगर की पृष्ठभूमि : ब्यास नदी के तट पर भाई गोइंदा नामक सिक्ख व्यक्ति की विशाल भूमि थी। इस स्थान पर पहले एक नगर था जो दिल्ली-लाहौर मुख्य मार्ग पर स्थित होने के कारण एक बड़ा व्यापारिक केंद्र भी था। बाद में शेरशाह सूरी ने एक नया मार्ग (वर्तमान शेरशाह सूरी मार्ग) बनवा दिया, जिसके कारण यह नगर अलग-थलग पड़कर विरान हो गया। भाई गोइंदा ने श्री गुरु अंगद देव जी के दरबार में आकर विनती की कि वे उसकी भूमि पर एक नया नगर बसाने की कृपा करें।

श्री गुरु अंगद देव जी ने जब सन् १५५२ ई में श्री गुरु अमरदास जी को गुरगद्दी पर शोभायमान किया तो साथ ही आदेश दिया कि वे ब्यास नदी के किनारे भाई गोइंदा (खत्री) की ज़मीन पर एक नये नगर का निर्माण करें। श्री गुरु अमरदास जी ने गुरु-आज्ञा का पालन किया और नये नगर का नाम प्रेमी सिक्ख भाई गोइंदा के नाम पर 'गोइंदवाल' रखा।

महान् ऐतिहासिक क्षणों का साक्षी : तीसरे पातशाह ने अपना सारा गुरु-काल यहीं बिताया। यहीं गुरु-सुपुत्री बीबी भानी जी का अनंद कारज भाई जेठा जी के साथ सम्पन्न हुआ जो आगे चलकर चौथी पातशाही श्री गुरु रामदास जी के रूप में गुरगद्दी पर विराजमान हुए। पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी का जन्म भी इसी नगर में हुआ। चौथे एवं पांचवे पातशाह को गुरगद्दी पर सुशोभित भी यहीं किया गया। तीसरे और चौथे पातशाह यहीं ज्योति-जोत समाये। यहीं पर भाई गुरदास जी का देहावसान हुआ था। गुरु-परिवार के इन्हीं अनेक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक क्षणों के साक्षी के रूप में गुरुद्वारा खूह (हवेली) साहिब एवं गुरुद्वारा चुबारा साहिब यहां सुशोभित हैं।

तीसरे पातशाह का साधना-स्थल : श्री गुरु अमरदास जी ने गोइंदवाल साहिब में एक ८४ सीढ़ियों वाली बाउली (बावली) का निर्माण कराया। अब यहां गुरुद्वारा बाउली साहिब सुशोभित है। आम तौर पर सारी छुआ-छूत पानी से ही शुरू होती है। इस भेदभाव को मिटाने के लिए गुरु साहिबान ने सांझे सरोवरों एवं बावलियों का निर्माण कराया ताकि सभी लोग यहां एक ही जल में स्नान करके अपने समस्त भिन्न-भेद मिटा सकें।

गोइंदवाल साहिब में निवास करते हुए श्री गुरु अमरदास जी ने सिक्खी के प्रचार को एक नया रूप दिया। गुरु जी ने सारे सिक्ख जगत् को २२ भागों में बांटा और प्रत्येक क्षेत्र में एक

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, मो: ९४१७२-७६२७१*

निष्ठावान सिक्ख को प्रचार-कार्य हेतु नियुक्त किया। ये स्थान 'मंजियां' के रूप में प्रसिद्ध हुए। गुरु जी ने प्रचार हेतु सिक्ख महिलाओं की नियुक्ति भी की। ये केंद्र 'पीड़े' कहलाये।

श्री गुरु अमरदास जी महान् समाज-सुधारक थे। आपने जातिगत भेदभाव, अस्पर्शयता, स्त्रियों के प्रति अत्याचार जैसी सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध ज़ोरदार मुहिम चलाई। मानवीय समता को स्थापित करने के लिए गुरु जी ने एक पंगत में बैठकर लंगर छकने का नियम बनाया। पहले भोजन करते समय जातियों के अनुसार पांतें लगा करती थीं। मुगल बादशाह अकबर जब गुरु-दर्शन हेतु गोइंदवाल साहिब आया तो उसने भी संगत के साथ पंगत में बैठकर लंगर छका था।

तीसरे गुरु पातशाह ने सती-प्रथा को समाप्त करने में भी विशेष भूमिका निभाई। गुरु जी ने सती की परिभाषा को बदल डाला। आपने फरमाया कि सती वह नहीं जो पति के शव के साथ जल मरे, बल्कि सती वह है जो प्रभु-प्रेम में रत रहे :

सतीआ एहि न आखीअनि
जो मड़िआ लगि जलंन्हि ॥
नानक सतीआ जाणीअन्हि
जि बिरहे चोट मरंन्हि ॥ (पन्ना ७८७)

श्री गुरु अमरदास जी ने अपनी पवित्र बाणी 'अनंदु साहिब' का उच्चारण भी गोइंदवाल साहिब में ही किया। दशमेश पिता ने इसे अमृत-पान के समय पढ़ी जाने वाली पांच बाणियों में सम्मिलित किया।

इसके अतिरिक्त तीसरे पातशाह ने गुरु साहिबान एवं भक्त साहिबान की बाणी को पोथियों में दर्ज करवाकर सुरक्षित कर दिया। इस प्रकार गुरु साहिब ने बाणी की शुद्धता निश्चित की और उसमें प्रक्षिप्त जुड़ने से रोका। गुरु जी ने कच्ची बाणी को त्याग सच्ची बाणी को संरक्षित किया जिसका उपयोग बाद में पंचम पातशाह ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब के संपादन के समय किया।

श्री गुरु अमरदास जी ने सन् १५५२ ई से लेकर १५७४ ई तक गोइंदवाल साहिब में निवास किया। इस काल में गुरु जी ने सिक्खों का अद्भुत नेतृत्व करने के साथ-साथ समाज-सुधार की भी व्यापक लहर चलाई। गुरु जी के तेजस्वी व्यक्तित्व के विषय में भट्ट कीरत जी बयान करते हैं :

आपि नराइणु कला धारि जग महि परवरियउ ॥
निरंकारि आकारु जोति जग मंडलि करियउ ॥
जह कह तह भरपूरु सबदु दीपकि दीपायउ ॥
जिह सिखह संग्रहिओ ततु हरि चरण मिलायउ ॥
नानक कुलि निंमलु अवतर्यिउ अंगद लहणे संगि हुअ ॥
गुर अमरदास तारण तरण जनम जनम पा सरणि तुअ ॥ (पन्ना १३९५)

तीसरे पातशाह सन् १५७४ ई में श्री गुरु रामदास जी को गुरगद्दी सौंपकर ज्योति-जोत समा गये।

इस प्रकार गोइंदवाल साहिब तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी का साधना-स्थल रहा है। भट्ट नल जी इस नगर की महिमा का बखान करते हुए कहते हैं :

गोबिंद वालु गोबिंद पुरी सम
जल्हन तीरि बिपास बनायउ ॥ (पन्ना १४००)

अनेक ऐतिहासिक गुरुधामों एवं स्मृतियों को अपने दामन में समेटे यह पवित्र नगर अब एक बड़े औद्योगिक केंद्र के रूप में उभर रहा है। ब्यास नदी पर नया पुल निर्मित हो जाने से इस गुरु की नगरी का व्यापारिक महत्त्व भी बढ़ गया है।

गुरु-चरणों का स्पर्श पाकर धन्य हुई ढाब खिदराणे की

*-सिमरजीत सिंह**

मैं ढाब हूं!
खिदराणे की ढाब!!

आज का युग मशीनी युग है। मनुष्य भी मशीनों के साथ रहकर मशीन ही हो गया है। किसी के पास भी वक्त नहीं है कि बहन, भाई या मित्र-दोस्त के संग कुछ समय बैठकर दिल की बात सांझी कर सके। सिर्फ स्वार्थ के समय ही एक-दूसरे को बुलाने की बात ठीक समझी जाती है। बच्चे टेलीविज़न के गिर्द और बड़े अपने काम-धंधों में मस्त रहते हैं। पुराने समय में सांझे परिवारों में सोने से पहले दादियां अपने पोतों-पोतियों को, नानियां अपने नाती-नातिनों को अपने पास बुलाकर इकट्ठा कर लेती थीं, उनको शूरवीरों की कहानियां सुनाया करतीं। इस तरह बचपन में ही बच्चों को गौरवशाली इतिहास याद हो जाता था। आज के युग में किसी बुजुर्ग माता के पास इतना वक्त ही कहां? अत: आज मैं अपनी कहानी खुद ही सुनाने जा रही हूं :-

मैं दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का चरण-स्पर्श प्राप्त कर सदा के लिए अमर हो चुकी हूं तथा 'खिदराणे की ढाब' से 'मुकतसर' का खिताब प्राप्त कर चुकी हूं। मैं पहले फिरोज़पुर ज़िले में प्रसिद्ध रही और बाद में ज़िला फरीदकोट के प्रमुख स्थानों में जानी जाने लग गयी। अब मेरी प्रसिद्धि के कारण मुझे खुद को ही ज़िले का दर्जा दे दिया गया है। यह सब कलगीधर दशमेश पिता जी के चरण-स्पर्श का ही फल है।

आज मैं आपको उन दिनों की बात बताती हूं, जब कलगीधर दशमेश पिता ने श्री अनंदपुर साहिब का किला छोड़ा था। यह दिसंबर, १७०४ ई की बात है। दुश्मन फौजों की झूठी कसमों का भेद खोलने व सिक्खों की भावनायों को मद्देनज़र रखते हुए गुरु साहिब ने श्री अनंदपुर साहिब का किला छोड़ दिया। बेईमानों ने गाय तथा कुरान की खाई अपनी सभी कसमों को छीके टांगकर गुरुदेव के जत्थे पर हमला बोल दिया। पीछा करती आ रही बहुगिनती में मुगल फौज का दबाव बढ़ जाने के कारण सामने शूकती शीत पहाड़ी नदी सरसा को पार करने का प्रयत्न किया। सरसा भी जैसे उस समय गुरु जी की दुश्मन बनकर आई हो! उसका ठंडा पानी, ऊपर से ज़ोरदार बाढ़! पातशाह ने शत्रु दल को मात देने के लिए अपने साथ छोटी-सी घुड़सवारों की टुकड़ी लेकर जुल्म के ठेकेदारों के साथ घमासान युद्ध किया। आगे बढ़ते ही सारी फौज तथा गुरु पातशाह का परिवार बिखर कर तीन भागों में बंट गया। माता गुजरी जी, छोटे साहिबज़ादे-- बाबा ज़ोरावर सिंघ व बाबा फ़तहि सिंघ तथा गुरु-घर का रसोइया गंगू बिछुड़कर रोपड़ की तरफ चल पड़े। पैसे के लालच में आकर गंगू द्वारा गद्दारी (धोखा) कर जाने के कारण छोटे साहिबजादे सरहिंद के सूबे वज़ीर खां के हाथ आ गए, जिसने उनको दीवार में चिनवाकर शहीद करने का हुक्म दे दिया। ये अमर शहीद गुरु के लाल दीवार में क्या खड़े हुए कि मुगल राज्य की जड़ें हिलाकर रख दीं। कुछ सिक्ख सरसा पार करते हुए और दुशमन को रोकने का प्रयास करके अपनी वीरता के जौहर दिखाते हुए शहीदी प्राप्त कर सदा के लिए अमर हो गए। पाउंटा साहिब में रचा गया बहुमूल्य साहित्य, जिसमें गुरु साहिब की बाणी तथा दरबारी कवियों की रचनायें भी थीं, सब नदी की भेंट चढ़ गया। गुरु

*संपादक, गुरमति ज्ञान एवं गुरमति प्रकाश।

जी कुछेक सिंघों तथा साहिबज़ादा-- बाबा अजीत सिंघ तथा बाबा जुझार सिंघ के साथ चमकौर साहिब की कच्ची गढ़ी के मोर्चों में आ गए। घमासान युद्ध में दोनों बड़े साहिबज़ादों ने बेमिसाल बहादुरी व अद्वितीय साहस के साथ जूझते हुए शहीदी जाम पीए। चमकौर की कच्ची गढ़ी में गुरु दशमेश पिता को पांच प्यारों ने गुरु-रूप होकर वहां से चले जाने का हुक्म दिया। उनका हुक्म सर-आंखों पर कबूलते हुए गुरु साहिब दुश्मन को वंगारकर वहां से निकल गए। उन्होंने माछीवाड़ा, आलमगीर, राएकोट, लंमेजट्टपुरा, तख़्तूपुरा, दीना कांगड़, जैतो तथा कोटकपुरा से होते हुए मेरी इस धरती पर पहुंचकर मेरे तपते सीने को शीतल कर पावन कर दिया। जुल्म का मुकाबला करते हुए सरवंशदानी, महाबलि योद्धा के चरणों का स्पर्श पाकर मैं कौड़ियों के भाव वाली लाखों की हो गयी। नीले घोड़े के सवार की दसतार पर चमकती कलगी, हाथ में जुल्म का नाश करने वाली शमशीर, चेहरे पर अत्यंत ऐश्वर्य, नूर देख मैं धन्य हो गयी थी।

उधर छोटे-छोटे मासूम बच्चों को दीवारों में चिनकर सरहिंद के सूबे वज़ीर खां की रातों की नींद पंख लगाकर उड़ गयी। उसको अपना किया घिनौना पाप सपनों में आकर डराने लगा। उसको हर समय यही चिंता रहती कि जुल्म की जड़ उखाड़ने वाले श्री गुरु गोबिंद सिंघ अभी आए और आते ही उसकी गर्दन धड़ से अलग कर डालेंगे। उसको अपना किया पाप अंदर ही अंदर मार रहा था तथा गुरु जी के बचकर निकल जाने पर वज़ीर खां बहुत चिंतित था। वह किसी भी कीमत पर गुरु जी को ज़िंदा पकड़कर या फिर उनका शीश काटकर लाना चाहता था। इस काम के लिए उसने अपनी तजुर्बेकार फौज में से कुछ फौज चुन ली तथा उसको अच्छे हथियारों के साथ लैस करके गुरु जी को ढूंढने निकल पड़ा। वह किसी भी कीमत पर दीन-दुनिया की रक्षा करने वाले महाबलि को खत्म कर देना चाहता था।

गुरु साहिब को पापी वज़ीर खां के फौज लेकर आने की सूचना मिल गई थी तथा दूर-दूर बैठे सिंघ शूरवीरों को भी गुरु साहिब का मेरे निमाणी (धरती) के पास होने का पता चल गया था, जिस कारण वो इस विकट समय में गुरु साहिब के पास इकट्ठा होना शुरू हो गए थे। गुरु साहिब ने उस समय सभी ओर दृष्टि डाली तथा जंग के लिए मेरे इस स्थान को हर पक्ष से बेहतर जानकर यहां पर आ गए और मैं भी जुल्म का खातिमा करने के लिए बहादुर शूरवीरों के साथ थी तथा पापी व निर्दयी सेना का मुकाबला करने के लिए हर पक्ष से तैयार बैठी थी। गुरु साहिब जानते थे कि जीत उसी की होती है, जिसका मोर्चा अच्छे ठिकाने पर होता है। उन दिनों में मेरे से अर्थात् खिदराणे की ढाब से सारा मालवा क्षेत्र अवगत था। मेरे चारों तरफ कांटेदार झाड़ियां थीं जो शूरवीर सिंघों को अपनी गोदी में छुपाकर उनकी पहरेदारी कर रही थीं। मेरी झाड़ियों की तीखी शूलें दुश्मन के लिए तीखे तीर बन गए थे। मेरे भीटों की गर्म रेत दुश्मन की आंखों में बारूद की तरह बजकर उनको अंधा कर रही थी। मेरे पास ही था रेत का एक ऊंचा भीट, जहां से दूर-दूर तक निगाह रखी जा सकती थी। उन दिनों इलाके में पानी की भारी क़िल्लत थी। बारह-बारह कोस तक मेरे शीतल जल के बिना पानी की बूंद का कोई स्रोत नहीं था। मैं लाख-लाख शुक्र मनाती हूं कि मेरे पानी के मूल स्रोत का लाभ गुरु जी और उनकी फौज ने लिया। शुक्र मनाती हूं कि यह स्रोत गुरु पातशाह और उनकी फौज की फ़तहि में सहायक सिद्ध हुआ। मैं खुद को भाग्यशाली समझती हूं कि इस जंग में पापियों को खत्म करने के लिए मैं सच की प्रतिमा कलगीधर दशमेश पिता जी का साथ दे रही थी। आज मैंने छोटे-छोटे बच्चों को दीवारों में चिनने वाले पापियों से गिन-गिनकर बदले लेने थे। वे पापी आज यहां से बचकर नहीं जा सकते थे, जो कलगीधर दशमेश पिता को खत्म करने की मंशा मन में लेकर आए थे। मैं धन्य थी क्योंकि मैं गुरु जी के अधिकार तले थी। अगर मैं शत्रु ज़ालिमों के कब्ज़े तले

आ जाती तो आज तक मेरे मुंह से उस कलंक की कालिमा नहीं थी उतरनी। किसी ने मुझे कलमुंही कहना था, किसी ने पापन। ऐसे जालिमों का साथ देकर मुझे धरती ने भी नाश होने के लिए जगह नहीं थी देनी।

गुरु साहिब और शूरवीर सिंघों ने यहां आकर मेरे रेत-युक्त एवं कंटीले स्थान पर आलौकिक नज़ारा पेश कर दिया था। मैं दुनिया की सबसे अमीर धरती हो गयी, सिर्फ गुरु जी के चरण-स्पर्श से। मैं फर्श से अरश तक पहुंच गयी। शस्त्रों से सजे बहादुर सिंघ योद्धा आते, शीतल पानी पीकर मुझे धन्य कर जाते और स्नान कर मेरे इर्द-गिर्द सुरक्षित झाड़ियों में मोर्चे बनाकर उनमें डट जाते तथा शत्रुओं का इंतज़ार करने लग जाते। सिंघों ने अपनी रणनीति के अनुसार दिशाएं देखकर मोर्चे कायम कर लिए थे। ज़ालिमों को धोखा देने के लिए मेरी झाड़ियों पर कपड़े डाल दिए जिससे शत्रु सेना को तंबुओं का भ्रम डाले रखा। गुरु जी उस समय मेरी पश्चिम दिशा की तरफ ऊंची टिब्बी पर मोर्चा लाकर बैठे थे जहां से तीन-तीन कोस तक ज़ालिम फौजें उनके तीरों की मार तले आ सकती हैं।

वज़ीर ख़ान की फौज तंबुओं का भ्रम खाकर उधर को बढ़ने लगी तथा मेरी कंटीली झाड़ियों की तीरों रूपी शूलियों ने उनके शरीर लहू-लुहान कर दिए। मेरी बारूद रूपी गर्म रेत ने उनके शरीर जलाकर राख कर दिए तथा जब पूरी की पूरी मुगल फौज सिंघों की मार तले आ गयी तो वो मुगल सेना पर भूखे शेरों की तरह टूट पड़े। गुरु जी के साथ जीने-मरने का इरादा करके आए सिंघों ने और गुरु साहिब ने टिब्बी से तीरों की ऐसी वर्षा की, युद्ध के ऐसे जौहर दिखाए कि ज़ालिम सेना को लगा कि उनके कुकर्मों का भांडा भर चुका है। सिंघों ने अपने हथियार, तेगें म्यानों से निकाल लीं और बहादुरी के ऐसे जौहर दिखाए कि दुश्मन की फौज में भगदड़ मच गयी। बहुत ही घमासान युद्ध हुआ। दुश्मन की फौज चकित रह गयी और उन्होंने मैदान छोड़कर भागने में ही भलाई समझी। वज़ीर ख़ान को पता चल चुका था कि मेरे पानी पर कब्ज़ा कर गुरु जी ने इसको पवित्र कर दिया था। सिंघों की छोटी-सी फौज से हार खाकर उसको चुल्लू भर पानी में डूब मरने के लिए पानी भी नहीं मिलना। पानी के बिना इन शूरवीरों के आगे ठहर पाना मुश्किल है। अतः उसने अपनी पाप की बारात वापस ले जाने में ही भलाई समझी।

जिस जगह पर गुरु साहिब ने अपने हाथों से शहीद सिंघों का अंतिम संस्कार किया, उस जगह 'शहीद गंज' नामक गुरुद्वारा साहिब है। टिब्बी साहिब गुरुद्वारा, जहां गुरु साहिब ने मोर्चाबंदी की, वहां सुशोभित है।

जहां सिंघों ने झाड़ियों पर कपड़े डालकर शत्रु सेना को धोखा दिया, वहां गुरुद्वारा तंबू साहिब बना हुआ है। मुख्य गुरुद्वारा 'टुट्टी गंढी साहिब' के नाम से सुशोभित है।

यह घटना चाहे मई में घटित हुई किंतु इन शहीद सिंघों की याद में हाज़िरी भरने संगत भारी मात्रा में माघी (माघ माह की संक्रांति वाला दिन, मकर संक्रांति) को भी आती है। मई, जून के उन दिनों में इस इलाके में गर्मी ज्यादा होने के कारण पानी की बहुत किल्लत थी और आने वाली संगत के लिए बहुत परेशानी पैदा होती थी, इसलिए कई समझदार पंथ-दर्दियों ने फैसला करके इन शहीदों की याद में माघी के मौके पर इकट्ठा होकर श्रद्धांजलि देने का फैसला किया।

गुरसिक्खों के वारिसों को मैं इतना ज़रूर कहना चाहती हूं कि जुल्म, जब्र के विरुद्ध जूझने की गौरवमयी परंपरा जारी रहनी चाहिए। गुरु के सिक्खो, मेरे पास आओ! मैं आज तुम्हें सच और जुल्म के विरुद्ध जूझने वाले शूरवीर सिंघों की यादों के दर्शन करवाकर, आपको आपकी गौरवमयी विरासत से अवगत करवाऊंगी। मैं आपका रास्ता देख रही हूं!

श्री मुकतसर साहिब की जंग

-डॉ. मनमोहन सिंघ*

श्री मुकतसर साहिब वह पवित्र स्थान है जहां श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने ४० सिंघों, जो श्री अनंदपुर साहिब में गुरु जी को बेदावा लिखकर, गुरु-सिक्ख संबंध तोड़कर अपने घरों को चले आए थे और बाद में माता भागो जी की अगुआई में इस स्थान पर हुए युद्ध में शहीद हो गये थे, की टूटी गांठकर उन्हें अंतिम समय 'मुकतों' की पदवी से सम्मानित किया था। दरअसल श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दिन-प्रतिदिन बढ़ रहे प्रभाव के कारण पहाड़ी राजा व मुगल सलतनत गुरु जी से ईर्ष्या करने लगी थी, इसलिए पहाड़ी राजाओं व मुगलों ने मिलकर श्री अनंदपुर साहिब में गुरु जी पर चढ़ाई कर दी। पहाड़ी राजाओं एवं औरंगजेब की फौजों ने श्री अनंदपुर साहिब के किले को लंबे समय तक घेर कर रखा। किले के अंदर खाने-पीने की सामग्री समाप्त हो चुकी थी। इस संकट की स्थिति में कुछ सिंघ हालातवश हौसला छोड़ गये थे तथा वे किला छोड़ देने पर अड़े हुए थे। ये सिंघ गुरु जी को बेदावा लिखकर तथा उनसे अपने संबंध तोड़कर किला छोड़ आये। गुरु-घर से मुंह मोड़ने वालों को कहीं भी ठिकाना नहीं मिलता। जब ये सिंघ घर पहुंचे तो इनके घर-परिवार एवं क्षेत्रवासियों ने इनको खूब कोसा। उस समय की जुझारू सिंघणी माता भाग कौर जी ने इनकी हिम्मत को पुन: जगाया तथा गुरु जी से क्षमा-याचना हेतु इन्हें अपने साथ लेकर गुरु जी की तलाश में निकल पड़े।

दूसरी तरफ मुगल सेना एवं पहाड़ी राजाओं की सेना ने झूठी कसमें खाकर गुरु जी को किला खाली करने के लिए राजी कर लिया कि ऐसा करने से बादशाह के सामने हमारा मान-सम्मान बना रहेगा। गुरु जी अपने परिवार व सिंघों को साथ लेकर किला खाली करने के बाद रोपड़ की तरफ आ रहे थे तो दगेबाज़ दोनों सेनाओं ने गुरु जी पर हमला कर दिया। सारी खालसा फौज बिखर गई, साहित्य व खज़ाना सरसा नदी की भेंट चढ़ गया। गुरु जी का परिवार बिछुड़ गया। माता गुजरी जी अपने दो छोटे पोतों-- बाबा ज़ोरावर सिंघ तथा बाबा फ़तहि सिंघ के साथ एक तरफ चले गए। सरहिंद के नवाब वज़ीर खां ने इन दोनों साहिबज़ादों को सरहिंद में दीवार में ज़िंदा चिनवा कर शहीद कर दिया। बड़े साहिबज़ादे चमकौर के युद्ध में शहीद हो गये। गुरु जी चमकौर से आगे माछीवाड़ा, आलमगीर आदि स्थानों से होते हुए दीना कांगड़ नामक स्थान पर पहुंचे। यहां आकर गुरु जी ने औरंगजेब को एक ऐतिहासिक विजय-पत्र (जफ़रनामा) लिखा। मुगल फौज लगातार गुरु जी का पीछा कर रही थी। गुरु जी खिदराणे की ढाब (श्री मुकतसर साहिब) की तरफ बढ़ रहे थे।

इधर माता भाग कौर जी की अगुआई में तथा भाई महा सिंघ की जत्थेबंदी में ये ४० सिंघ गुरु जी को खोजते हुए खिदराणे की ढाब की तरफ कूच कर रहे थे। यहां इन्हें पता चला कि गुरु जी पर हमला करने के लिए मुगल

*८९७, फेज़-१०, मोहाली-१६००६२

फौज बढ़ती आ रही है। दोनों सेनाओं में घमासान युद्ध हुआ। इन सिंघों ने अपने लहू का कतरा-कतरा बहाकर गुरु जी की तरफ मुगल सेना को बढ़ने से रोके रखा। अंत में सारे सिंघ शहीद हो गये। उधर बची-खुची मुगल फौज भूख व प्यास से व्याकुल होकर वापिस हो गई।

यह सारा दृश्य श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी एक टिब्बी के ऊपर बैठकर देख रहे थे और वहीं से मुगल सेना पर तीरों की बौछार कर रहे थे। जब युद्ध समाप्त हुआ तो गुरु जी रण-भूमि में आये और शहीद सिंघों को देखा। घायल माता भाग कौर जी ने सारी बात गुरु जी को सुनाई। गुरु जी प्यार में बह गये तथा उन्होंने अपने एक-एक सिंघ का मुंह रुमाल से साफ किया तथा आशीर्वाद दिया। जब गुरु जी भाई महा सिंघ का मुंह साफ करने लगे तो उसमें अभी तक कुछ सांसें बाकी थीं। उसके मुंह में गुरु जी ने पानी डाला। भाई महा सिंघ ने आंखें खोली तो गुरु जी को अपने पास देखकर गद्‌गद्‌ हो गया। गुरु जी ने भाई महा सिंघ से कहा, "भाई महा सिंघ कैसे हो ? कोई इच्छा हो तो बताओ!" भाई महा सिंघ ने कहा, "हमें क्षमा कर दीजिए गुरु जी! जो बेदावा लिखकर आपको दिया था, उसको फाड़ दो, बड़ी कृपा होगी।" गुरु जी ने वो बेदावा फाड़ दिया तथा भाई महा सिंघ सहित सभी ४० सिंघों को 'मुकतों' की पदवी से विभूषित किया। तभी से खिदराणे की ढाब 'मुकतसर' बन गई। भाई महा सिंघ ने संतुष्ट अवस्था में गुरु जी के चरणों में आखिरी सांस ली। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इस जंग में शहीद हुए सिंघों का अपने हाथ से दाह-संस्कार किया। जहां पर लड़ाई हुई थी, उस जगह पर जो गुरुद्वारा साहिबान हैं, उनका नाम है - गुरुद्वारा टुट्टी गंढी साहिब, गुरुद्वारा तंबू साहिब तथा गुरुद्वारा माता भाग कौर जी। जहां पर गुरु जी ने शहीद सिंघों का दाह-संस्कार किया था उस जगह पर बनाये गये गुरुद्वारा साहिब का नाम 'शहीदगंज' है। जिस टिब्बी पर गुरु जी ने विराजमान होकर तीरों से वर्षा की थी, उस स्थान का नाम गुरुद्वारा टिब्बी साहिब है। इनके अलावा गुरुद्वारा रकाबसर साहिब तथा गुरुद्वारा दातनसर साहिब भी गुरुद्वारा टिब्बी साहिब के निकट शोभायमान हैं।

कविता

मुक्ति

कैसी वो गहराई थी ?
कालिमा ही छाई थी।
प्रकृति निःशब्द-सी।
चेतना संदिग्ध-सी।
समय मानो रुक गया।
चलते-चलते थक गया।
हर कोई था सो गया।
खुद के अंदर खो गया।
मन कहीं भटका नहीं।
इसलिये अटका नहीं।
थी नहीं तम से निराशा।
और न सूरज से आशा।
आगे-पीछे कुछ नहीं था।
जो भी था, इस वक्त में था।
कोई भी बंधन नहीं था।
सब खुला-सा लग रहा था।
मन मेरा निर्द्वंद्व था।
मुक्त था, स्वच्छंद था।
जो भी था, सम्पूर्ण था।
कुछ नहीं अपूर्ण था।

-श्री प्रशांत अग्रवाल, ४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली-२४३००३ (उ. प्र.)। मो : ०९४११६०७६७२

बाबा बंदा सिंघ बहादर का गौरव-गान
बंदगी, बहादुरी और बलिदान

*-डॉ. निर्मल कौशिक**

भारत का गौरवमयी इतिहास इस बात का साक्षी है कि यहां पैदा हुए गुरुओं, पीरों और वीर योद्धाओं ने भारतीय संस्कृति की गरिमा के लिए आत्म-बलिदान तक दे डाला। धर्म-जाति, रंग-भेद, भाषा-प्रांत के मोह को त्यागकर राष्ट्र के सम्मान की रक्षा हेतु शत्रु से लोहा लेने में यहां के अमर बलिदानियों के कदम कभी पीछे नहीं हटे। भारतीय संस्कृति में गुरु की महत्ता और गुरु के प्रति श्रद्धा-भाव ने गुरु और शिष्य को आत्मा और परमात्मा के स्तर पर एकाकार होने की अवस्था प्रदान की है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने तो गुरु-घर के प्रति अनन्य और अटूट श्रद्धा रखने वाले सभी सिक्खों को गुरु स्वरूप श्री गुरु ग्रंथ साहिब को ही गुरु मानने का निर्देश-आदेश प्रदान कर गुरु की महत्ता को गौरवान्वित कर दिया।

सिक्ख धर्म की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का आरंभ भले ही सांस्कृतिक और आध्यात्मिक चेतना पर आधारित रहा हो लेकिन बाद में गुरु परंपरा के विकास के साथ-साथ इसमें परिस्थितिजनक परिवर्तन होते गए। मुगल साम्राज्य की कट्टरपंथी नीतियों ने जब-जब भारतीय संस्कृति की अस्मिता को चुनौती दी तथा वह अत्याचार और शर्मनाक, नृशंस बर्बरता पर उतारू हुआ तो सिक्ख गुरु साहिबान और उनके सिक्ख योद्धा धर्म और संस्कृति की रक्षा हेतु संघर्ष और आत्म-बलिदान के मार्ग पर चलते हुए उस अत्याचारी साम्राज्य का विरोध करने लगे। श्री गुरु अरजन देव जी, श्री गुरु तेग बहादर साहिब, भाई मतीदास जी, भाई सतीदास जी, भाई दिआला जी के बाद दशम पातशाह का परिवार तथा उनसे प्रेरित होकर बाबा बंदा सिंघ बहादर जैसे बेमिसाल योद्धा और उनके ७०० से अधिक (शहीद होने वाले) साथी सिक्ख योद्धा इसी बेमिसाल बलिदान परंपरा के अक्षुण उदाहरण हैं। भारतीय इतिहास में ऐसे बलिदानी सिक्ख योद्धाओं की एक विस्तृत शृंखला है।

बाबा बंदा सिंघ बहादर का जन्म १६ अक्तूबर, सन् १६७० को पुंछ (कश्मीर) के राजौरी क्षेत्र के गांव तछल में भाई रामदेव के घर हुआ। आपका बचपन का नाम लछमण देव था। राजपूताना परिवार में पैदा होने के कारण आप बचपन से ही बहादुर थे। आपको बचपन से ही घुड़सवारी और शिकार खेलने का शौक था। एक बार शिकार खेलते हुए आपने एक गर्भवती हिरणी का शिकार किया। जब उसका पेट चीरा गया तो उसमें से दो बच्चे निकले, जिन्होंने आपकी आंखों के सामने तड़प-तड़प कर प्राण त्याग दिए। बस, फिर क्या था, आप विरक्त होकर बैरागी हो गए।

एक दिन साधुओं का दल उनके गांव आकर ठहरा। दल का मुखिया जानकी दास था। उसके उपदेशों से प्रभावित होकर आप उनके साथ हो लिए। उनकी परंपरा के अनुसार आपका नाम बदलकर 'माधोदास' रख दिया गया। आपने अपने तपोबल से अनेक ऋद्धियों-

**१६३, आदर्श नगर, ओल्ड कैंट रोड, फरीदकोट-१५१२०३, फोन : ०१६३९-२६३०१७*

सिद्धियों की प्राप्ति की। आपने नांदेड़ नामक स्थान पर अपना आश्रम स्थापित किया। आप आश्रम में आने वाले साधु-संतों पर अपनी सिद्धियों की बदौलत शक्ति दिखाकर उन्हें चमत्कृत करते। एक दिन श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी उनकी इस बात को सुनकर आश्रम में पहुंचे। माधोदास अपनी किसी भी सिद्धि का कोई भी प्रभाव गुरु जी पर न होता देखकर उनके चरणों पर गिर पड़ा। ज्ञानी गिआन सिंघ रचित 'पंथ प्रकाश' के अनुसार माधोदास ने गुरु जी से कहा :

देहु उपदेस हारक कलेस सेस,
कीजो निज सिख मोहि सिखया सु दीजिए।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने उसकी विनम्रता से प्रसन्न होकर उसे अपना सिक्ख बनाना स्वीकार किया :

तब गुरु निज कर तांहि सिर धर करयो निहाल।
सत नांम उपदेस दै कीनो सिख बिसाल।

माधोदास ने गुरु-चरणों में स्वयं को समर्पित कर अपनी ताकत को अत्याचार के विरुद्ध प्रयोग करने का संकल्प किया तथा स्वयं को स्वार्थ से परमार्थ की ओर उन्मुख किया।

सितंबर, १७०८ में नांदेड़ में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने माधोदास को अमृत छकाया और 'सिंघ' सजाकर 'बंदा सिंघ' नाम से अलंकृत कर पंजाब भेज दिया। साथ में २५ अन्य प्रमुख सिक्ख और कुछ हुकमनामे भी भेजे। हुकमनामे जहां-जहां भेजे गए वहां से हज़ारों की गिनती में सिक्ख आकर बाबा बंदा सिंघ बहादर की सेना में जुड़ते गए। यह गिनती चालीस हज़ार तक पहुंच गई। पहले समाणा, सढौरा, सोनीपत आदि को जीतकर फिर सरहिंद पर हमला करने की योजना बनाई गई। एक मुसलिम लेखक (इतिहासकार) मुहम्मद लतीफ ने लिखा है कि आधी रात को वज़ीर ख़ान नींद से उठकर पागलों की तरह इधर-उधर घूमने लगता और कहता-- "बंदा आया! बंदा आया!!"

वज़ीर ख़ान बाबा बंदा सिंघ बहादर से भयभीत था, इसलिए वो अपने सैनिकों को निरंतर प्रोत्साहित कर रहा था। फलत: चपड़चिड़ी नामक स्थान पर निर्णायक युद्ध आरंभ हुआ। बाबा बंदा सिंघ बहादर की युद्ध-नीति काम आई। पहले हमले में ही सिक्खों ने वज़ीर ख़ान की सारी तोपें अपने कब्ज़े में ले लीं। घमासान युद्ध हुआ। बाबा बंदा सिंघ बहादर ने वज़ीर ख़ान को स्वयं युद्ध-भूमि में उतरने पर मज़बूर कर दिया। फलत: सरहिंद को विजय करने में अधिक समय नहीं लगा। सरहिंद की विजय के पश्चात बाबा बंदा सिंघ बहादर ने और भी कई स्थानों पर विजय प्राप्त की। पहाड़ों में एक किले का नाम 'लोहगढ़' रखा। सिक्ख राज्य की नींव रखने का श्रेय भी बाबा बंदा सिंघ बाहादर को ही जाता है। लोहगढ़ को सिक्ख राज्य की राजधानी बनाया गया। गुरु साहिबान को इस विजय का श्रेय देते हुए उन्होंने सिक्ख राज्य की स्थापना के साथ ही श्री गुरु नानक देव जी व श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के नाम पर सिक्का भी चलाया।

सरहिंद फ़तहि सरकारी सीने पर असहनीय प्रहार था। इस ऐतिहासिक विजय से ज़ालिम मुगल शासक बौखला उठे। बाबा बंदा सिंघ बहादर के सिक्ख सैनिकों ने विद्युत गति से सम्पूर्ण उत्तर भारत से ज़ालिमों को खदेड़ना आरंभ किया। उन्होंने ज़मींदारी-प्रथा को समाप्त कर श्रमिकों-किसानों को भूपति बनाया।

अंत भारी जद्दोजहद के बाद ज़ालिम सरकार ने बाबा बंदा सिंघ बहादर को उनके परिवार व उनके सिक्खों सहित गुरदास नंगल

की गढ़ी में कई महीनों तक घेरा डाले रखा। सबको गिरफ्तार कर उनके साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता रहा, उनको भूखे-प्यासे रखा जाता रहा। उनका ४ वर्षीय बच्चा भी भूख से तड़पता रहा। अब्दुसमद की फरमाइश पर तथा उसके पुत्र ज़करिया ख़ान के नेतृत्व में फरवरी, १७१६ को सारे सिक्खों (लगभग ७००) को दिल्ली के बाज़ारों में जलूस के रूप में ले जाया गया। बाबा बंदा सिंघ बहादर को जंज़ीरों में जकड़कर, लोहे के पिंजरे में बंद कर, हाथी पर बिठाकर गोटे वाली लाल टोपी पहना दी गई। वाहिगुरु का ओट आसरा लेकर बाबा जी अपना ध्यान गुरु-चरणों में लगाकर *"तेरा कीआ मीठा लागै"* कहकर सब कुछ शांत भाव से सहन कर रहे थे। दिल्ली में उनके समक्ष जंज़ीरों में बंधे १००-१०० सिक्खों को शहीद किए जाने का सिलसिला आरंभ हुआ। बाबा बंदा सिंघ बहादर को अपने सुपुत्र का कत्ल करने का आदेश दिया, मगर उन्होंने ऐसा करने से इंकार कर दिया तो ज़ालिमों ने उनके ४ वर्षीय सुपुत्र का उनके सामने कत्ल कर दिया। उसका जिगर निकालकर बाबा जी के मुंह में डालने की कोशिश की गई। बाबा जी के दोनों हाथ-पैर काट दिए गए। गर्म सलाखों से आंखें निकाल दी गईं। पेट में गर्म सलाखें तब तक आर-पार होती रहीं, जब तक उनका शरीर ठंडा नहीं हो गया।

गुरबाणी के अनुसार-- *"हुकमु पछानै सु एको जानै बंदा कहीऐ सोई ॥"* के सांचे में ढलने वाले सिक्ख राज्य के प्रवर्त्तक, आतताइयों से, ज़मींदारों से श्रमिकों और किसानों को उनका हक्क दिलाने वाले वीर योद्धा, गौरवशाली आचरण और निर्मल व्यक्तित्व के धारक बाबा बंदा सिंघ बहादर ने सिक्खी-सिदक और गुरु-श्रद्धा की अद्वितीय मिसाल पैदा की। सेनानायक के रूप में युद्ध-परियोजनाएं उनकी दूरदर्शिता और बहुआयामी प्रतिभा की साक्षी हैं। आतताइयों का सामना करते-करते उनके अंदर इतनी सहनशीलता आ गई कि बड़े से बड़ा जुल्म भी उन्हें विचलित न कर सका, पुत्र-मोह भी नहीं। गुरु-चरणों की प्रीति और निष्ठा ने उन्हें वास्तव में 'गुरु का बंदा' बना दिया था।

कविता

प्रणाम

प्रणाम, प्रणाम, प्रणाम !
मेरा बहुत-बहुत प्रणाम !
सविराम भी प्रणाम !
अविराम भी प्रणाम !
रुकते भी प्रणाम !
चलते भी प्रणाम !
कृपा निधान को प्रणाम !
महा महान को प्रणाम !
शबद-गुरु को प्रणाम !
विचार गुरुदेव को प्रणाम !
कल भी प्रणाम !
आज भी प्रणाम !
सर्वकाल ही प्रणाम !
दास का प्रणाम !
दासन दास का प्रणाम !
प्रणाम, प्रणाम, प्रणाम !
मेरा बहुत-बहुत प्रणाम !
मेरा नत्मस्तकी प्रणाम !
मेरा दंडवती प्रणाम !

-डॉ. सुरिंदरपाल सिंघ, पत्तण वाली सड़क, पुराना शाला, गुरदासपुर-१४३५२१, मो. ९४१७१-७५८४६

छोटा घल्लूघारा

-डॉ. जसबीर सिंघ*

काफी सिंघ ऐतिहासिक गुरुद्वारा रोड़ी साहिब, ऐमनाबाद दर्शन के लिए आए थे तथा बाहर घोड़ों को घास आदि खिला रहे थे। सिंघ कई दिनों से भूखे-प्यासे थे। ऐमनाबाद का फौजदार जसपत राय फौज लेकर आ गया। इसने आते ही सिंघों को ऐमनाबाद से चले जाने का हुक्म दिया। सिंघों ने बताया कि वे कई दिनों से भूखे-प्यासे हैं तथा रात गुज़ारकर सुबह चले जायेंगे। इस पर जसपत राय अपनी सारी फौज लेकर सिंघों पर टूट पड़ा। सिंघों ने उसके हमले को रोका। एक सिक्ख भाई निबाहू सिंघ ने तुरंत जसपत राय के हाथी पर चढ़कर उसका सिर काट दिया। यह देखते ही फौज में खलबली मच गई। भाई रतन सिंघ (भंगू) ने लिखा है :

जिस दिन जसपति सार सु लयो, सिंघन टूट दरिद्र गयो।
इमनाबाद भी शहर सु टूटा, उह भी खालसे अच्छो लूटा।
बहुत खज़ाना था तिस साथ, लागयो भूखे सिंघन हाथ।
तौ फिर राजन राजा जापैं, दीसैं भूपति नांहि सिञापैं ॥३॥ (श्री गुर पंथ प्रकाश)

दीवान लखपत राय को जब अपने छोटे भाई की मृत्यु की ख़बर पहुंची तो वह गुस्से में पागल हो गया। उसने लाहौर के नवाब के पैरों में अपनी पगड़ी रखी और कहा, "जब तक मैं सिक्खों का नामो-निशान नहीं मिटाता, सिर पर पगड़ी नहीं बांधूंगा।"

यही बात लखपति सुनी, ढिग नवाब दई पग डार।
फेर आन मैं बंधोंगो, सिंघन को पंथ गार।
यह परतग्गया खत्री करी, मारों सिंघ चढ़ इत ही घरी।
ऐस बचन सुन नवाब उचारा, खरचों दरब लै मेरा सारा।

समझदार अहिलकारों के एक वफद, जिसमें दीवान कौड़ा मल, दीवान लच्छी राम, दीवान सूरत सिंघ, भाई देस राज आदि शामिल थे तथा इनकी अगुआई गोसाईं जगत भगत कर रहा था, ने लखपत राय को आग्रह किया कि वो बेकसूर सिक्खों का खून न बहाए किंतु उसने वफद की एक न सुनी।

लोगों को बताया गया कि कोई भी 'गुरु' शब्द उच्चारण न करे। जो ऐसा करेगा उसको मृत्यु के घाट उतारा जायेगा। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के बहुत सारे स्वरूप इकट्ठा करके उनका अपमान किया गया तथा श्री अमृतसर के पवित्र सरोवर को पाट दिया गया। लाहौर के मुगल गवर्नर यहीआ ख़ान के साथ मिलकर लखपत राय ने लाहौर की फौजों को इकट्ठा किया और इस संबंध में मुलतान, जलंधर, बहावलपुर तथा पहाड़ी राजाओं सहित सिक्खों के खिलाफ 'जेहाद' का बिगुल बजा दिया।

सबसे पहले लखपत राय ने लाहौर के निवासी सिक्खों को पकड़ लिया तथा उनका कत्लेआम शुरू कर दिया। यह कत्लेआम १० मार्च, १७४६ ई को शुरू हुआ। इसके बाद लखपत राय भारी फौज, तोपखाना आदि लेकर सिक्खों का शिकार करने चल पड़ा काहनूंवान (वर्तमान गुरदासपुर से १५ किलोमीटर दूर) के छंब तथा जंगल की ओर। उसने काहनूंवान के सारे जंगल को घेरकर सिक्खों की तालाश शुरू

*साईं मीयां मीर नगर, हमदानिया कालोनी-४, बेमिना, श्रीनगर (कश्मीर)-- १९००१०

कर दी। सिक्ख भी अपनी रणनीति से उसका मुकाबला करते रहे और आखिर वे उत्तर दिशा की पहाड़ियों की ओर चल पड़े। सिंघों ने रावी दरिया पार किया तथा कई बसौली (ज़िला कठूआ, जम्मू-कश्मीर) की ऊंचाइयों की ओर चल पड़े। सिंघों के जत्थों में बहुत सारी महिलाएं, बच्चे तथा बुजुर्ग थे जो वहीर की शक्ल में थे। यहां वे घेरे में आ गए। सिक्खों का भारी नुकसान पैरोल, कठूआ, बासौली तथा जम्मू में हुआ। कुछ सिंघ वैरियों की मार-काट करते हुए कीरतपुर साहिब की तरफ चले गए। ब्यास तथा सतलुज दरिया पार करते समय कई सिंघ मालवा पहुंचे, कइयों ने लक्खी जंगल में अपना रैण-बसेरा बना लिया। लगभग ७००० सिंघ यहां शहीद हुए तथा ३००० पकड़े गए। यह मई, १७४६ ई. की घटना है।

सिंघों के मुखियों ने विचार करके दो जत्थे बनाए। ज्यादातर सिंघ, जो पैदल थे, कांगड़ा, मंडी होते हुए कीरतपुर साहिब पहुंचे थे। इनका चार महीने के समय में भारी नुकसान हुआ। दूसरे जत्थे, जो घुड़सवार आदि थे, दुश्मनों के घेरे को चीरते, मारते-काटते दरिया पार करते रहे। स. कपूर सिंघ, स. जस्सा सिंघ तथा स. सुक्खा सिंघ के जत्थे लाहौर की फौजों के साथ कृपाणों तथा बरछों से लड़ते रहे। इस लड़ाई में लखपत राय तथा यहीआ ख़ान का एक-एक लड़का मारा गया। स. सुक्खा सिंघ जब लखपत राय के हाथी की तरफ भागकर गया कि लखपत राय का सिर काटा जाए तो अचानक तोप का एक गोला उसकी टांग पर आकर लगा, जिसके कारण उसने अपनी दसतार में से कुछ कपड़ा फाड़कर अपनी टांग पर बांध लिया ताकि हड्डियां सुरक्षित रह सकें। उसी समय स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया उसकी मदद के लिए आ गया और वे दोनों दुश्मनों की कतारें चीरते हुए सुरक्षित जंगल की तरफ चले गए। रात के समय सिंघों को स. सुक्खा सिंघ तथा स. जस्सा सिंघ ने वीर-रस भरपूर लफ्ज़ों से संबोधित किया। यह सिंघों की नई रणनीति थी, जिसने भूखे-प्यासे तथा मामूली हथियारों से लैस सिंघों में नई रूह फूंक दी। सिक्ख लीडरों की दूरदृष्टि तथा युद्ध-नीति की मुहारत का ही परिणाम था कि सिंघ रात के समय लखपत राय के खेमे में आए और अच्छे घोड़े तथा हथियार छीनकर दोबारा जंगलों में चले गए।

दूसरी सुबह सिंघों द्वारा अमृत वेले उठकर दरिया पर, जहां पानी कम था, कश्तियां बनाकर दरिया पार किया। सिंघ श्री हरिगोबिंदपुर की ओर चल पड़े तथा दरिया ब्यास पार करके दुआबा क्षेत्र में पहुंचे। यहां अदीना बेग की फौज से उनकी झपट हुई, जिसको लाहौर दरबार की पुश्तपनाही हासिल थी। यह ५००० सिंघों का जत्था जून, १७४६ ई. के लगभग मालवा क्षेत्र में पहुंचा था।

इस घल्लूघारे में १०००० सिंघ, महिलाएं तथा बच्चे शहीद हुए थे। इनमें से ३००० बंदी बनाकर लाहौर के नखास, घोड़ा मंडी, दिल्ली गेट आदि स्थानों पर शहीद किए गए। यहां अब 'शहीदगंज' नामक गुरुद्वारा निर्मित किया गया है। इस भयंकर तबाही को सिक्ख इतिहास में 'छोटा घल्लूघारा' के नाम से याद किया जाता है। (बड़ा घल्लूघारा १६ वर्षों बाद ५ फरवरी, १७६२ ई. को हुआ था।) बचे हुए ५००० सिंघों को उनके जत्थेदारों ने पूरे पंजाब में ज़िलेवार बांट दिया। नई भर्ती होकर एवं दोबारा इकट्ठे होकर हज़ारों सिंघ नई जद्दो-जहद के लिए तैयार हो गए।

सिंघों ने ३० मार्च, १७४७ ई. को श्री अमृतसर की पवित्र धरती पर इकट्ठे होकर, 'सरबत्त खालसा' बुलाकर 'गुरमता' पास किया। सिंघों ने 'रामरौणी' का मज़बूत किला श्री अमृतसर में निर्मित कर लिया।

अनुवादक-- स. गुरप्रीत सिंघ भोमा

पाउंटा साहिब का खूनी साका

*-प्रिं: सतिबीर सिंघ**

सिक्ख की गुरु-भक्ति प्रसिद्ध है। सिक्ख गुरु से कुर्बान होने को महान पुण्य समझता है और समय आने पर अपनी जान पर खेल जाता है। सही बात तो यह है कि सिक्ख मौके की तलाश में रहता है कि कब गुरु से कुर्बान हुआ जा सके। सिक्ख इतिहास गुरु-भक्ति के कारनामों से भरा पड़ा है।

गुरु के प्रति स्नेह के कारण गुरु की हर वस्तु से सिक्ख का स्नेह है। सिक्ख को गुरु का बाज़, कलगी, दसतार, खड़ाव, चोला, शस्त्र, वस्त्र, अस्त्र, जूते वही आनंद देते हैं जो उसको गुरु के चरण परसने से मिलता है। सिक्ख हर उस स्थान से वही आत्मिक शांति लेता है जो उसको गुरु-स्पर्श से मिलती है। सिक्ख का ईमान है :

जिथै जाइ बहै मेरा सतिगुरू
सो थानु सुहावा राम राजे ॥
गुरसिखी सो थानु भालिआ
लै धूरि मुखि लावा ॥ *(पन्ना ४५०)*

ऐसे स्थान को धरमसाल (धर्मशाला) समझकर, गुरु-दर जानकर सिक्ख शीश झुकाता है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के बाद गुरु का ज्योति-निवास संगत में समझकर, संगत का असल ठिकाना गुरुद्वारा जानकर सिक्ख गुरुद्वारों से भी कुर्बान जाने लगे, गुरुद्वारों की पवित्रता तथा आज़ादी के लिए जूझने लगे। सिक्खों के लिए सबसे ज्यादा आध्यात्मिक स्थल गुरुद्वारे बन गये। सिक्खों ने बाबा दीप सिंघ जी, भाई महिताब सिंघ, भाई सुक्खा सिंघ तथा स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया के रूप में श्री हरिमंदर साहिब की पवित्रता कायम रखी। महाराजा रणजीत सिंघ ने भी गुरुद्वारों को स्वतंत्र एवं स्वावलंबी बनाने के लिए उनके नाम जागीरें लगाईं।

गुरुद्वारों की सेवा-संभाल का काम, गुरु साहिबान के समय से ही मसंद, उदासी तथा निरमले कर रहे थे। वे सब गुरु जी द्वारा बख़्शी रहित मर्यादा पर ज़ोर देते थे। कठिन समय (१७१६ से १७९९ ई) में लगभग सब गुरुद्वारों की सेवा-संभाल इन्होंने संभाल ली। पंथ को धीरे-धीरे यह भी समझ आई कि अंधेरगर्दी में रहित मर्यादा में परिपक्व एवं दृढ़ सिंघों की ज़रूरत है जो गुरुद्वारों को अपमान से बचा सकें। इस तरह कई गुरुद्वारों की संभाल का काम फौजी सिंघों, अकालियों या निहंग सिंघों के पास आया। इन निहंग सिंघों के नियम तथा रहित आम सिंघों वाली थी। ये केवल खास काम पर लगाये जाते थे। ये किसी की नौकरी नहीं करते थे तथा धर्म-स्थान से अलग कोई जायदाद भी नहीं बनाते थे। दूर-दराज़ के धार्मिक स्थान श्री नानकमता साहिब, चिटागंग, सूरत, पाउंटा साहिब उदासी महंतों के कब्ज़े में ही रहे। सिक्ख राज्य के समय श्री हरिमंदर साहिब तथा अन्य प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थानों से ये उदासी हटा दिए गए। सिक्ख राज्य के उपरांत महंतों ने अपनी मनमानी करनी आरंभ की। उन्होंने अपनी जायदादें बनाकर कुरीतियां करनी आरंभ कर दीं; गुरु द्वारा बख़्शी रहित मर्यादा छोड़कर मनमत ही प्रधान कर दी । बीसवीं शताब्दी के आरंभ में तो अति ही हो गई। श्री हरिमंदर साहिब पिट्ठुओं का ठिकाना बन गया। 'कामागाटा

मारू' के शहीदों के विरुद्ध उनके पतित होने के फरमान जारी किए गए। जिस डायर ने जलियां वाला बाग का खूनी साका किया था, उसी को श्री अकाल तख़्त साहिब के पुजारियों द्वारा सिरोपा दिया गया। तरनतारन के पावन सरोवर में शराब की बोतलें ठंडी की जाती थीं। मां-बहन-पुत्री की इज्जत दिन-दिहाड़े ख्वार की जाने लगी। स. हज़ारा सिंघ ने इसके विरुद्ध आवाज़ उठाई तो उनको श्री दरबार साहिब, तरनतारन में माथा टेकते हुए ३१ जनवरी, १९२१ को टकूए द्वारा शहीद कर दिया गया। बहे हुए खून ने रंग पकड़ा तो गुरुद्वारा श्री दरबार साहिब, तरनतारन पंथक हाथों में आया। भाई हज़ारा सिंघ के नमित्त रखे श्री अखंड पाठ साहिब के भोग के समय भाई लछमण सिंघ धारोवाली (जिनको श्री ननकाणा साहिब गुरुद्वारे में जंड के वृक्ष के साथ बांधकर शहीद कर दिया गया था) भी पहुंचे हुए थे। महंतों के हाथों गुरुद्वारा साहिबान आज़ाद हुए। श्री अमृतसर में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी बनी। वैसाखी वाले दिन सारे गुरुद्वारे पंथक हाथों में देने का गुरमता पारित किया गया।

पाउंटा साहिब गुरुद्वारे की सेवा-संभाल महंत कर रहे थे। गुरमते के शब्द (विचार) सुनकर पाउंटा साहिब के महंत लहिणा सिंघ स्वयं चाबियां लेकर श्री अमृतसर पहुंचे। पंथ ने महंत जी की कुर्बानी, नम्रता तथा पंथक-प्यार देखकर पंथ द्वारा उनको सेवा-संभाल का काम सौंपे रखने का अलग प्रस्ताव पारित किया। जब पंथ ने अपनी अमानत वापिस महंत लहिणा सिंघ के पुत्र गुरदिआल सिंघ से मांगी तो हकूमत कौन है बीच में आने वाली? हकूमत कौन है रिसीवर बिठाने वाली ? गुरु ही रिसीवर है तथा पंथ उसका प्रबंधक। सरकार के कर्मचारियों ने २२ मई, १९६४ ई शुक्रवार को जो अत्याचार किए हैं, उसे सुनकर समूचे पंथ की आत्मा तड़प उठी। २२ मई का साका सरकार के माथे पर न मिटाया जा सकने वाला कलंक है। दिन-दिहाड़े निहत्थे, लंगर पकाते, सेवा करते, पाठ करते सिंघों पर गोली चलानी किसी तरह भी जायज़ नहीं कही जा सकती। फिर सबसे ज्यादा अत्याचार गुरुद्वारा साहिब के दरवाज़े तोड़कर, खिड़कियां तोड़कर, जूतों समेत अंदर जाकर श्री अखंड पाठ साहिब करते सिंघों को गोलियों से शहीद कर देना, किसी कानूनी किताब के मुताबिक जायज़ नहीं दर्शाया जा सकता। नीचता की हद उस वक्त हुई जब पाठ करते पाठी सिंघ ने हाथ ऊंचा करके इशारे से पाठ में विघ्न न डालने के लिए कहा तो उसकी हथेली में गोली दाग दी। उस पाठी सिंघ ने पाठ जारी रखा तो उस पर एक और गोली दाग दी गई जो उस सिंघ के सीने को चीरकर पार निकल गई तथा वो लहू-लुहान होकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब के स्वरूप पर गिर पड़ा। पास खड़े सिक्ख ने गिरते पाठी की जगह लेनी चाही ताकि श्री अखंड पाठ साहिब खंडित न हो तो उसको भी गोली मारकर घायल कर दिया गया। (सिंघ का कहना है कि पाठ पन्ना १५४ पर था। १०१ अखंड पाठों की शृंखला में वो २२वां पाठ था) अंदर कुल ९ सिंघ थे। एक अंदाज़े के मुताबिक ८ सिंघ शहीद कर दिए गए। शहीद सिंघों को ट्रक में डालकर, दूर जंगलों में ले जाकर उनका अंतिम संस्कार कर दिया गया। मात्र तीन सिंघों की मृतक देहें दी गईं जो बाहर शहीद किए गए थे। उन तीन सिंघों का अंतिम संस्कार यमुना नदी के किनारे पूर्ण मर्यादा के साथ रविवार के दिन २४ मई को किया गया। पुलिस श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज के शस्त्र, एक श्री गुरु ग्रंथ साहिब तथा दूसरा श्री दसम ग्रंथ साहिब का स्वरूप और रुमाले साथ ले गई। गुरुद्वारा साहिब भीतर से रक्त से भर गया। इसकी गवाही उस चौबच्चे

ने दी जिसके द्वारा रक्त पानी के रूप में उसमें पड़ता रहा। जालिमों को पता नहीं था कि बहाए गए रक्त को ब्याज बहुत लगता है। रक्त में इतनी शक्ति है कि वो खुद बोल पड़ता है। रक्त के धब्बे न तो धोने से और न ही मिटाने से मिट सकते हैं। भाई सरदार सिंघ ने खुद वो चौब्बचा रक्त से भरा देखा। चारों दीवारें गोलियों से छलनी कर दी गई थीं। दीवारों के निशान कर्मचारियों ने सीमेंट से मिटाने तथा भरने चाहे मगर वो चेचक के दागों की तरह नज़र आते रहे। ४७ निशान उनकी कारागरी के बाद भी दिखाई दे रहे थे। जो सिक्ख नगाड़ा बजाकर इस हमले की आवाज़ को बाहर पहुंचा रहा था उसको वहीं खत्म कर दिया गया। नगाड़ों के पास गोलियों के निशान इस बात की गवाही थे। दरियां-चादरें वे साथ ले गए किंतु जिस कपड़े से वे खून के धब्बे फर्श से साफ करते रहे वो वहीं छोड़ गए। वो कपड़ा उनकी खूनी दासतां सुनाने के लिए काफी है।

वो मूर्ख क्या यह नहीं जानते थे कि पाउंटा साहिब की अपनी अलग महत्ता है ? औरंगजेब के जुल्मी राज्य के समय २१ पहाड़ी राजा तो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से वैर रखते रहे परंतु यह राजा नाहन ही था जिसने गुरु जी के चरणों के आगे आंखें बिछाईं। 'पाउंटा' (पांवटा) का अर्थ ही 'आंखें बिछाना' है। महान कोश के लिखारी ने 'पाउंटा' के अर्थ करते हुए लिखा है --"मकान के आगे बिछाया हुआ वो फर्श जिस पर सम्मानयोग्य अतिथि पांव रख कर आए।"

जिस गुरु के आगे राजा नाहन सम्मान के रूप में आंखें बिछाता था, उसी नाहन के एक घटिया सोच के उच्च कर्मचारी ने गोलियां चलाकर अपमान किया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने जीते-जी नाहन की धरती पर न किसी दोषी को पांव रखने दिया और न ही गोली चलाने दी। बाद में भी यह धरती सुरक्षित ही रही। पुलिस ने सदियों से बनी मर्यादा को तोड़ा। 'पाउंटा' का दूसरा अर्थ है-- "वो रमणीक स्थान जहां आकर पांव अटक जायें।" गुरु जी राजा मेदनी प्रकाश के साथ सैर करने जा रहे थे तो घोड़े का पांव अटक गया। वह शांत होकर खड़ा हो गया। गुरु जी ने भी रमणीक स्थान देखकर ठिकाना बना लिया। सिक्खों के लिए ट्रेनिंग कैंप वहीं लगाया। गुरु जी दसम ग्रंथ में लिखते हैं :

नगर पांवटा शुभ करन जमना वहै समीपै ॥

'श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' के लिखारी ने भी साखी भरते हुए लिखा है :

पाव टिकये सतिगुर को आनदपुर ते आइ।
नाम धरयो इस पांवटा सभ देसन प्रगटाइ।

श्री अनंदपुर साहिब के बाद यही एक पावन स्थान है जहां श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी चार वर्ष ठहरे। यह वो रमणीक स्थान है जहां से नटखट शोर मचाती यमुना भी शांत होकर गुज़रती है। जहां बावन कवि रखकर कोमल कलाओं का सत्कार करना गुरु जी सिखाते थे, वहा पर आग बरसाना किसी पत्थर-दिल का ही कारनामा हो सकता है। जहां से गुरु जी ने संसार भर को एकजुट होने का उपदेश दिया, वहां निहत्थे सिंघों पर वार करना शोभा नहीं देता। जहां पीर बुद्धू शाह ने अपने चार पुत्र गुरु जी से कुर्बान कर, गुरु जी के कंघे में फंसे केशों की दात मांगी थी, आज उसी गुरु के लाडले बच्चों (निहंग सिंघों को गुरु जी की लाडली फौज कहते हैं) को केशों से पकड़ एवं घसीटकर, उनके कंघों को ज़मीन पर गिराकर उनका अपमान करना किसी बददिमाग का कार्य ही हो सकता है। ❂

सच्ची किरत मानसिक संतुष्टि का आधार है

*-डॉ. जगजीत कौर**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब द्वारा निर्देशित मानव जीवन समाज सापेक्ष जीवन-विधि है। मनुष्य स्वाभाविक रूप से सामाजिक प्राणी है। समाज में विचरना इसे प्रिय लगता है। इसीलिए सिक्ख धर्म के संस्थापक जगत गुरु साहिब श्री गुरु नानक देव जी ने जहां मानव के आत्मिक उन्नयन के लिए एक सीधा-सादा साधना-भक्ति का मार्ग प्रशस्त किया वहीं उसे एक अच्छे सामाजिक नागरिक बन, उसे सरल, सुखमय, सद्भावनापूर्ण, शांतिमय सामाजिक वातावरण बनाए रखने के लिए भी दिशा-निर्देश दिए। समाज में विचरण करते व्यक्ति का एक परिवार होता है। वह गृहस्थी होता है। गृहस्थ जीवन के कुछ दायित्व होते हैं, कुछ मीठे मधुर सम्बंध होते हैं, जहां परिवार में माता-पिता, भाई-बहन और इन्हीं से जुड़े ताने-बाने, विविध सम्बंधों में जुड़े गृहस्थी का विशाल दायरा बन अंततः समाज निर्मित करते हैं। गृहस्थ जीवन के मधुर सम्बंधों का निर्वाह करने के लिए अर्थ की भी आवश्यकता होती है, इसीलिए गुरबाणी 'चार पदार्थ' की बात करती है :

--चारि पदारथ जे को मागै ॥
साध जना की सेवा लागै ॥ (पन्ना २६६)
—धरम अरथ अरु काम मोख मुकति पदारथ नाथ ॥
सगल मनोरथ पूरिआ नानक लिखिआ माथ ॥
(पन्ना ९२७)

धर्म, काम, मोक्ष की बात करते हुए गुरुदेव जी अर्थ का भी चिंतन करने की शिक्षा देते हैं, इसलिए सामाजिक धर्मों (कर्त्तव्य) का निर्वाह करते हुए अर्थ संचय करना भी अनिवार्य है। इसे ही श्री गुरु नानक पातशाह जी ने 'किरत' करना बताया है। व्यक्ति को समाज में रहना है तो किरत करनी है; अपने श्रम और मेहनत से ही जीविका-उपार्जन करनी है। गुरुदेव जी ने अपने समय में देखा था कि योगी, सन्यासी, मुल्ला-मौलवी, निठल्ले बने साधु, फकीर आम लोगों को ठग रहे थे। वे बेगानी कमाई पर अपने लिए धन के भंडार भर रहे थे; धर्म के ठेकेदार बने भोले-भाले (अज्ञानी) लोगों को सत्मार्ग दिखाने का ढोंग रचकर उन्हें उजाड़ रहे थे, इसीलिए गुरुदेव जी ने कहा :

कादी कूड़ बोलि मलु खाइ ॥ ब्राहमणु नावै जीआ घाइ ॥
जोगी जुगति न जाणै अंधु ॥ तीने उजाड़े का बंधु ॥ (पन्ना ६६२)

गुरु साहिब ने इन तीनों वर्गों को जो उस समय जनमानस का शोषण कर रहे थे, निठल्ले बैठ पदार्थों का सुख उपभोग कर रहे थे, धिक्कारा और जनमानस को सचेत किया :

गिआन विहूणा गावै गीत ॥ भुखे मुलां घरे मसीति ॥
मखटू होइ कै कंन पड़ाए ॥ फकरु करे होरु जाति गवाए ॥
गुरु पीरु सदाए मंगण जाइ ॥ ता कै मूलि न लगीऐ पाइ ॥
घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥ नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ (पन्ना १२४५)

**१८०१-सी, मिशन कम्पाऊण्ड, निकट सेंट मेरीज़ अकादमी, सहारनपुर (यू पी)-२४७००१, मो. ९४१२४-८०२६६*

मेहनत, श्रम से बचने वाले अज्ञानी, अध्यात्म का जिन्हें किंचित ज्ञान नहीं है, उपदेशक बने बैठे हैं, मुल्ला ने घर को ही मसीत बना लिया है, निठल्ले योगी कानों में मुंद्रा डाल गृहस्थियों से भिक्षा मांगते फिरते हैं। असलियत तो यह है कि जो मेहनत से श्रम करता हुआ खून-पसीना बहाकर जीविका-अर्जन करता है, सच्ची किरत करता है, प्रभु-भक्ति में लीन रहता है और बांटकर खाता है, अपनी जरूरतें पूरी करता है और शुद्ध हृदय से दूसरे जरूरतमंद की भी आवश्यकतानुसार सहायता करता है, पवित्र धर्म का मार्ग वही पहचानता है, वही सच्चा धर्मात्मा है। गुरु साहिब ने 'अनदिन सुकृत' करने का उपदेश करते हुए बताया है :

उदमु करत आनदु भइआ सिमरत सुखु सारु ॥
जपि जपि नामु गोबिंद का पूरन बीचारु ॥
(पन्ना ८१५)

अनदिन सुकृत, कठोर श्रम से उत्पन्न फल से ही मानसिक संतोष की प्राप्ति होती है, इसलिए गुरु साहिबान ने अपने श्रम से कमाए धन को ही प्राथमिकता दी। दूसरे की कमाई दौलत पर अनाधिकार चेष्टा को वर्जित किया गया है। पराया हक मारना हिंदू के लिए गौमांस और मुसलमान के लिए सूअर का मांस खाने तुल्य है। ऐसी कमाई खाने वाले पर गुरु की कृपा नहीं होती :

हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥
गुरु पीरु हामा ता भरे जा मुरदारु न खाइ ॥
(पन्ना १४१)

दूसरे के अधिकारों पर हक जमाना मुर्दा खाने के तुल्य है। प्राय: ऐसी अनाधिकार चेष्टा करते हुए हम यह समझते हैं कि हमें कोई नहीं देख रहा है परंतु सर्वव्यापक अंतरयामी प्रभु सब देखता है :

खुसि खुसि लैदा वसतु पराई ॥ वेखै सुणे तेरै नालि खुदाई ॥ *(पन्ना १०२०)*

इसलिए :

पराई अमाण किउ रखीऐ दिती ही सुखु होइ ॥
(पन्ना १२४९)

केवल गुरु के सिक्ख ही नहीं समस्त मानव समाज आर्थिक रूप से सम्पन्न हो, इसी के लिए सिक्ख गुरु साहिबान आर्थिक सम्पन्नता के साधनों की उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहे। श्री गुरु नानक देव जी ने व्यापार (सच्चा सौदा) भी किया, मोदीखाने नौकरी भी की, और अंतिम वर्ष करतारपुर में कृषि-कर्म कर लंगर, सो दरु रहरासि की परंपरा स्थापित कर व्यवहारिक मिसालें व आदर्श स्थापित किए कि गुरसिक्ख की जीवन शैली ऐसी हो। श्री गुरु रामदास जी ने श्री अमृतसर नगर बसाकर २२ प्रकार के व्यवसायियों को प्रोत्साहित किया। गुरु के सिक्खों को काबुल, ईरान तक घोड़े लाने व अन्य व्यापार का परस्पर विनिमय करने की दिशा में प्रोत्साहित किया। गुरु साहिबान द्वारा दिए गए प्रोत्साहन का ही परिणाम है कि सिक्ख समाज देश-विदेश में गर्व के साथ सिर ऊंचा कर सम्मानपूर्ण जीवन जी रहा है।

गुरु साहिब आर्थिक विकास के इच्छुक थे। वे जानते थे कि सम्मानपूर्ण जीवन जीने के लिए धन-पदार्थ भी एक अनिवार्यता है। यद्यपि आज के युग में एडम स्मिथ, अल्फ्रेड मार्शल, मालथस, रिकार्डो, मिल जेवंस सिजविक, राबिंस आदि अर्थशास्त्रियों का यही उद्देश्य रहा कि समाज को कैसे आर्थिक सम्पन्नता की ओर ले जाया जाये और राष्ट्र के धनोपार्जन के साधनों का कैसे अधिक से अधिक सदुपयोग किया जाये; प्राकृतिक साधनों, मानवीय संसाधनों का

कैसे उपयोग हो कि देश धनधान्यपूर्ण सम्पन्न हो सके। यद्यपि ऐसी जागरूकता देश को पदार्थवादी प्रगति की ओर ले जाती रही है और ले जा रही है, मनुष्य की अपनी लोलुपता के कारण इसके कई दुष्परिणाम भी हमारे सामने आए हैं। पूंजीवाद ने समाज में विषमता पैदा की है। एक वर्ग अति साधन-सम्पन्न है और एक वर्ग अति दीन-हीन अवस्था में है। आज जैसा कि हम मानव-इतिहास और समकालीन परिस्थितियों में देख रहे हैं, देश के सुख-साधनों पर २० प्रतिशत लोगों का अधिकार हो गया है। देश के सम्पन्न साधनों का ६० प्रतिशत तो इन्हीं २० प्रतिशत लोगों की सुख-सुविधा में चला जाता है। शेष ४० प्रतिशत आम मध्यमवर्गीय और निम्न मध्यमवर्गीय लोगों के लिए बच जाता है। उसका भी समान वितरण नहीं होता। इसमें भी लूट-खसूट मची रहती है। आए दिन होने वाले स्कैम्स की कहानी सुन ही रहे हैं। देश का युवा वर्ग बेरोज़गारी से परेशान है। संत्रस्त हुआ वह भी जादू की छड़ी छुहाने जैसे सपनों से धनी बनना चाहता है। फलतः समाज में भ्रष्टाचार, दुराचार, नशाखोरी, अगवाकारी के अनेकों किस्से देखने-सुनने को मिल रहे हैं। नैतिक अध:पतन की ओर उन्मुख समाज का यदि कल्याण हो सकता है तो केवल महान गुरु साहिबान के पावन उपदेशों द्वारा ही, जिन्होंने हक-हलाल की कमाई के साथ प्रभु-सिमरन में जुड़ बांट खाने, दसवंध निकालने की जीवन-युक्ति बताई है। गुरु साहिबान के समय में, जो भी गुरु का श्रद्धालु उनके चरणों से जुड़ा, उसे उसके पेशे के अनुकूल पूर्ण गुरमति का उपदेश दे उसकी कार्य-विधि को एक प्रणाली प्रदान की। यह सत्य है कि जैसा प्रो. पूरन सिंघ ने अपने एक लेख में 'आचरण की सभ्यता' में लिखा है कि "भूखे व्यक्ति से आप उच्च सदाचारक जीवन की आशा कैसे कर सकते हैं ? भूखे व्यक्ति को तो आकाश में चमकता गोल चांद भी रोटी की तरह दिखता है, इसलिए तो प्रभु-भक्तों ने भी *"दालि सीधा मागउ घीउ"* की मांग रखते हुए कहा : *"भूखे भगति न कीजै ॥ यह माला अपनी लीजै ॥"*

यह तो जीवन की अनिवार्यता है परंतु गुरु साहिबान ने साथ में यह भी निर्देश दिया :

जिसु ग्रिहि बहुतु तिसै ग्रिहि चिंता ॥
जिसु ग्रिहि थोरी सु फिरै भ्रमंता ॥ (पन्ना १०१९)

सब बांटकर खाओ और अपने-अपने कार्य-क्षेत्र को ईमानदारी, मेहनत और लगन से पूरा करो। उन्होंने प्रत्येक वर्ग के लिए स्वस्थ, सभ्यक मार्ग निर्दिष्ट किया।

भाई गुरदास जी अपनी ११वीं वार की १२वीं पउड़ी में गुरु साहिबान के समय में हुए श्रद्धालु सिक्खों का ज़िक्र करते हैं। इसी आधार पर बाद में भाई मनी सिंघ जी ने 'भगतमाल' की रचना की। 'सिक्खों की भगतमाल' में गुरु साहिबान द्वारा गुरसिक्खों को यही उपदेश दिया गया कि कैसे किरत करते हुए प्रभु-भक्ति और मानव-सेवा द्वारा जीवन को सफल, सार्थक बनाना है। ज़िक्र आता है कि श्री गुरु नानक पातशाह जी के समय भाई तारू पोपट, भाई मूला कीड़, भाई पिरथा खेड़ा आदि के साथ *"भला रबाब वजाइंदा मजलस मरदाना मीरासी"* किरती सिक्ख थे। भाई मालो और भाई मांगा गुरबाणी-कीर्तन करते थे। संगत प्रसन्न होकर भेंटा करे। गुरु साहिब ने इन्हें उपदेश दिया कि कीर्तन मन लगा कर करो। चित्त का योग होगा तो रस बनेगा। धर्म की किरत करो, बांटकर खाओ, आए-गए साधु-संत की टहल करो, इसमें तुम्हारा और अन्य श्रोतागण का कल्याण होगा।

भाई अजित्ता (रंधावा, जाट) खेती-कर्म करता। भाई बूढ़ा जी गाय चराते, खेती करते, जो बाद में बाबा बुड्ढा जी के रूप में गुरु-सेवा में लगे पंथ-प्रवानित हुए। गुरु साहिब के आदेश सुने-- किरत करो, जरूरतमंदों की सेवा करो, जीवन सार्थक होगा। श्री गुरु अंगद देव जी के समय भाई गुज्जर लुहार-कर्म करते थे। गुरु-शरण में आए, कहा, "सारा दिन लोहा पीटता रहता हूं। मेरा उद्धार कैसे होगा?" गुरु-उपदेश हुआ, "लोहा पीटते जपु जी साहिब का पाठ करो। ज़रूरतमंद, गरीब का काम गुरु नमित्त जानकर मुफ्त करो। आए-गए गुरसिक्खों की सेवा करो।" कई वर्ष इसी क्रम से सेवा की। अंत समय गुरु-दर्शन को आया। गुरुदेव की बख़्शिश प्राप्त हुई। पूरे परिवार का कल्याण हुआ। मूलसाही श्री गुरु अंगद देव जी के दर्शन को आया। कहा, "मुगलों की सेवा में हूं। युद्ध भी करना पड़ता है।" गुरु साहिब ने उपदेश किया-- "युद्ध तुम्हारा कर्म है। पहला वार किसी पर मत करो। युद्ध की नौबत आ बने तो डटकर पूरे ताण से जंग करो। दान-कर्म करो, संगत की सेवा करो, नाम जपो, कल्याण होगा।"

इसी प्रकार श्री गुरु अरजन देव जी की शरण में भाई आडिड और भाई सोइनी सूरमा आए। प्रार्थना की, "गुरुदेव! हमारा काम शस्त्र धारण कर युद्ध करना है।" गुरुदेव जी ने कहा, "धर्म का युद्ध करो, गरीब को सताने वाले से युद्ध करो। जिसकी चाकरी करते हो, जिसका नमक खाते हो, उसके प्रति कर्त्तव्य पूरा करो। युद्ध करते समय बाणी पढ़ो, विजय तुम्हारी होगी और मुख उजला होगा। श्री गुरु अरजन देव जी की शरण में सुलतानपुरिए संगत के सिक्ख भी आए। गुरुदेव जी ने उपदेश किया, धर्म की किरत करो। बाणी का पाठ कर किरत में लगोगे, मन शांत रहेगा। हिंसा और क्रोध नहीं करो। यह तामसिक गुण है। लोभ, अभिमान करोगे तो राजसी गुण में विचरोगे। बाणी, पाठ कर मीठा बोलोगे, सबसे विनम्रतापूर्ण व्यवहार करोगे, तो मन में शांति और सात्विक भाव जागेगा। मन शांत होगा तो किरत कर सुख-संतोष की प्राप्ति करोगे।

भाई धिंगड़ और भाई मदू बाढी लकड़ी का काम करते थे। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की शरण में आकर लंगर के लिए लकड़ी भी काटते और जरूरतमंद सिक्खों के लिए मुफ्त में खाट, मंजे, चौंकी आदि की सेवा कर देते। कीर्तन-कथा का समय होने पर प्रात:-सायं कथा-कीर्तन सुनते। प्रात:काल गुरसिक्खों को स्नान करवाते। आप भी स्नान कर बाणी पाठ-गायन करते। इसी क्रम में शरीर छोड़ गुरु-चरणों में बिराजे। छठम गुरु के समय भाई बनवाली और भाई पारसराम बाल-वैद्य थे। रोगियों की सेवा करते, आप रोगी के घर पहुंच कर दवा-दारू करते। गुरु साहिब ने उपदेश किया, "रोगी के रोग से मुक्त हो जाने पर अहंकार नहीं करना है। अकाल पुरख जी का शुक्राना करना है।"

अउखद आइ रासि विचि आपि खलोइआ ॥

(पन्ना १३६३)

गुरु-कृपा से ही औषधि का असर हुआ। दवा देने से पहले रोग की भली-भांति पहचान करो :

वैदा वैद सुवैद तू पहिला रोगु पछाणु ॥

(पन्ना १२७९)

रोग, दारू (दवा) दोनों की भली प्रकार समझ करो। गुरु की बाणी का पाठ करो। गुरु आप पर कृपा करेगा।

इस प्रकार गुरु साहिबान ने हमेशा किरती सिक्खों पर बख़्शिश की। आप उनके पास चल

कर जाते रहे। श्रम की महानता को गुरु साहिबान ने हमेशा वरीयता दी है। जब-जब, जहां-जहां किरती सिंघ अपने गुरु को प्रेम से याद करते रहे गुरुदेव वहीं पहुंच उस पर बख़्शिश करते रहे। श्री गुरु हरिराय साहिब के समय डरौली के निकट भाई परमा और भाई सरमा लकड़ी काटने की किरत करते। एक पेड़ के साथ डोलची में पानी भर टांग देते। हवा से पानी ठंडा हो जाता। एक दिन एक नई डोलची में पानी भर टांग दिया। हवा से पानी खूब ठंडा हो गया। भोजन के समय दोनों ने सोचा, "यह ठंडा पानी यदि गुरुदेव पीते तो कितना अच्छा होता!" इधर गुरुदेव डरौली से होते हुए वहीं जंगल में पहुंचे। कहा, "भाई सिक्खो, लाओ, ठंडा पानी पीलाओ!" दोनों बहुत खुश हुए। गुरु-चरणों पर नत्मस्तक हुए। आशीर्वाद मिला, "सेवा करो, किरत करो, लंगर चलाओ।" बूटेशाह के अनुसार-- "खिदमत अजराई लंगर बाजिह मरहमत फरमूंद।"

श्री गुरु हरिराय साहिब की सेवा में भाई फेरू फिर-फिर कर नगरों-गांवों से घी-नमक आदि बेचते, सिक्खों के लिए घी आदि देते, लंगर-सेवा करते और गुरबाणी का प्रचार करते। गुरु साहिब ने प्रत्येक किरती को सत्य मार्ग पर चल ईमानदारी से फर्ज़ पूरे करने का उपदेश दिया।

गुरुदेव जी ने बताया यदि कोई शिक्षण पेशे से जुड़ा है तो उसका फर्ज़ बनता है कि सेवा में आए शिष्य को सही ज्ञान की दिशा प्रदान करे :

पांधा गुरमुखि आखीऐ चाटड़िआ मति देइ ॥
नामु समालहु नामु संग्रहु लाहा जग महि लेइ ॥
(पन्ना ९३८)

शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान का दीपक प्रज्वलित करना है, विचार-शक्ति, परोपकार-भावना को जगाना है :

--पोथी पुराण कमाईए ॥
भउ वटी इतु तनि पाईए ॥ (पन्ना २५)
--विदिआ वीचारी त परउपकारी ॥ पन्ना ३५६)

शिक्षा व्यापार नहीं है :

मनमुखु बिदिआ बिक्रदा बिखु खटे बिखु खाइ ॥
(पन्ना ९३८)

खोज-रीसर्च ज्ञान की दिशा में होनी चाहिए, जिससे अपनी भाषा और संस्कृति का उत्थान हो। वही *"धनु लेखारी नानका"* है जो जगत-कल्याण हित कार्यरत रहता है। गुरु साहिब ने स्पष्ट संकेत दिए कि यदि श्रम की दिशा में कार्यरत हो तो मिथ्या अभिमान, गर्व, हउमै से दूर रहकर पूर्ण समर्पित सेवा-भाव से श्रम करो :

चाकरु लगै चाकरी नाले गारबु वादु ॥
गला करे घणेरीआ खसम न पाए सादु ॥
आपु गवाइ सेवा करे ता किछु पाए मानु ॥
(पन्न ४७४)

ईमानदारी, प्रेम, सेवा, समर्पण-भाव से किया गया श्रम ही सच्चा सुख, संतोष देता है :

चाकरु लगै चाकरी जे चलै खसमै भाइ ॥
हुरमति तिस नो अगली ओहु वजहु भि दूणा खाइ ॥
(पन्ना४७४)

सेवा, समर्पण से युक्त निरअहंकार किरत (श्रम) ही सच्चा संतोष प्रदान करती है। ❁

गुरमति का प्रमुख सिद्धांत : किरत करना

-डॉ. परमजीत कौर*

भारतीय संस्कृति में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति को मानव जीवन का लक्ष्य माना गया है। श्री गुरु अरजन देव जी ने अपनी बाणी में इनका चार पदार्थों के रूप में उल्लेख किया है :

चारि पदारथ जे को मागै ॥
साध जना की सेवा लागै ॥ *(पन्ना २६६)*

निःसंदेह जीवन में 'धर्म' के साथ 'अर्थ' (धन) की भी आवश्यकता है, परंतु ऐसा धन ही 'अर्थ' कहा जाता है जो उचित साधनों से मेहनत करके अर्जित किया जाता है। अनुचित साधनों से एकत्रित किया गया धन 'अनर्थ' बन जाता है तथा जीवन को नष्ट कर देता है।

श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार नाम जपना, किरत करनी तथा वंड छकना (बांट कर खाना) ही सफल जीवन का आधार है। परिश्रम करके धन अर्जित करना ही किरत करना है। जीवन में पुरुषार्थ का बहुत महत्त्व है। मेहनत का बीज बोकर ही समृद्धि तथा प्रसन्नता का फल प्राप्त किया जा सकता है। गुरु साहिब का आदेश है :

उदमु करेदिआ जीउ तूं कमावदिआ सुख भुंचु ॥
(पन्ना ५२२)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की विचारधारा मनुष्य को संसार से तोड़ती नहीं वरन् संसार में रहते हुए, गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए व्यक्तिगत विकास के लिए प्रेरित करती है तथा परमात्मा के साथ जोड़ती है। गुरमति के सिद्धांतों का अनुसरण करने वाला जीव गृहस्थ में रहता हुआ भी त्यागी है :

सचा सबदु सचु मनि घरि ही माहि उदासा ॥
(पन्ना १४०)

गुरु साहिब ने गृहस्थ में रहकर मेहनत की कमाई करके उसमें से जरूरतमंदों की सहायता करने का आदेश दिया है :

घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ *(पन्ना १२४५)*

संसार को त्यागकर जंगलों में जाने वाले, हृष्ट-पुष्ट शरीर के होते हुए भी मांग कर खाने वाले, परिश्रम से पेट पालने की अपेक्षा दूसरों पर आश्रित रहने वाले तथाकथित योगियों तथा साधु-सन्यासियों का जीवन गुरमति की कसौटी पर खरा नहीं उतरता। श्री गुरु अमरदास जी स्पष्ट करते हैं :

एहु जोगु न होवै जोगी जि कुटंबु छोडि परभवणु करहि ॥ *(पन्ना ९०९)*

श्री गुरु नानक देव जी समझाते हैं कि जो आलस्य के कारण परिश्रम नहीं करते, कान फड़वा (कटा) लेते हैं तथा अपने को 'पीर-फकीर' कहलवाते हुए दर-दर मांगते फिरते हैं; उनके पीछे नहीं लगना चाहिए :

मखटू होइ कै कंन पड़ाए ॥ फकरु करे होरु जाति गवाए ॥
गुरु पीरु सदाए मंगण जाइ ॥ ता कै मूलि न लगीऐ पाइ ॥ *(पन्ना १२४५)*

भाई गुरदास जी कहते हैं कि यह कैसी रीति है कि गृहस्थ त्यागकर, विरक्त होकर फिर

*६२०, गली नं. २, छोटी लाइन, संतपुरा, यमुनानगर-१३५००१ (हरियाणा); मो. ९८१२३-५८१८६

उन्हीं गृहस्थियों के घर मांगने के लिए जायें ?
होइ अतीतु ग्रिहसति तजि फिरि उनहु के घरि मंगणि जाई ॥ *(वार १:४०)*

भक्त नामदेव जी के मत में मनुष्य को शरीर से कार्य करना चाहिए तथा मन से प्रभु की आराधना करनी चाहिए :

नामा कहै तिलोचना मुख ते रामु संम्हालि ॥
हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजन नालि ॥
(पन्ना १३७५)

गुरु साहिबान का जीवन किरत के सिद्धांत को दृढ़ करवाता है तथा धर्म की किरत करने के लिए प्रेरित करता है।

श्री गुरु नानक देव जी ने सुलतानपुर लोधी के मोदीखाने में नौकरी की तथा चौथी उदासी के बाद करतारपुर में आकर खेती का काम शुरू कर दिया। उस किरत से जो अन्न पैदा होता वह लंगर में बांटा जाता। इस प्रकार संगत को नाम-सिमरन एवं किरत करते हुए गृहस्थ में निर्वाण के उच्च आदर्श का उपदेश दिया।

श्री गुरु नानक देव जी ने प्रचार के दौरान ऐमनाबाद में स्थित उच्च कुल के रिश्वतखोर मलिक भागो द्वारा दिए गये भोज के निमंत्रण को ठुकरा कर मेहनत करके कमाने वाले निर्धन सिक्ख भाई लालो के घर में कोधरे की रोटी को खाना स्वीकार किया। मलिक भागो द्वारा कारण पूछने पर उसे स्पष्ट कहा कि "तेरी कमाई अधर्म की है। तू जुल्म करता है तथा रिश्वत लेकर गरीबों का खून चूसता है। तेरा खाना गरीबों के खून से बना हुआ है परंतु भाई लालो की सूखी रोटी में अमृत का स्वाद है क्योंकि वह धर्म की किरत करता है।"

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने ग्वालियर के किले में नज़रबंद होने पर तीन दिन तक भोजन नहीं किया क्योंकि वहां उपलब्ध भोजन जुल्म से एकत्र किये गये राजांश का भाग था। अंत में उन्होंने गुरसिक्खों द्वारा लाये गये भोजन को स्वीकार किया। भाई संतोख सिंघ के शब्दों में :

स्री मुख ते फुरमावनि कीनि।
'इह भोजन हम खाहिं कबी न।
वहिर जाइ मिहनत करि ल्यावहु।
रसद खरीदहु बिपनी जावहु ॥४६॥
तिस ते त्यार अहार करीजहि।
हित भोजन के सो हम दीजहि ॥
नांहि त रहि हैं पौन अहारी।
जबि लगि बासहिं दुरग मझारी ॥४७॥
(श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, रास ४, अध्याय ५९)

तथा :

स्री मुखि कहा किरति करि लयावो।
सो भोजनु हम कौ करवावो ॥४८५॥८॥
(गुर बिलास पा: ६)

माता गुजरी जी जब छोटे साहिबज़ादों के साथ सरहिंद के किले के ठंडे बुर्ज में कैद थीं तो कई दिनों से भोजन ग्रहण न करने के बावजूद भी उन्होंने गरीबों को लूटकर एकत्रित किये गये धन से मुगलों की रसोई में बने हुये भोजन को खाने से इंकार कर दिया तथा बाद में भाई मोती राम द्वारा लाये गये उसके घर की गाय के दूध को पीना स्वीकार किया क्योंकि वह दूध उसकी अपनी मेहनत की कमाई का था।

गुरमति में किरत के सिद्धांत में मेहनत के साथ-साथ सत्य भी सम्मिलित है। असत्य के मार्ग पर चलकर, दूसरों का हक मारकर, छल-कपट से कमाया गया धन गुरमति के सिद्धांत के विरुद्ध है। श्री गुरु नानक देव जी ने स्पष्ट शब्दों में समझाया है कि दूसरों का हक मारना पाप है। पराया हक मारना हिंदु

के लिए गाय तथा मुसलमान के लिए सूअर खाने के बराबर है :

हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥
(पन्ना १४१)

अधर्म तथा छल-कपट से कमाये गये धन के उपयोग से मन मलिन तथा विकारग्रस्त हो जाता है। श्री गुरु नानक देव जी समझाते हैं कि यदि वस्त्र पर रक्त लग जाये तो वह अपवित्र हो जाता है। जो लोग रिश्वत लेकर दूसरों का खून पीते हैं उनका मन पवित्र कैसे हो सकता है?

जे रतु लगै कपड़ै जामा होइ पलीतु ॥
जो रतु पीवहि माणसा तिन किउ निरमलु चीतु ॥
(पन्ना १४०)

आज हमारी कमाई पर झूठ का रंग चढ़ता जा रहा है, हमारा आचरण भ्रष्ट होता जा रहा है। गुरसिक्ख चाहे व्यापारी हो, दुकानदार, डॉक्टर, वकील या नौकरीपेशा हो, अपनी किरत-कमाई में सच्चा तथा छल-कपट से रहित होना ही उसका धर्म है। स्मरण रहे कि यदि एक प्रोफेसर या शिक्षक पूरा वेतन लेता है पर नियमित रूप से कक्षाओं में नहीं जाता है, पाठ्यक्रम पूरा नहीं कराता है; व्यापारी (जानते हुये भी) जरूरत से अधिक लाभांश लेता है; डॉक्टर मरीज़ों के ठीक हो जाने पर भी उन्हें चिकित्सालय में रखता है तथा अपने पेशे के प्रति ईमानदार नहीं है; दुकानदार सामान में मिलावट करता है या कम तौलता है; प्राइवेट तथा सरकारी कार्यालयों में कार्यरत कर्मचारी अपने समय का दुरुपयोग करते हैं तो सही अर्थों में वे किरत नहीं कर रहे। ऐसी कमाई में से धर्मार्थ के लिए निकाला गया दसवंध (दसवां भाग) भी फलीभूत नहीं होता। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का स्पष्ट आदेश है :

दस नख करि जो कार कमावै। तां कर जो धन घर मैं आवै।
तिह ते गुर दसवंध जु देई। सिंघ सुजस बहु जग महि लेई।
(रहितनामा भाई देसा सिंघ)

भाई गुरदास जी के मत में गुरमुख उपजीविका के लिए धर्म की किरत करते हैं तथा अपने हाथों से दान आदि देकर दूसरों का भला करते हैं :

किरति विरति करि धरम दी हथहु दे कै भला मनावै ॥
पारसु परसि अपरसि होइ पर तन पर धन हथु न लावै ॥ *(वार ६:१२)*

संक्षेप में कह सकते हैं कि मर्यादा में रह कर, सदाचार का पालन करते हुए उचित साधनों से धन कमाना अर्थात् किरत करना जीवन की आवश्यकता है। किरत के सिद्धांत का पालन करने के लिए हमें यह ध्यान रखना है कि सत्य का दामन छूट न जाए, लोक- दिखावे की पकड़ मज़बूत न हो जाये, असंतुष्टी आदत न बन जाये तथा प्राप्ति की अंधी दौड़ में कदम डगमगा न जायें, तभी हम गुरमति अनुसार जीवन-यापन करते हुए मानसिक शांति प्राप्त कर सकते हैं। ❁

चित्त करतार विच, हत्थ कार विच

*-डॉ सत्येंद्रपाल सिंघ**

पंच तत्वों से मिलकर बनी मनुष्य की देह परमात्मा की कृति है जिसका विशेष प्रयोजन है। जीव को चौरासी लाख योनियों में भटकते हुए मनुष्य-योनि प्राप्त होना सभी बंधनों से मुक्त होकर परमात्मा से जा मिलने का एक सुयोग है। इस जीवन का मोल पहचान लेने वाला जीव सतिगुरु की शरण में जाकर अपने भ्रमों का निवारण करने में और उस राह पर चलने में सफल होता है जो परमात्मा के निकट ले जाती है। यह आसान नहीं है क्योंकि जिस परमात्मा ने इतनी सुंदर सृष्टि की रचना की है, भांति-भांति के जीव-जंतुओं, वनस्पतियों को आकार दिया है उसी ने सारी सृष्टि को माया के जाल में बांध दिया है। मनुष्य का मन माया के फेर में ही विकारों के अधीन हो गया है :

इहु जगो दुतरु मनमुखु पारि न पाई राम ॥
अंतरे हउमै ममता कामु क्रोधु चतुराई राम ॥
अंतरि चतुराई थाइ न पाई बिरथा जनमु गवाइआ ॥
जम मगि दुखु पावै चोटा खावै अंति गइआ पछुताइआ ॥
बिनु नावै को बेली नाही पुतु कुटंबु सुतु भाई ॥
नानक माइआ मोहु पसारा आगै साथि न जाई ॥
(पन्ना ७७५)

मनुष्य जब अपनी मति से चलता है तो माया-विकारों के वश होकर दुख ही पाता है क्योंकि जिन्हें वह अपना मान रहा है वे वस्तुत: उसके सहायक नहीं हैं। ऐसे विकारों में लिप्त रहते सारा जीवन ही व्यर्थ चला जाता है। उन कर्मों का कोई फल नहीं जो माया-मोहवश किए गए हैं :

अंतरि अगिआनु भई मति मधिम सतिगुर की परतीति नाही ॥
अंदरि कपटु सभु कपटो करि जाणै कपटे खपहि खपाही ॥
(पन्ना ६५२)

अज्ञान के कारण माया के जाल में फंसकर मनुष्य की मति सच की राह दिखाने योग्य नहीं रहती और वह व्यर्थ के कर्म में ही अपने जीवन का उद्देश्य ढूंढने लगता है।

मनुष्य को मोह-माया के बंधनों से मुक्त करने के विभिन्न विचार समय-समय पर सामने आते रहे। गृहस्थ आश्रम को मोह-माया का सबसे बड़ा कारण मानते हुए इसे त्याग कर सन्यास का राह सुझाया गया। जप-तप के कठोर नियम-आचार बनाये गए। वनों में जाकर, पर्वतों पर चढ़कर सुख की खोज करने के आडंबर किए गए। अनेक कर्म-कांड, आडंबर धर्म के नाम पर प्रचलित होते गए। इससे मनुष्य की दुविधाएं दूर होने के स्थान पर और भी बढ़ती चली गईं। ये सारे साधन बनने के स्थान पर साध्य बन गए और जीवन एक विषम आयोजन जैसा बन गया। समाज दो वर्गों में विभक्त हो गया। एक वर्ग धर्म-कर्म के नाम पर आडंबरों से जुड़कर स्वयं को श्रेष्ठ समझने लगा और दूसरा वर्ग, जो इन आडंबरों से अलग था, हेय समझा जाने लगा। यह एक बड़े फरेब

**E-१७१६, राजाजीपुरम, लखनऊ-२२६०१७, मो : ९४१५९६०५३३*

की तरह था, जिसे पहली बार श्री गुरु नानक देव जी ने चुनौती देते हुए जगज़ाहिर किया :

ना सति दुखीआ ना सति सुखीआ ना सति पाणी जंत फिरहि ॥
ना सति मूंड मुडाई केसी ना सति पड़िआ देस फिरहि ॥
ना सति रुखी बिरखी पथर आपु तछावहि दुख सहहि ॥
ना सति हसती बधे संगल ना सति गाई घाहु चरहि ॥ (पन्ना ९५२)

ढोंग, आडंबर, संसार-समाज त्यागकर ओढ़ी गई 'श्रेष्ठता' को सिरे से नकारते हुए श्री गुरु नानक साहिब ने घर-संसार के त्याग को अनावश्यक बताते हुए जीवन के सच को सामने रखा :

सो गिरही जो निग्रहु करै ॥
जपु तपु संजमु भीखिआ करै ॥
पुंन दान का करे सरीरु ॥
सो गिरही गंगा का नीरु ॥ (पन्ना ९५२)

श्री गुरु नानक देव जी ने कहा कि जीवन को सामान्य रूप से जीते हुए इसे पवित्र बनाया जा सकता है यदि अपनी इंद्रियों को परमात्मा की राह में केंद्रित कर लें। इसके लिए सद् आचार और संयम पाने की परमात्मा से प्रार्थना करें। अपने तन को हठयोग, बंधन आदि के भांति-भांति के कष्ट देने के आडंबरों के स्थान पर इसे सत्कर्म और परोपकार में लगायें। सुकर्म परमात्मा का श्रेष्ठ सिमरन हैं :

सुक्रितु करणी सारु जपमाली ॥
हिरदै फेरि चलै तुधु नाली ॥१॥
करि किरपा मेलहु सतसंगति
तूटि गई माइआ जम जाली ॥ (पन्ना ११३४)

गुरमति ने राह दिखायी कि सत्कर्म करने से बड़ा जप-तप अन्य नहीं है। सुकर्म जब मन में परमात्मा का भाव धारण करके किए जाते हैं तो वो जीवन को ठोस आधार देने वाले होते हैं। मनुष्य जब सत्कर्मों की राह पर चल पड़ता है और परमात्मा से प्रेम करने वालों के संग स्वयं को जोड़ लेता है अर्थात् दुष्कर्मों और दुष्कर्म करने वालों से सावधान होकर दूरी बना लेता है तो उसके सारे माया के बंधन कट जाते हैं और उसकी सारी दुविधाएं दूर हो जाती हैं।

गुरमति ने जीवन की सफलता को क्रियाशीलता और संयम-अनुशासन से जोड़ा। मनुष्य को आध्यात्मिक और शारीरिक दोनों ही रूप से एक सफल जीवन पाने के लिए तैयार किया गया। इसके लिए अलग-अलग प्रयासों की बात न करके दोनों को मिलाकर एक राह बना दी गयी। यह विचार इसी कारण इतना सुगम और व्यवहारिक हो गया कि मनुष्य परमात्मा के एकदम निकट आ गया। इंद्रिय निग्रह का सरल समाधान या समूची सृष्टि में परमात्मा के रूप को देखना उसे आ गया :

ए नेत्रहु मेरिहो हरि तुम महि जोति धरी हरि बिनु अवरु न देखहु कोई ॥
हरि बिनु अवरु न देखहु कोई नदरी हरि निहालिआ ॥
एहु विसु संसारु तुम देखदे एहु हरि का रूपु है हरि रूपु नदरी आइआ ॥ (पन्ना ९२२)

परमात्मा ने मनुष्य को दृष्टि दी है। यह दृष्टि परमात्मा को ही देखने के लिए मिली है। सारी सृष्टि ही परमात्मा की रचना है। जब मनुष्य परमात्मा द्वारा दी गयी दृष्टि से संसार को देखता है तो सर्वत्र उसे परमात्मा के रूप के ही दर्शन होते हैं। यह दृष्टि उसके विचार और आचार में प्रकट होने लगती है। मनुष्य जब परमात्मा का भाव धारण करके कोई कर्म करता है तो वह कर्म सुकर्म बन जाता है।

सुकर्म वो है जो परमात्मा की अनुकूलता से, परमात्मा की कृपा प्राप्त करके किया गया हो और जिसमें स्वयं का अहंकार, क्रोध, मोह, काम, लोभ शामिल न हो। ऐसा कर्म ही मनुष्य को सम्मान का अधिकारी भी बनाता है और उसे सहज सुख भी देता है। जिस कर्म में विकार का कोई तत्व उपस्थित होगा उस कर्म से निराशा और दुख ही मिलने वाला है।

जब विकार नहीं होते तो मन में विनम्रता आती है, प्रेम उत्पन्न होता है, सहजता उपजती है और निर्लिप्तता की अवस्था बन जाती है।

भाई लालो जी एक निर्धन बढ़ई थे, जो ऐमनाबाद में रहते थे। श्री गुरु नानक देव जी उनसे मिलने के लिए स्वयं भाई मरदाना जी के साथ उनके नगर गए। जब भाई लालो जी से गुरु साहिब की मुलाकात हुई तो गुरु साहिब ने आशीर्वाद दिया, *"चित्त करतार विच, हत्थ कार विच"* अर्थात् सदैव परमात्मा का नाम चित्त में रहे और हाथों से निरंतर अपना कार्य करते रहें। यह श्रम का सबसे बड़ा सम्मान था जो अब तक नहीं दिया गया था। श्री गुरु नानक देव जी के इस आशीर्वाद से जहां भाई लालो जी इतिहास के पहले श्रम नायक बन गए वहीं श्रम पवित्र स्थान पाकर महिमामंडित हो गया।

श्रम ने भाई लहिणा जी के रूप में तो प्रतिष्ठा का शिखर ही छू लिया। भाई लहिणा जी अपने घर खंडूर साहिब से जब श्री गुरु नानक देव जी के पास करतारपुर जाने के लिए चले तो लंगर के लिए सवा मण (लगभग ५० कि. ग्रा.) नमक की बोरी ले आए। करतारपुर पहुंचने पर जब पता चला कि गुरु साहिब खेतों में गये हुए हैं तो वे नमक की बोरी वहां रखकर खेतों की ओर चल दिए। वहां उन्होंने गुरु साहिब का हाथ बंटाया और अपने रेशमी वस्त्रों के खराब हो जाने की तनिक भी परवाह न की। जब काम खत्म हुआ तो धान के खेत से निकले घास-फूस का बोझ बांधा गया जो एकदम गीली मिट्टी से लथपथ था। भाई लहिणा जी ने वह बोझ उठा लिया और गुरु साहिब के साथ चल पड़े। गीले बोझ की कीचड़ भरी छींटें उनके रेशमी वस्त्रों पर गिरती रहीं और वे 'सतिनामु' का जाप करते चलते रहे। माता सुलक्खणी जी के पूछने पर गुरु नानक साहिब ने कहा कि भाई लहिणा जी के सिर के ऊपर घास का बोझ नहीं संसार का छत्र है। कपड़ों पर कीचड़ के छींटे नहीं केसर के छींटे हैं। वो भी दिन आ गया जब वे भाई लहिणा जी दूसरे गुरु के रूप में प्रतिष्ठापित हुए। भाई लहिणा जी से श्री गुरु अंगद देव जी बन गए :

खुलिआ करमु क्रिपा भई ठाकुर कीरतनु हरि हरि गाई ॥
स्रमु थाका पाए बिस्रामा मिटि गई सगली धाई ॥१॥
अब मोहि जीवन पदवी पाई ॥
चीति आइओ मनि पुरखु बिधाता संतन की सरणाई ॥१॥ रहाउ ॥
कामु क्रोधु लोभु मोहु निवारे निवरे सगल बैराई ॥
सद हजूरि हाजरु है नाजरु कतहि न भइओ दूराई ॥२॥ *(पन्ना १०००)*

छोटे से छोटा काम यदि ईमानदारी, सच्ची नीयत और परमात्मा की अनुकूलता में रहकर किया जाए तो जीवन को आगे बढ़ाने में सहायक होता है। गुरमति जिन तीन मूल स्तंभों-- *"नाम जपो, किरत करो, वंड छको"* पर टिकी है वे श्रम को पवित्र स्वरूप प्रदान करते हैं। श्रम स्वहित के साथ-साथ परहित के लिए भी और अंतर में बैठे परमात्मा को बाहर देखते हुए किया जाना है। नाम यदि अपने लिए ही जपना है, किरत (कर्म) अपने लिए ही

करना है और परोपकार (वंड छकना) यदि अपनी सुविधा के अनुसार है तो वह गुरमति नहीं है। इससे छोटे-बड़े मंचों पर वाहवाही तो लूटी जा सकती है लेकिन विश्राम नहीं मिलने वाला और जीवन-पदवी दूर से दूर होती जाएगी :

किआ खाधै किआ पैधै होइ ॥
जा मनि नाही सचा सोइ ॥
किआ मेवा किआ घिउ गुड़ु मिठा किआ मैदा किआ मासु ॥
किआ कपड़ु किआ सेज सुखाली कीजहि भोग बिलास ॥
किआ लसकर किआ नेब खवासी आवै महली वासु ॥
नानक सचे नाम विणु सभे टोल विणासु ॥
(पन्ना १४२)

आज के संदर्भ में जब मनुष्य अपनी छोटी-बड़ी उपलब्धियों पर गर्वोन्मत होकर फूला-फूला घूम रहा है, वह निपट भ्रम में जी रहा है। अपने गर्व के मद में वह भाई लहिणा जी के रेशमी वस्त्रों पर पड़े कीचड़ के छींटों में केसर का रंग नहीं देख पा रहा है और सच का अपमान करने का दुस्साहस कर रहा है। उसे क्या पता कि जिन चीज़ों पर वह इतरा रहा है उनका विनाश हो जाने वाला है और वह जीवन के सुयोग को गंवा देने वाला है।

मेहनत करके जीवन को सफल वही बना सकता है जिसकी जीवन-सोच और जीवन-शैली संयम और सहज अवस्था में हो। इसके लिए गुरमति की शिक्षा अमृत वेले (पहले पहर में) उठकर स्नान आदि करके परमात्मा के स्मरण से दिन की शुरूआत करने की है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब से नित्य प्रात: लिया गया 'हुकम' हमारे कर्मों को सही दिशा देने में भरपूर सहायक होता है। जीवन को परमात्मा के अनुकूल संवारना और आगे ले चलना ही सच्चा श्रम है। लाखों लोगों ने लाखों-करोड़ों कमाए और चले गए तथा उन्हें भुला दिया गया। वे न तो अपना जीवन सफल कर सके और न ही समाज को कोई प्रेरणा दे सके :

कबीर राम नामु जानिओ नही पालिओ कटकु कुटंबु ॥
धंधे ही महि मरि गइओ बाहरि भई न बंब ॥
(पन्ना १३७६)

गुरमति की प्रेरणा है कि मनुष्य परमात्मा के मार्ग पर चलते हुए कर्म करे। वह भी इस प्रतीति के साथ कि यह सब परमात्मा की शरण में जाने से ही कर पा रहा है और उसकी शरण सदा बनी रहे :

हमरे करम न बिचरहु ठाकुर तुम्ह पैज रखहु अपनीधे ॥
हरि भावै सुणि बिनउ बेनती जन नानक सरणि पवीधे ॥ (पन्ना ११७९)

सच्चा गुरसिक्ख वही है जो अपने सारे कर्मों में अपने को विलुप्त करके परमात्मा की कृपा ही देखता है। यह विचार कहना आसान है विश्वास के साथ धारण करना अत्यंत दुष्कर है। धर्म और समाज में विखंडन का यही कारण है।

तंबाकू सेवन निषेध

-डॉ. नवरत्न कपूर*

सिक्ख धर्म के प्रथम गुरु श्री गुरु नानक देव जी के वचन हैं :

भउ तेरा भाग खलड़ी मेरा चीतु ॥

(पन्ना ७२१)

अर्थात् हे प्रभु! आपका भय ही मेरे लिए आपकी कृपा रूपी भांग है, जिसे अपनी शरीर रूपी चमड़ी (खलड़ी) के भीतर विद्यमान चित्त (मन) अर्थात् हृदय से स्वीकार करता हूं।

इसी प्रकार के विचार भक्त कबीर जी ने प्रकट किए हैं :

कबीर भांग माछुली सुरा पानि जो जो प्रानी खांहि ॥

तीरथ बरत नेम कीए ते सभै रसातलि जाहि ॥

(पन्ना १३७७)

अर्थात् भांग, मछली तथा शराब रूपी जल का सेवन करने वाला व्यक्ति भले ही तीर्थाटन करे और नियमित रूप से उपवास रखे, इस सबके बावजूद उसका जीवन रसातल (नरक) के समान होता है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के प्रथम व्याख्याकार भाई गुरदास जी ने भी उपर्युक्त पदों के संदर्भ में मादक द्रव्यों के निषेध की पुष्टि करते हुए लिखा है :

अमली न अमल तजत जिउ धिकार कीए,
दोख दुख लोग बेद सुनत छकत है ॥३२३॥

(कबित्त सवैये)

अर्थात् नशेबाज़ (अमली) को भले ही कितना भी दुत्कारा जाए (धिकार कीए) और इन दूषित पदार्थों के सेवन से लोग बहुत-सी बीमारियों का कष्ट (दुख) भी झेलते हों, मगर धर्म-ग्रंथों में नशों के निषेध को पढ़ता हुआ भी मनुष्य नशीले पदार्थों के सेवन से बाज़ नहीं आता।

अन्य सिक्ख विद्वानों ने भी भारतीय समाज को इस प्रकार सचेत किया है, यथा :

मदुरा दहिती सात कुल, भंग दहे तन एक।
सौ कुल दहिता जगत जूठ, निंदिआ कहे अनेक ।
(श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, कृत भाई संतोख सिंघ)

अर्थात् शराबी अपनी सात कुलों की प्रतिष्ठा खो देता है। भांग-सेवन से भले ही इस लत वाले व्यक्ति के शरीर पर कुप्रभाव पड़े, फिर भी हुक्के के माध्यम से एक-दूसरे की जूठन पीने वाले की सौ पीढ़ियों तक तंबाकू के ज़हरीले तत्व पहुंचकर घातक बनते रहते हैं। इसके अतिरिक्त अनेक नशीले पदार्थ हैं जिनकी निंदा की जा सकती है।

हुका तिआग हरि गुन गावै, इछा भोजन हरि रसु पावै ॥
(श्री गुर शोभा कृत, भाई सैनापति, अध्याय ५)

अर्थात् जो मनुष्य हुक्का पीना छोड़कर भगवान का भजन करता है, उसकी सभी मनोकामनाएं भक्ति रूपी रस से पूर्ण हो जाती हैं।

शराब, तमाकू, जूआ, चोरी जारी
इन सो हेत न करे।

*बी-१८०१, प्लाट नं. १०६, तुलसी सागर हाऊसिंग सोसाइटी, सेक्टर-२८, नेरूल, नवी मुंबई-४००७०६,

संगति मंदी सभ परहरे। . . . ३२८॥

(बंसावलीनामा दसां पातशाहीआं का कृत)

अर्थात् शराब और तंबाकू-सेवन मनुष्य के लिए दुष्कर्म तथा कुसंगति का फल हैं। इनका परित्याग उसी तरह कर देना चाहिए, जैसे जूआ खेलने और चोरी करने जैसे अपराधों को त्यागा जाता है।

कुट्ठा हुक्का, चरस, तमाकू।
गांजा, टोपी, ताड़ी खाकू।३०।
इन की ओर न कबहू देखै।
रहितवंत जो सिंघ बिसेखै। . . . ३१।

(रहितनामा कृत भाई देसा सिंघ)

अर्थात् मांस (हलाल), हुक्का, चरस, तंबाकू, गांजे, सुल्फ़े (टोपी), ताड़ी (शराब, **Toddy**) और उसकी भट्ठी की राख (खाकू) की ओर सिक्ख धर्म के नियम-पालनकर्त्ता (रहितवान) को तो कभी नहीं झांकना चाहिए।

शहीद भाई रतन सिंघ (भंगू) ने तो बेटी के हत्यारे (कुड़ी-मार) की तरह शराबी (रमरई) और हुक्का पीने वाले (नड़ीमार) के साथ संबंध रखने से अपमानित (ख़्वार) होने की बात कही है, यथा :

कुड़ीमार रमरई नड़ीमार, जो इन मिले सु हुइ है ख़्वार ॥१३॥ (प्राचीन पंथ प्रकाश, पृष्ठ ७७)

तंबाकू सेवन के निषेध संबंधी प्रयास : अमेरिका में सन् १९९३ ई में किसी सड़क की पटरी अथवा पगडंडी पर कार चलाते समय अथवा घर के बाहर खड़े होकर सिगरेट पीने पर पाबंदी उस देश के २० प्रांतों और न्यूयॉर्क, लॉस एंजल्स, शिकागो, वाशिंगटन तथा कनाडा से सटी उत्तरी सीमा पर लगा दी गई थी। वहां यह भी नियम बनाया गया कि यदि कोई व्यक्ति अपने कार्यालय में कामकाज के दौरान सिगरेट पीता है तो उसे नौकरी से भी निकाला जा सकता है। इसमें पहल न्यूयॉर्क की नगरपालिका परिषद् के अध्यक्ष माइकल ब्लूमबर्ग ने की, जिसने शराबखानों, भोजनशालाओं तथा दफ्तरों में सिगरेट पीने पर ३० मार्च, २००३ को पाबंदी लगाने से पूर्व स्वयं सिगरेटनोशी छोड़ दी थी।[१] लंडन तथा इंग्लैंड के अन्य शहरों में सिगरेट पीने वाले को वहां के प्रशासनिक अधिकारियों से एक आज्ञा-पत्र लेना पड़ता है। उसे एक डॉक्टर द्वारा हस्ताक्षर करवाकर एक घोषणा-पत्र भी देना पड़ता है, तद्नंतर प्रशासनिक अधिकारी आवेदनकर्त्ता को उसकी फोटो लगा एक परिचय-पत्र जारी करता है, जिसके लिए धूम्रपानकर्त्ता को प्रतिवर्ष १० पौंड जमा करने पड़ते हैं। इस परिचय एवं आज्ञा-पत्र को देखकर ही सिगरेट विक्रेता ग्राहक को गिनती के सिगरेट बेचता है।[२]

जापान में २० वर्ष से कम उम्र का पुरुष अथवा स्त्री धूम्रपान नहीं कर सकता। जुलाई, २००८ से सिगरेट पीने वाले को सरकार की ओर से उसकी सही अवस्था के बारे में दिया गया परिचय-पत्र, जिसे जापानी भाषा में 'टेपसो' **(Tapso)** कहते हैं तथा गाड़ी चलाने का लाइसेंस सिगरेट विक्रेता को दिखाना पड़ता है। फिर भी उसे सिगरेट देने से पूर्व विक्रेता उंगलियों से चालित कैमरे से उसकी पहचान करता है। सरकार की ओर से ५,७०,००० तंबाकू पदार्थ बेचने वाले यंत्र **(Tabacco Vending Machines)** एत्दर्थ तैयार करवाए गए थे।[३]

सिक्ख धर्म के लोगों के लिए नशीले पदार्थों से परहेज़ करने की चली आ रही परंपरा से प्रेरित होकर कुछ भारतीय समाज-सेवी संस्थाओं ने भारत की स्वाधीनता के पश्चात इस ओर ध्यान देना आरंभ किया। ३१ मई, सन् २००८ को विश्व स्तर पर 'तंबाकू रहित दिवस' मनाने पर भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार

कल्याण विभाग की ओर से भारत की सभी भाषाओं के समाचार-पत्रों में सचित्र विज्ञापन छापकर तंबाकू सेवन की बुराइयों और बचाव के उपायों का विस्तार सहित ब्यौरा दिया गया। तत्संबंधी आंकड़ों में कमी अथवा ज्यादती प्रत्येक वर्ष ३१ मई वाले समाचार-पत्रों एवं मई मास वाली कई एक प्रमुख पत्रिकाओं में बताई जाने लगी है। इसी मंत्रालय की ओर से तंबाकू से बनाए जाने वाले वस्तु-निर्माताओं, वितरणकर्त्ताओं तथा परचूनियों के लिए भारत सरकार ने अपने राजपत्र में कुछ हिदायतें छपवाई हैं जो कि २७ मई, २०११ तथा २६ जुलाई, २०११ के अंकों में प्रकाशित हुई हैं। इनके अनुसार तंबाकू से बनाई गई वस्तु की डिबिया, थैली अथवा पुड़िया पर १ दिसंबर, २०११ तक इन्हें छापना आवश्यक ठहराया गया है। इसके अंतर्गत मनुष्य के शरीर पर प्रभाव डालने वाले तंबाकू के ज़हरीले तत्वों के कारण विभिन्न प्रकार के कैंसर रोगियों के चित्र दिखाना भी आवश्यक ठहराया गया है। तंबाकू की वस्तुएं बनाने वाले यदि इन हिदायतों का पालन नहीं करते तो पहली बार गलती करने पर उन्हें दो वर्ष तक कैद की सज़ा झेलने के अतिरिक्त ५ हज़ार रुपए दंड भरना पड़ेगा। दूसरी बार कोताही करने पर कैद की अवधि पांच वर्ष और जुर्माना दस हज़ार रुपए होगा। तंबाकू से बनी वस्तुओं के वितरकों तथा विक्रेताओं को पहली बार गलती करने पर एक साल की कैद की सज़ा झेलने के साथ ही एक हज़ार रुपए दंड-राशि भरनी पड़ेगी। इसके बाद जब भी कोई भूल हुई तो कैद की सज़ा दो वर्ष झेलनी पड़ेगी और तीन हज़ार रुपए जुर्माना भी भरना पड़ेगा। ये सभी बातें देश की विभिन्न भाषाओं के समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं में लोगों की जानकारी के लिए छपवाई गई हैं।

तंबाकू-सेवन रोकने के अन्य उपाय : चीन के बीजिंग नगर की 'दि रुयान वी८, (The Ruyan V8) नामक कंपनी ने 'इलेक्ट्रॉनिक सिगरेट' (E- Cigrattes) की मशीन तैयार की है। इसका प्रयोग तंबाकू पदार्थों का परित्याग करने के इच्छुक चीन तथा अमेरिका के लोगों द्वारा होने लगा है। इस यंत्र को तैयार करने वालों का दावा है कि इस यंत्र को अपनाने से घातक सिद्ध होने वाली कैंसर की बीमारी पैदा करने वाले रसायनों तथा गैसों से मुक्ति पाई जा सकती है।[४]

सन् २००९ में अमेरिका के भोजन तथा मादक द्रव्य सेवन प्रशासनिक विभाग ने बैट्री की शक्ति से चलने वाली नली रूपी ई-सिगरेट का परीक्षण किया और परीक्षणकर्त्ता डॉ इलाजाबेथ पॉट्ट ने बताया कि इसके सेवन से सांस की नली में अत्यंत उत्तेजना रूपी विकार पैदा हो जाता है। अत: कनाडा, ऑस्ट्रेलिया तथा अमेरिका के कुछ प्रांतों की सरकारों ने इसके प्रयोग पर पाबंदी लगा दी है।[५]

साइबेरिया के डॉक्टरों ने तंबाकू तथा अन्य मादक द्रव्यों का प्रयोग करने वालों को मनोवैज्ञानिक ढंग से समझाया। फिर भी बहुत से लोगों ने अपने कुव्यसनों को नहीं छोड़ा। अब साइबेरिया के मनोवैज्ञानिकों के सुझाव पर व्यसनी लोगों को बैंत से पीटा जाने लगा है। इससे उनके दिमाग में भरे हुए ज़हरीले तत्व शरीर से बाहर आने लगते हैं और मरीज़ की चमड़ी से शांत व्यक्ति का भाव झलकने लगता है। (The acute pain of the corporal punishment they dish out stimulates the brain to release endorphins into the body making patients feel happier in their own skins.) मादक द्रव्यों के सेवन से रोगी व्यक्ति

को, परामर्शदाता डॉक्टर को बैंतों की मार सहने के पश्चात् ६० पौंड शुल्क देना पड़ता है। ये सभी तथ्य लंडन से प्रकाशित होने वाले 'डेली मेल' नामक समाचार-पत्र ने 'दि साइबेरियन टाइम्स' नामक समाचार-पत्र के आधार पर उद्धृत किए हैं।[६]

अमेरिका के न्यूयॉर्क नगर के राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्थानों में मादक द्रव्यों के सेवन-कर्त्ताओं को होने वाली हानियों पर शोधकर्त्ता डॉ. डेविड इब्राहिम ने कहा है कि सिगरेट पीने वालों की उसी प्रकार इच्छा होती है, जैसा कि भूख लगने पर प्रत्येक व्यक्ति को भोजन करने की तथा प्यासे को पानी पीने की। अमेरिका में इस बुरी आदत को छुड़ाने वाली 'चैंटिक्स' नामक एक दवा बनाई गई है जिसे अमेरिका की सरकार ने बेचे जाने की स्वीकृति दे दी है।[७] उसी देश के नोटि्टंघम विश्वविद्यालय के (डॉक्टर भांग के पत्तों के रस से एक औषधि बनाने पर शोध-कार्य कर रहे हैं जिससे तंबाकू की लत से छुटकारा पाया जा सके।[८]

कुछ आसान उपाय : तंबाकू सेवन से छुटकारा पाने के लिए कुछ भारतीय डॉक्टरों ने अपने लेखों द्वारा कई एक सुझाव दिए हैं, यथा :

१. धूम्रपान की प्रबल इच्छा होने पर कोई स्वादिष्ट मीठी गोली, बताशे अथवा गुड़ या खांड से बनी टिकिया, दाल-चीनी का टुकड़ा, लौंग अथवा काला लिकोराइस चूसें और चबाएं।

२. यदि आप अधिक भारी शरीर वाले नहीं हैं तो मिश्री चूसें।

३. संतरे जैसा कोई फल, जिसे छीलने में समय लगता है, खाइए अथवा अन्य किसी पुष्टिकारक पदार्थ का सेवन करें, जैसे फलों से मिश्रित दही, घी अथवा सरसों के तेल में तले हुए आलू के टुकड़े, जो दांतों से चबाते समय कर-कर की आवाज़ करते हों, चबाएं।

४. अत्यधिक मात्रा में पानी अथवा कोई स्वादिष्ट तरल पदार्थ, जैसे शिकंजवी, शर्बत या गन्ने का रस पी लेना चाहिए।

५. जब सिगरेट अथवा बीड़ी या किसी अन्य नशीले पदार्थ के सेवन की तीव्र इच्छा हो तो लंबी सैर के लिए निकल जाइए। यदि घर में हैं अथवा अपने कार्य-स्थल पर तो लंबी सांस खींचिए तथा छोड़िए। लंबी सांस खींचने और छोड़ने से आपको ऐसा आभास होगा कि आप पहले वाली जगह से किसी और जगह पर आ गए हैं। फिर मन को शिथिल करके तंबाकू के सेवन से होने वाले कुप्रभाव के बारे में सोचिए।

६. अपनी कलाई पर रबड़ का भुजाबंद पहनिए। जब आपको सिगरेट या बीड़ी पीने की तीव्र इच्छा अनुभव हो तो भुजाबंद को ज़ोर से ऊपर की ओर खींचिए और फिर झटके के साथ कलाई की ओर छोड़ दें। इससे आपको जो दर्द महसूस होगा, उससे आपको धूम्रपान करने से होने वाले हानिकारक प्रभावों का ज्ञान होता जाएगा। इस प्रकार धीरे-धीरे आपके मन की उथल-पुथल मिट जाएगी और आप धूम्रपान से हटते जाएंगे।

७. कहानी की पुस्तकों अथवा उपन्यास आदि पढ़ने का शौक बनाएं; शब्द-पहेली का खेल खेलिए।

८. धूम्रपान से दूर रहने वाले अपने मित्रों, सहयोगियों अथवा बंधु-बांधवों से पूछिए कि जब आप सिगरेट या बीड़ी पीते हैं तो उसके धुएं का उन पर कैसे कुप्रभाव पड़ता है? धूम्रपान निषेध में कार्यरत समाज-सेवी संस्थाओं अथवा विश्व स्तर पर ऐसे पुणीत कार्यों के लिए वित्तीय सहायता देने वाली 'ब्लूमबर्ग ग्लोबल पहल' नामक संस्था (धूम्रपान का परित्याग करने वाले

न्यूयॉर्क के नगर पालिका अध्यक्ष के नाम से जुड़ी हुई) के परामर्शदाताओं से सूझबूझ प्राप्त करनी चाहिए। गोआ और महाराष्ट्र में ऐसे परामर्शदाता औषधालयों की संख्या अगस्त, सन् २००८ में १८ थी किंतु अब 'ब्लूमबर्ग विश्वस्तरीय पहल' से वित्तीय सहायता मिलने पर इन औषधालयों की संख्या एक सौ कर दी गई है। ९. व्यायाम करने की आदत अथवा पीपरमिंट मिश्रित चाय, सिगरेट अथवा बीड़ी फूंकने की लालसा होने पर पीने से भी यह बुरी आदत धीरे-धीरे घटने लगती है।[९]

परामर्शदाता केंद्रों में कार्यरत चिकित्सक तथा अवैतनिक कार्यकर्ता ब्लूमबर्ग के अतिरिक्त अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति ईजनहॉवर का उदाहरण भी पेश करते हैं जिसने दिल का दौरा पड़ने पर धूम्रपान का त्याग कर दिया था।[१०]

३१ मई, २००९ को मनाए गए 'विश्व तंबाकू निषेध दिवस' के अवसर पर संयुक्त राष्ट्र संघ ने संसार भर में तंबाकू वाली चीज़ें बनाने वाली कंपनियों को आदेश दिया था कि वे अपने सभी उत्पादों की डिबियों, पुड़ियों तथा थैलियों पर स्पष्ट रूप से ये हिदायतें छापें कि तंबाकू सेवन से क्या-क्या हानियां होती हैं। इसके अतिरिक्त उन पर कैंसर के रोगी का चित्र भी अवश्य प्रकाशित करें। 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' के तंबाकू कार्य योजना सम्मेलन के अनुच्छेद-११ के अधीन हस्ताक्षर करने वाले सभी देशों के तंबाकू उत्पाद के कम से कम ३० प्रतिशत भाग पर सचित्र चेतावनी छापने की व्यवस्था की गई है। यद्यपि भारत सरकार ने अपने देश की कंपनियों को यह आदेश जारी किया, फिर भी बहुत-सी कंपनियों ने तत्संबंधी कार्यवाही करने की बजाए न्यायालय की शरण ली। भारत के सर्वोच्च न्यायालय के निर्देश के पश्चात् केंद्रीय सरकार द्वारा २८ नवंबर, २००८ ई को जारी की गई अधिसूचना ३१ मई, सन् २००९ से प्रभावी हो गई है। इस अधिसूचना के अनुसार प्रत्येक डिबिया, पुड़िया अथवा थैली के ४० प्रतिशत भाग पर चेतावनी छापी जाने लगी है। इस अधिनियम के अधीन तंबाकू उत्पादों में सिगरेट, सिगार, बीड़ी, पान-मसाला तथा अन्य कोई भी चबाने वाला पदार्थ, जिसके निर्माण में तंबाकू का ज़रा-सा भी भाग मौजूद हो, शामिल किया गया है। गुटखा एवं तंबाकू की मात्रा रखने वाले दंत मंजन भी इसमें शामिल हैं।[११]

सिक्ख धर्म में आरंभ से ही तंबाकू सेवन से बचने के लिए महापुरुष बताते रहे हैं। उसी की देखा-देखी और पिछले दशक में इसके प्रति जागृति देखकर विभिन्न हिंदू संस्थाएं भी इस ओर पग उठाने लगी हैं। मुंबई के टाटा मेमोरियल अस्पताल के डॉ. सुरेन्द्र शास्त्री के अनुसार महाराष्ट्र में मनाए जाने वाले गणेशोत्सव, नवरात्र तथा मुंबई उत्सव के समय ऐसे धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजन के संचालकों, रेलवे विभाग, महाराष्ट्र के भोजन तथा मादक द्रव्य विभाग एवं भोजनालयों की सहायता से तंबाकू सेवन के कुप्रभावों के बारे में संदेश चित्रों, विज्ञापनों तथा मुखौटों द्वारा दिया जाया करेगा। ऐसा प्रयास मुंबई में तंबाकू निषेध संबंधी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, जो कि ८ मार्च से १२ मार्च, २००९ तक आयोजित किया गया था, एतदर्थ जागृति फैलाने में अत्यंत सहायक हुआ।[१२] गुरदासपुर (पंजाब) की रेड क्रॉस सोसायटी ने नशीले पदार्थों के परित्याग और पुनर्वास-केंद्र की ओर से सन् २०१३ का बहुरंगी पंचांग (कैलंडर) जारी किया था। इसके माध्यम से लोगों को मादक द्रव्यों के कुप्रभावों के विषय में जानकारी

(शेष पृष्ठ ४४ पर)

मादक पदार्थ : अमानवता के प्रतीक

-डॉ. मधु बाला*

आधुनिक युग में मादक पदार्थों का सेवन दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। इससे न केवल शारीरिक दृष्टि से अपितु मानसिक दृष्टि से भी मनुष्य पल-पल दुर्बल एवं रोगी बनता जा रहा है। जीवन की अनिवार्यता हेतु खाई जाने वाली 'रोटी' की अपेक्षा मादक पदार्थ बहुत अधिक धन देकर प्राप्त किया जाता है। जीवन-रक्षक साधनों की अपेक्षा आज धन का अधिकांश भाग जीवन-भक्षक मादक पदार्थों एवं साधनों पर खर्च कर दिया जाता है, जिससे मानवता का नुकसान हो रहा है। विचारणीय तथ्य यह है कि आज जब हम सर्वे करते हैं कि नशा करने वाले मनुष्यों की संख्या इतने प्रतिशत है, पिछले वर्ष से इतने प्रतिशत बढ़ोत्तरी हुई है, तब क्या हमने यह सोचा कि मादक पदार्थों का सेवन करने वालों को रोकने के लिए हमने क्या-क्या किया ? इसकी रोकथाम हेतु केवल भाषण एवं आलेख ही पर्याप्त नहीं हैं, व्यवहारिक पक्ष से ज्यादा करने की ज़रूरत है। परिपक्व बुद्धि वालों को कुमार्ग से रोकते हुए कोशिश यही होनी चाहिए कि बाल्यावस्था से ही बच्चों को ऐसी शिक्षा दी जानी चाहिए कि उसे क्या करना है और क्या नहीं करना है। जैसी बालक की आधारशिला होती है वैसा ही उसका चरित्र बनता है। बाल्यावस्था में लगभग सभी माता-पिता बच्चों को बुराइयों से इतना दूर रखते हैं कि उनका नाम भी बच्चों के सामने नहीं लेते। वास्तविकता यह है कि बच्चों को इसी संसार में ही रहना है। आज नहीं तो कल उन्हें मालूम होगा ही, इसलिए बेहतर यही है कि बच्चों को माता-पिता अपने ढंग से समझाएं, बुराइयों के विषय में विस्तारपूर्वक बताएं। अच्छे आचरण की नींव माता-पिता ही रखते हैं। जिस बच्चे के आचरण की नींव कमज़ोर होती है, समाज में फैली बुराइयां उस पर हावी हो जाती हैं।

मानवता, चरित्र की महानता, आचरण की पवित्रता ऐसी विशेषताएं हैं जो मनुष्य को साधारण से विशेष बनाती हैं। भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने कहा था-- "शरीर में चरित्र ही मुख्य वस्तु है।" इब्राहिम लिंकन से जब किसी ने पूछा कि महानता का सर्वप्रधान लक्षण क्या है, तो उन्होंने झट से कहा-- "सच्चरित्रता।" आधुनिकता की दौड़ में आज मानव चरित्र को भूलता जा रहा है। मादकता से अभिप्राय केवल नशा करने वाले पदार्थों के सेवन से नहीं है, अपितु किसी भी बुराई को अपना लेने का व्यसन ही मादकता कहलाता है। चारों तरफ कलहपूर्ण वातावरण का सृजन हो रहा है।

मादक पदार्थों का सेवन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, रोगों का जन्म-दाता है, धन का नाशकर्ता है, भावी पीढ़ियों के लिए संताप है, कुसमाज का सृजक है, अव्यवस्था का मूल कारण है, अमानवता का प्रतीक है। नशा मनुष्य को अमनुष्य बना रहा है। आज की शिक्षा मनुष्य की आजीविका का साधन-मात्र तो है परंतु इसके कारण मनुष्य स्वयं मशीन बना हुआ है, धड़ाधड़ पैसा कमा रहा है। कई बार सोच-विचार की कमी के कारण मनुष्य कमाए गए धन को नशों की खरीद एवं सेवन में उजाड़ने लगता है। यदि धन पर्याप्त मात्रा से

*आई-१०९, गली नं: ५, मजीठीआ इन्कलेव, पटियाला-१४७००५, फोन ९९१४१-९०७२४

ज्यादा हो रहा हो तो उसे परोपकारी कार्यों में लगाकर जन-कल्याण किया जाए।

रसों का ज्ञान जीभ में है पेट में नहीं। पेट में जाकर सभी रस एक समान हो जाते हैं। जो भोजन स्वास्थ्यवर्धक हो, मन को शुद्ध रखने वाला हो वही भोजन सार्थक है। उचित ही कहा गया है कि "जैसा खाओगे अन्न, वैसा बनेगा मन।" जैसे स्वच्छ वस्त्र तन को शोभित करते हैं वैसे ही स्वच्छ भोजन एवं पौष्टिक खाद्य पदार्थ जीवनदायक होते हैं। मादक पदार्थ शरीर में विभिन्न रोगों का कारण बनते हैं तथा अमानवीय कृत्यों के जन्म-दाता होते हैं। अमानवीय भक्षण से व्यक्ति के हृदय से दया-धर्म का विनाश हो जाता है। उसके मन में उत्पन्न होने वाले विकार मानवता का हनन करने वाले होते हैं।

शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं नैतिक किसी भी दृष्टि से मादक पदार्थ ग्रहण करने योग्य नहीं हैं। ये जहां निज़ की हानि करने वाले होते हैं वहीं भावी पीढ़ी के लिए भी हानिकारक सिद्ध होते हैं। आत्मा के विकास के लिए त्याग, नम्रता, आदर एवं संतोष अनिवार्य गुण हैं, लेकिन मादक पदार्थों के प्रभाव के कारण व्यक्ति अपनी सोचने-समझने की शक्ति समाप्त कर बैठता है। अविवेक के कारण द्वेष, ईर्ष्या, मद, मोह, आलस्य, विलासिता, सुखासक्ति से युक्त होकर, अनेक प्रकार के दोषों को स्वयं में एकत्रित करता हुआ मनुष्य अनेक अपराधों को जन्म देता है। मनुष्य के विकास के लिए, मानवता के लिए सभी प्रकार के अवगुणों एवं दुर्बलताओं की निवृत्ति अति आवश्यक है। मानवता के विकास हेतु मादक द्रव्यों का न केवल त्याग करना चाहिए अपितु अन्य व्यक्तियों को भी इसका त्याग करने को प्रेरित करना चाहिए।

तंबाकू सेवन निषेध

(पृष्ठ ४२ का शेष)

प्राप्त हो रही है। यह पंचांग पुलिस थानों, सरकारी कार्यालयों तथा समाज-सेवी संस्थाओं को मुफ्त बांटा गया है।[१३]

भारत सरकार ने अप्रैल, २००३ में सिगरेट तथा अन्य तंबाकू उत्पाद संबंधी जो अधिनियम भारतीय संसद में पारित करके अपने देश में लागू किया था, उसकी कुछेक धाराओं को तंबाकू निषेध अधिनियम की रूप-रेखा तैयार करने वाली समिति के सुझाव पर विश्व स्वास्थ्य सम्मेलन ने मई, २००३ में अपना लिया था। उसी के आधार पर अमेरिका की कैंसर सोसायटी ने भारत के केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय को लूथर टेरी तंबाकू नियंत्रण पुरस्कार प्रदान किया है।

संदर्भ सूची :

***1.** The Times of India, Mumbai & Jodhpur; March 30, 2008*

2. Ibid; February 26, 2008.

3. Ibid; May 13, 2008

4. Ibid; March 1, 2009.

5. Bombay Times, Mumbai; January 29, 2013 (E-cigarattes can cause more harm then smoking-- Caption)

6. Mumbai Mirror, January 9, 2013.

7. The Times of India, Mumbai, May 12, 2008 (Taming that overwhelming urge to Smoke-- Caption)

8. Bombay Times, Mumbai; March 10, 2008 (Connalies based medicines can help kiek the butt-- Caption).

9-10. Dr. Parul R. Seth, Overcome that urge to Smoke, Bombay Times, Mumbai; July 21, 2008

११. राजस्थान पत्रिका, जोधपुर, ३१ मई, २००८

१२. The Times of India, Mumbai; August 22, 2008.

१३. आशियाना (दैनिक पंजाबी समाचार-पत्र), पटियाला; ९ जनवरी, २०१३

गुरबाणी चिंतनधारा : ८०

सुखमनी साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ मनजीत कौर**

सलोकु ॥ रूपु न रेख न रंगु किछु त्रिहु गुण ते प्रभ भिंन ॥
तिसहि बुझाए नानका जिसु होवै सुप्रसंन ॥१॥

सोलहवीं असटपदी के सलोक में गुरु पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने पारब्रह्म परमेश्वर को माया के त्रिगुणी प्रभाव से रहित बताते हुए उसे रूप, रंग, आकार से रहित माना है लेकिन साथ ही यह भी स्पष्ट कर दिया है कि वह अच्छी सूझ उसे ही बख़्शता है जिस पर उसकी विशेष कृपा-दृष्टि होती है।

गुरु पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि परमेश्वर का कोई रूप नहीं, न ही कोई रंग है न ही कोई चक्र-चिन्ह आदि है। परमेश्वर तो माया के तीन गुण (रजो गुण, तमो गुण तथा सतो गुण) से भी परे है अर्थात् माया प्रभु की रचना है और उसका कोई भी रूप प्रभु को प्रभावित नहीं कर सकता। अत: प्रभु माया के तीनों गुणों से बेदाग है। गुरु पातशाह स्पष्ट करते हैं कि प्रभु अपनी सूझ उसे ही बख़्शता है जिस पर वह प्रसन्न होता है।

उपरोक्त चिंतनानुसार दुनिया का प्रत्येक जीव माया के प्रभाव से ग्रसित है। गुरबाणी में तो यहां तक स्पष्ट किया गया है कि बड़े-बड़े राजाओं को भी माया ने नकेल डाल रखी है। तीनों लोकों को वश में करने वाली माया के प्रभाव से तो बड़े-बड़े विद्वान, देवता भी नहीं बच सके :

सोहागनि भवन त्रै लीआ ॥
दस अठ पुराण तीरथ रस कीआ ॥
ब्रहमा बिसनु महेसर बेधे ॥
बडे भूपति राजे है छेधे ॥ (पन्ना ८७२)

वैसे दुनिया की प्रत्येक वस्तु, प्राणी का कोई न कोई आकार, रंग, रूप, वर्ण है, केवल परमेश्वर ही इन सबसे रहित है। इस सबकी समझ भी प्रभु जिसे खुद बख़्शता है उसे ही आती है अन्यथा कोई अपने ज्ञान अथवा बुद्धि के बल पर तो यह भी समझने के लायक नहीं हो सकता।

असटपदी ॥
अबिनासी प्रभु मन महि राखु ॥
मानुख की तू प्रीति तिआगु ॥
तिस ते परै नाही किछु कोइ ॥
सरब निरंतरि एको सोइ ॥
आपे बीना आपे दाना ॥
गहिर गंभीरु गहीरु सुजाना ॥
पारब्रहम परमेसुर गोबिंद ॥
क्रिपा निधान दइआल बखसंद ॥
साध तेरे की चरनी पाउ ॥
नानक कै मनि इहु अनराउ ॥१॥
(पन्ना २८३)

सोलहवीं असटपदी की पहली पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने परिपूर्ण परमेश्वर के अनंत गुणों का गायन करते हुए जीव को उसी सर्वकला-समर्थ प्रभु को हृदय में बसाने और जगत की झूठी प्रीति को त्यागने हेतु प्रेरित किया है।

***२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९९२९७-६२५२३*

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि हे जीव! अविनाशी अर्थात् विनाश रहित, सदा कायम रहने वाले परमेश्वर को दिल से याद (स्मरण) कर तथा मनुष्य का मोह-प्यार छोड़ दे। समस्त जीवों के अंदर परिपूर्ण परमेश्वर व्यापक है। उससे बाहर कोई भी नहीं है अर्थात् अकाल पुरख परमेश्वर एक रस सर्वत्र और सब में व्यापक है। वह स्वयं ही घट-घट की जानने वाला अन्तर्यामी है और सबको दातें बख़्शने वाला दातार पिता है। वह अत्यंत गम्भीर प्रवृत्ति वाला है। वह अगम्य (जहां तक इन्द्रियों की पहुंच नहीं) है। वह अथाह (जिसकी गहराई को मापने का कोई पैमाना नहीं) है। वह सुजान पुरुष है अर्थात् अत्यंत बुद्धिमान है। गुरु पातशाह अरदास करते हैं कि हे पारब्रह्म परमेश्वर! निर्गुण निरंकार! कृपा के सागर! दयालु पिता! बख़्शिशों के खज़ाने! मेरे मन में यह चाव है कि मैं तुम्हारे साधु-जनों के चरणों से लग जाऊं।

कण-कण में व्यापक परमेश्वर के अनंत गुण हैं। वह परम दयालु है, अनंत बख़्शिशों का मालिक है। उसके दर पर किसी चीज़ की कोई कमी नहीं है। यहां गुरु साहिब ने कलयुगी जीवों को यही समझाया है कि उनका नाम जपने वाले साधु-जनों के चरणों से प्रीति लगानी चाहिए क्योंकि इसी में ही सच्चा सुख समाहित है। साथ ही संसार की झूठी प्रीति को छोड़कर सच्ची प्रीति से जोड़ने हेतु प्रेरित किया गया है। नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब की पावन बाणी भी यही भाव दृढ़ करवाती है :

जगत मै झूठी देखी प्रीति ॥
अपने ही सुख सिउ सभ लागे किआ दारा किआ मीत ॥ (पन्ना ५३६)

गुरबाणी आशयानुसार संसार की कोई वस्तु अथवा कोई सम्बंध सदैव कायम रहने वाला नहीं है, इसलिए सदा कायम रहने वाले परमेश्वर से ही सच्ची प्रीति लगानी चाहिए।

मनसा पूरन सरना जोग ॥
जो करि पाइआ सोई होगु ॥
हरन भरन जा का नेत्र फोरु ॥
तिस का मंत्रु न जानै होरु ॥
अनद रूप मंगल सद जा कै ॥
सरब थोक सुनीअहि घरि ता कै ॥
राज महि राजु जोग महि जोगी ॥
तप महि तपीसरु ग्रिहसत महि भोगी ॥
धिआइ धिआइ भगतह सुखु पाइआ ॥
नानक तिसु पुरख का किनै अंतु न पाइआ ॥२॥

सोलहवीं असटपदी की दूसरी पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह जी ने परमेश्वर को अनंत-बेअंत मानते हुए हर रूप में प्रभु की व्यापकता का ज़िक्र किया है। उसका अंत तो कोई नहीं पा सकता लेकिन उसके भक्त-जन सदैव उसका सिमरन करके आनंद की अनुभूति करते रहते हैं।

गुरु पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी के चिंतनानुसार प्रभु जीवों की समस्त अभिलाषाओं की पूर्ति करने एवं शरणागत की सहायता करने में पूर्णतया समर्थ है। वही कुछ होता है जो परवरदिगार ने निश्चित किया है। प्रभु द्वारा आंख झपकने जितने समय अर्थात् अत्यंत सूक्ष्म समय में सृष्टि की रचना एवं विनाश संभव है। कहने से अभिप्राय, ईश्वर को संसार को बनाने एवं मिटाने में देर नहीं लगती। उसके गूढ़ रहस्यों को कोई नहीं जानता। परमेश्वर के घर में सदैव आनंद एवं खुशियां हैं। उसका घर समस्त पदार्थों से भरपूर है। उसके खज़ाने में समस्त पदार्थ मौजूद हैं। वहां किसी भी चीज़ की कोई कमी नहीं है, ऐसा सुनने में आया है। प्रभु आप ही राजाओं में राजा है, योगियों में योगी है, तपस्वियों में तपस्वी है तथा गृहस्थियों में

गृहस्थी है। ऐसे प्रभु-मालिक की भक्त-जनों ने आराधना करके अर्थात् उसका सिमरन करके आनंद की प्राप्ति की है। किसी भी जीव ने उस मालिक का अंत नहीं पाया।

परमेश्वर शरण में आए प्रत्येक जीव की हर ख्वाहिश पूर्ण करने वाला है। उसके घर में किसी चीज़ की कोई भी कमी नहीं है। गुरबाणी में अन्यत्र भी समझाया गया है कि उसके घर में सब कुछ है। उसे जो भाता है उसे ही वह सब कुछ बख़्शता है :

साचे साहिबा किआ नाही घरि तेरै ॥
घरि त तेरै सभु किछु है जिसु देहि सु पावए ॥
(पन्ना ९१७)

उपरोक्त पउड़ी के आशयानुसार भाता उसे वही है जो उसकी शरण में आता है। जो उसकी शरण में होता है वह पूर्ण श्रद्धा से उसी की आराधना करता है और जो उसकी आराधना करता है उसे ही आत्मिक सुख की प्राप्ति होती है जिसके फलस्वरूप वह आनंदमग्न रहता है।

जा की लीला की मिति नाहि ॥
सगल देव हारे अवगाहि ॥
पिता का जनमु कि जानै पूतु ॥
सगल परोई अपुनै सूति ॥
सुमति गिआनु धिआनु जिन देइ ॥
जन दास नामु धिआवहि सेइ ॥
तिहु गुण महि जा कउ भरमाए ॥
जनमि मरै फिरि आवै जाए ॥
ऊच नीच तिस के असथान ॥
जैसा जनावै तैसा नानक जान ॥३॥

सोलहवीं असटपदी की तीसरी पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह ने प्रभु की आश्चर्यजनक रचना को भी उसी की तरह अनंत-बेअंत कथन किया है और स्पष्ट किया है कि इसका अंत पाने में देवता भी असमर्थ हैं, फिर साधारण मनुष्य की तो हैसियत ही क्या है! आगे गुरुदेव ने यह समझाया है कि जिन्हें प्रभु अपने दर-घर से सिमरन की दात बख़्शता है, ऊंची और पवित्र समझ बख़्शता है उन्हें ही माया के प्रभाव से बचाकर रखता है। प्रभु सर्वव्यापी है। वह जीव को जैसी समझ बख़्शता है जीव वैसा ही बन जाता है।

श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि परमेश्वर की जगत-लीला (इस संसार की विचित्र रचना) का अंदाज़ा कोई भी नहीं लगा सकता। उसके इस आश्चर्यजनक खेल का भेद नहीं पाया जा सकता। देवता भी खोज-खोजकर थक गए हैं। पिता के जन्म के बारे में पुत्र नहीं जान सकता। उस मालिक ने सारी जगत-रचना को अपने हुक्म रूपी डोरी (धागे) में पिरोया हुआ है (जैसे माला के मोती धागे में पिरोये होते हैं)। जिन्हें अकाल पुरख सद्‌बुद्धि और ज्ञान-ध्यान (एकाग्रचित्तता) बख़्शता है वही उसके नाम का जाप (सिमरन) करते हैं। जिन्हें मालिक माया के त्रिगुणी फंदे में फंसा देता है अर्थात् रजोगुणी, तमोगणी, सतोगुणी माया के तीनों रूपों में भ्रमित कर देता है ऐसा जीव माया के बंधनों में ग्रसित हुआ बार-बार जन्म लेता है और मरता है अर्थात् आवागमन में ही भटकता रहता है। सद्‌बुद्धि वाले विवेकी-जन और माया-ग्रसित विकारी लोग सभी में प्रभु आप बसता है अर्थात् उसके हुक्म के बिना कुछ भी घटित नहीं हो रहा। प्रभु जिस जीव को जैसी बुद्धि बख़्शता है वह वैसी ही समझ वाला हो जाता है।

उपरोक्त पउड़ी में उस सृजनहार की रहस्यमयी रचना एवं सर्वव्यापकता का संकेत करते हुए बड़े सुंदर दुनियावी उदाहरण से जीव को समझाने का यत्न किया गया है कि देवता

भी परमेश्वर का अंत पाने में असमर्थ हैं, तो साधारण जीव कैसे उसका अंत पाने में समर्थ हो सकता है! बड़ा विलक्षण उदाहरण है कि जैसे पिता के जन्म के बारे में पुत्र (संतान) नहीं जान सकता। उसे पिता के जन्म के बारे में जैसा बताया जाता है वह वैसा ही मान लेता है। ठीक उसी प्रकार हमारे बुजुर्ग तथा धर्म-ग्रंथ ईश्वर के बारे में जो कहते हैं जीव वैसा ही मान लेते हैं। आज तक यह भेद कोई नहीं जान सका कि वह कितना बड़ा है, उसका विस्तार कितना है। उसने जिसको जितना कहने की सामर्थ्य बख़्शी वह (बिचारा) उतना कहने में ही समर्थ हो सका। प्रभु को पूर्ण रूप में न कोई बयान कर सका है और न ही कर सकेगा। श्री गुरु नानक देव जी ने पावन बाणी जपु जी साहिब में भी परमेश्वर की अंतता का वर्णन करते हुए यह स्पष्ट किया है कि हे प्रभु! तुम्हारा अंत पाना दूर की बात है। मैं तो आप पर से एक बार भी न्यौछावर होने योग्य नहीं :

कीता पसाउ एको कवाउ ॥
तिस ते होए लख दरीआउ ॥
कुदरति कवण कहा वीचारु ॥
वारिआ न जावा एक वार ॥
जो तुधु भावै साई भली कार ॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥ (पन्ना ३)

एक अन्य रहस्य जो सोलहवीं असटपदी की तीसरी पउड़ी में समझाया गया है, वो यह कि परमेश्वर के हुक्म में ही कोई सूझवान और विवेकी है और नेक कार्यों में निरंतर मग्न है। इसके विपरीत कोई मोह-माया में उलझा हुआ निरंतर अधोगति को प्राप्त हो रहा है। यह सब उस निरंकार के आदेशानुसार ही है :

सभु जीउ पिंडु दीआ तुधु आपे तुधु आपे कारै लाइआ ॥
जेहा तूं हुकमु करहि तेहे को करम कमावै जेहा तुधु धुरि लिखि पाइआ ॥२॥ (पन्ना ७३६)

गुरबाणी आशयानुसार जीव को किसी के अच्छे-बुरे कर्मों की विवेचना का कोई अधिकार नहीं है क्योंकि सब कुछ उस मालिक की रज़ा में हो रहा है। उसके हुक्म के बाहर कुछ भी तो मुमकिन नहीं। वास्तव में प्रभु जिस जीव को जिस तरह की तड़प लगाता है फिर उसे उसी तरह तृप्त करता है। सोरठि राग में उच्चरित पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी का एक बहुत ही प्यारा शबद इस तथ्य को उजागर करता उल्लेखनीय है कि किस प्रकार राज्य के कार्यों में राजा उलझा हुआ है। लोभी लालच में, सेवक सेवा में, नशेबाज़ नशे में, ज़मीदार ज़मीन में, बच्चा दूध में मस्त है। संत-जन प्रभु-प्रेम में मग्न, विद्वान विद्या में तल्लीन रहते हैं। नेत्र विभिन्न पदार्थों में, ज़ीभ स्वाद में लीन, प्रभु का सेवक ईश्वर-स्तुति में लीन। सचमुच प्रभु जैसी भूख लगवाता है, वैसी का पूरक भी वो आप ही है :

राजन महि राजा उरझाइओ मानन महि अभिमानी ॥ . . .
अमलन सिउ अमली लपटाइओ भूमन भूमि पिआरी ॥ . . .
जैसे रसना सादि लुभानी तिउ हरि जन हरि गुण गावहि ॥३॥
जैसी भूख तैसी का पूरकु सगल घटा का सुआमी ॥
नानक पिआस लगी दरसन की प्रभु मिलिआ अंतरजामी ॥४॥ (पन्ना ६१३)

वस्तुतः भाग्यशाली हैं वे जीव जिन्हें प्यारा प्रभु नाम की भूख लगवाता है, फिर अपना सिमरन बख़्शकर निहाल कर देता है।

नाना रूप नाना जा के रंग ॥
नाना भेख करहि इक रंग ॥

नाना बिधि कीनो बिसथारु ॥
प्रभु अबिनासी एकंकारु ॥
नाना चलित करे खिन माहि ॥
पूरि रहिओ पूरनु सभ ठाइ ॥
नाना बिधि करि बनत बनाई ॥
अपनी कीमति आपे पाई ॥
सभ घट तिस के सभ तिस के ठाउ ॥
जपि जपि जीवै नानक हरि नाउ ॥४॥

सोलहवीं असटपदी की चौथी पउड़ी में श्री गुरु अरजन देव जी ने परमेश्वर के निर्गुण एवं सगुण स्वरूप की सुंदर विवेचना की है। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि परमेश्वर के अनेक रूप (आकार) और कई रंग हैं। वह अनेक वेश धारण करता है और फिर एक रूप हो जाता है। उस मालिक ने इस जगत-रचना को विविध रूप दिए हुए हैं अर्थात् अनेक तरह से इस संसार की सृजना की हुई है। वह अविनाशी है तथा एक रस व्यापक है। वह सर्वत्र समाया हुआ है। प्रभु क्षण भर में अनेक कौतुक कर देता है। उसने अनेक युक्तियों (तरीकों) से सृष्टि की रचना की है। अपनी कीमत वह आप ही जान अथवा आंक सकता है। उसकी महिमा अकथनीय है। समस्त शरीर तथा स्थान (रहने के ठिकाने) उसी प्रभु के ही हैं। अंतिम पंक्ति में गुरुदेव स्पष्ट करते हैं कि मेरे तो जीवन का आधार ही प्रभु का नाम है।

उपरोक्त पउड़ी अनेकता में एकता के भाव भी दृढ़ करवाती है। परमेश्वर समस्त रूपों-रंगों में प्रस्तुत होते हुए भी एक ही रूप-रंग में समा जाता है। उसके निर्गुण और सगुण स्वरूप की व्याख्या गुरबाणी में अनेक बार हुई है। श्री गुरु नानक पातशाह ने इसका विलक्षण उदाहरण पेश किया है कि समस्त जीवों में सगुण रूप में व्यापक होने के कारण हज़ारों उसकी आंखें हैं, पर निर्गुण रूप में प्रभु की कोई आंख नहीं। हजारों आकृतियों में वह मौजूद है, पर निराकार रूप में उसकी कोई आकृति नहीं है। साकार रूप में हज़ारों उसके पांव हैं, निराकार रूप में उसका कोई भी पांव नहीं। इसी तरह उसके हज़ारों ही नाक हैं, फिर भी गंध लेने हेतु निर्गुण रूप में उसकी कोई नाक नहीं है। उस निर्गुण के सगुण प्रसार की सुंदर तस्वीर प्रस्तुत करते हुए श्री गुरु नानक देव जी फरमान करते हैं कि समस्त प्राणियों में एक ही परिपूर्ण परमेश्वर की ज्योति जग रही है। उसी की ज्योति से सब में प्रकाश है अर्थात् सूझ-बूझ है। उसी के नूर से सभी नूरी हैं :

सहस तव नैन नन नैन हहि तोहि कउ सहस मूरति नना एक तुोही ॥
सहस पद बिमल नन एक पद गंध बिनु सहस तव गंध इव चलत मोही ॥२॥
सभ महि जोति जोति है सोइ ॥
तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥
(पन्ना १३)

गुरमुखों को परमेश्वर के नाम का ही आधार है। उसकी लीला अनंत है। उसका अंत कोई नहीं पा सकता। गुरु-कृपा से उसका नाम जिसके जीवन का आधार बन जाता है उसी का जीवन धन्य हो जाता है। श्री गुरु नानक पातशाह के कहे गए पावन वचन हैं कि अगर मैं प्रभु का नाम जपता हूं तो मेरा जीवन बना रहता है, अन्यथा मेरी आत्मिक मौत हो जाती है :

आखा जीवा विसरै मरि जाउ ॥
आखणि अउखा साचा नाउ ॥ (पन्ना ९)

बेशक सच्चा नाम जपना सबसे कठिन है परंतु प्रभु की रहमत हो जाए तो सब कुछ मुमकिन है। वाहिगुरु कृपा करें! बाणी पढ़ते-सुनते हुए हमारे अंदर भी सच्चे नाम की भूख जाग पड़े और हमारा जीवन सफल हो जाए। ❂

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष साहिबान : २०

पंथ-रत्न जत्थेदार गुरचरन सिंघ 'टौहड़ा'

*-स. रूप सिंघ**

गुरु-ग्रंथ व गुरु-पंथ को रोम-रोम से समर्पित धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक अगुआ, प्रबुद्ध वक्ता, दर्शनी गुरसिक्ख, लम्बा समय राज्य सभा व लोक सभा के सदस्य एवं सिक्खों की सिरमौर संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर की अब तक की सबसे ज्यादा समय तक अध्यक्ष पद पर सुशोभित रही सम्मानित शख़्सियत पंथ-रत्न जत्थेदार गुरचरन सिंघ 'टौहड़ा' के बारे में मेरे लिए लिखना अगर असंभव नहीं तो मुश्किल अवश्य है। कारण, मैं टौहड़ा साहिब की जीवन-जाच का कायल हूं। मुझे टौहड़ा साहिब के नज़दीक रहने, उनके साथ काम करने, उनको सुनने व उनके बारे में पढ़ने का मौका मिला। उनके बारे में बहुत कुछ लिखा गया, लिखा जाएगा, खोज-कार्य होंगे किंतु समय बदलने के साथ-साथ (क्योंकि समय कई बार उचित समय हर सत्य बोलने की आज्ञा नहीं देता) और भी लिखा जाता रहेगा।

जत्थेदार गुरचरन सिंघ 'टौहड़ा' का जन्म २४ सितंबर, १९२४ ई. को साधारण किसान स. दलीप सिंघ और सरदारनी बसंत कौर के घर गांव टौहड़ा, तहसील नाभा, ज़िला पटियाला में हुआ। आपकी अभी ढाई वर्ष की ही बाल्यावस्था थी कि आपके पिता जी अकाल चलाना कर गए। टौहड़ा साहिब का पालन-पोषण उनके मामा जी ने किया जो कि अकाली लहर के सक्रिय वर्कर थे। टौहड़ा साहिब ने अक्षर-ज्ञान प्राइमरी स्कूल डकोदा से प्राप्त कर, पब्लिक स्कूल चरनारथल से कक्षा आठवीं का इम्तिहान पास किया। घर से स्कूल दूर होने और पारिवारिक एवं आर्थिक मज़बूरियों के कारण टौहड़ा साहिब निरंतर विद्या प्राप्त न कर सके परंतु कुछ समय संस्कृत विद्यालय, पटियाला से संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त किया। तीक्ष्ण बुद्धि का सदका उन्होंने १९४२ ई में पंजाब यूनीवर्सिटी, लाहौर से ज्ञानी का इम्तिहान पास किया। टौहड़ा साहिब को जवानी के कुछ वर्ष कृषि-कार्य में भी गुज़ारने पड़े। १३ वर्ष की उम्र १९३७ ई में टौहड़ा साहिब अमृत की दात प्राप्त कर, गुरु परिवार के सदस्य बनकर, गुरबाणी के नेमी तथा प्रेमी बन गए। ज्ञानी वरिआम सिंघ के साथी के रूप में कीर्तन करने का सदका आप जी की इलाके में पहचान प्रसिद्ध रागी के रूप में बनी।

नित्तनेम, आसा की वार के अलावा कई बाणियां एवं गुरबाणी के अनेकों शबद टौहड़ा साहिब को जुबानी याद थे। जवानी के समय उनको अमृत संचार समागमों के समय पांच प्यारों में शामिल होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ तथा शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अध्यक्ष-काल के समय कई बार अमृत-संचार समागमों में भी शामिल होते रहे। इनका अनंद कारज १६ वर्ष की उम्र में बीबी जोगिंदर कौर के साथ पटियाला में हुआ। उनके घर एक सुपुत्र ने जन्म लिया जो कुछ समय बाद अकाल चलाना कर गया। फिर उन्होंने अपनी धर्म-पत्नी की बहन की लड़की बीबी कुलदीप कौर को गोद ले लिया, जिसका अनंद कारज स. हरमेल सिंघ के साथ हुआ, जो पटियाला में निवास रखते हैं।

अकाल के पुजारी जत्थेदार गुरचरन सिंघ

**सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर-१४३००१; मो. ९८१४६-३७९७९*

'टौहड़ा' १९३८ ई. में अकाली दल में भर्ती हो गए। २० वर्ष की जवानी में टौहड़ा साहिब ने पहली बार जेल-यात्रा की और फिर अकाली दल द्वारा लगे हर मोर्चे के समय इस नेम को सिदक-भरोसे के साथ निभाया। अनुशासित सिक्खी जीवन, सख़्त मेहनत, नि:स्वार्थी जज़्बे को देखते हुए समय के अकाली अगुओं ने टौहड़ा साहिब को १९४८ ई. में रियासती अकाली दल का सचिव होने का गौरव बख़्शिश किया। सादगी, संयमी, समय की पाबंदी वाले स्वभाव तथा पार्टी के प्रति समर्पण की भावना के कारण ये १९५२ ई. में शिरोमणि अकाली दल के ज़िला जत्थेदार चुने गए। 'जत्थेदार' शब्द टौहड़ा साहिब की शख़्सियत के साथ पूर्ण रूप से सुमेल खाता और बाखूबी जंचता था। १९५९ ई. में आप जी को शिरोमणि अकाली दल का उपाध्यक्ष बनने का गौरव प्राप्त हुआ।

१९६० ई. में शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के जनरल चुनाव के समय टौहड़ा साहिब शिरोमणि कमेटी के सदस्य चुने गए तथा अंतिम सांसों तक चुने हुए सदस्य की हैसियत से क्रियाशील रहे। पहले चुनाव के समय उन्होंने चुनाव फंड में से पंथ-रत्न मास्टर तारा सिंघ जी को पार्टी के पैसे वापिस किए और कहा था कि "चुनाव तो मैंने पैदल व साइकिल पर चलकर लड़ी है। यह पंथ की अमानत है जो मैं वापिस कर रहा हूं।" १३ मार्च, १९६५ ई. को टौहड़ा साहिब पहली बार कार्यकारिणी के सदस्य चुने गए। १२ नवंबर, १९६७, २७ अक्तूबर, १९६८, २९ नवंबर, १९६९, २६ नवंबर, १९७०, १० अक्तूबर, १९७१ तथा २३ अक्तूबर, १९७२ को हुए वार्षिक चुनाव के दौरान टौहड़ा साहिब कार्यकारिणी के सदस्य चुने जाते रहे। ३० नवंबर, १९७२ ई. को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अध्यक्ष स. (संत) चंनण सिंघ के अकाल चलाना कर जाने पर जत्थेदार गुरचरन सिंघ 'टौहड़ा' को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। ६ जनवरी, १९७३ ई. को बाकायदा अध्यक्ष-पद के चुनाव के समय टौहड़ा साहिब अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी चुने गए तथा ३१ मार्च, १९७३ ई. को पहली बार उनकी अध्यक्षता में बज़ट इजलास हुआ। फिर यह सिलसिला निरंतर जारी रहा। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के मौजूदा रिकार्ड के अनुसार जत्थेदार गुरचरन सिंघ 'टौहड़ा' ६ जनवरी, १९७३ ई. से २३ मार्च, १९८६ ई.; ३० नवंबर, १९८६ ई. से २८ नवंबर, १९९० ई.; १३ नवंबर, १९९१ ई. से १३ अक्तूबर, १९९६ ई.; २० दिसंबर, १९९६ ई. से १६ मार्च, १९९९ ई. और फिर २७ जुलाई, २००३ ई. से ३१ मार्च, २००४ ई. तक सिक्ख पार्लियामेंट, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर के सबसे सम्मानित एवं उच्च पद-- अध्यक्ष के पद पर शोभनीय रहे। पंथक जज़्बे से सराबोर टौहड़ा साहिब को जी. टी. वी. के प्रोग्राम 'आप की अदालत' में पूछा गया कि "शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की अध्यक्षता कब तक करोगे ?" अन्होंने गुरु-भरोसे में सहज स्वाभाविक ही जवाब दिया-- "जब तक धर्मराज नहीं बुला लेता।" उनका यह कहना बिल्कुल सच हुआ।

शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के जनरल चुनाव भी टौहड़ा साहिब को रिट दायर कर करवाने पड़े। इनके समय १९७९ ई. तथा १९९६ ई. में जनरल चुनाव हुआ तथा नये बने हाऊस में फिर अध्यक्ष चुने जाते रहे। १९७७ ई. से १९७९ ई. तक लोक सभा के सदस्य तथा १९६९ ई. से २००४ ई. के दौरान छ: बार राज्य सभा के सदस्य चुने गए। २१ मार्च, १९९३ ई. से केंद्रीय श्री गुरु सिंघ सभा के अध्यक्ष तथा सन् १९९५ से सिक्ख एजूकेशनल सोसायटी, चंडीगढ़ के अध्यक्ष के पद पर भी कार्यशील रहे। तख़्त सचखंड श्री हजूर, अबिचलनगर साहिब के बोर्ड के अध्यक्ष के अतिरिक्त वे काफी लंबा समय

उसके सदस्य भी रहे। सभी सेवाओं का ज़िक्र करना मुश्किल है।

१९७३ ई में जिस समय टौहड़ा साहिब पहली बार शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अध्यक्ष बने तो उस समय शिरोमणि गु. प्र. कमेटी मात्र गिनती के स्कूल एवं एक इंजीनियरिंग कॉलेज चला रही थी। उनके कार्यकाल में पावन ऐतिहासिक सरोवरों की कार-सेवा आरंभ हुई, ऐतिहासिक गुरुद्वारों की इमारतों के नव-निर्माण का कार्य, गुरुपर्व तथा शताब्दियां बड़े स्तर पर मनाने की प्रथा स्थापित हुई। श्री गुरु रामदास अस्पताल, श्री अमृतसर, श्री गुरु रामदास इंस्टीच्यूट ऑफ मेडिकल साइंस्ज एण्ड रीसर्च श्री अमृतसर; श्री गुरु रामदास इंस्टीच्यूट ऑफ डेंटल साइंस्ज़ एण्ड रीसर्च, श्री अमृतसर, मीरी-पीरी इंस्टीच्यूट ऑफ मेडिकल साइंस्ज़ एण्ड रीसर्च, शाहबाद मारकंडा (हरियाणा), बाबा बंदा सिंघ बहादर इंजीनियरिंग कॉलेज, फ़तहिगढ़ साहिब तथा अनेकों डिग्री कॉलेज एवं पब्लिक स्कूल अस्तित्व में आए; सिक्ख धर्म के प्रचार-प्रसार में शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की पहचान बनी तथा शिरोमणि गु. प्र. कमेटी पंजाब का बड़ा पब्लिकेशन संस्थान बना। दिल्ली सिक्ख गुरुद्वारा एक्ट-१९७१ को बनाने में टौहड़ा साहिब का विशेष योगदान था। उनके प्रयत्नों के कारण ही गुरुद्वारों पर लगी सीलिंग हटी। २४ जून, १९७५ ई. को देश भर में लगी आपातकालीन स्थिति का विरोध सबसे पहले एवं ज्यादा सिक्खों द्वारा किया गया, जिसके नेता जत्थेदार गुरचरन सिंघ 'टौहड़ा' थे। कोई भी मोर्चा टौहड़ा साहिब के जीवन का ऐसा नहीं, जिसमें उन्होंने गिरफ्तार होकर कैद न काटी हो।

उनकी मेहनत, लगन, तीक्ष्ण बुद्धि तथा सार्थक प्रयत्नों का सदका ही शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर को सिक्खों की पार्लियामेंट, शिरोमणि सिक्ख संस्था होने का सम्मान हासिल हुआ। टौहड़ा छोटा-सा गांव था, जिसमें प्राइमरी स्कूल भी नहीं था। जत्थेदार टौहड़ा साहिब की अनूठी शख़्सियत का सदका ही विश्वव्यापी सिक्ख भाईचारे में उनकी अद्वितीय पहचान बनी। अंतिम समय तक टौहड़ा साहिब टौहड़ा गांव में अपने पुराने घर में निवास रखते रहे। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी का इतनी बार अध्यक्ष बनना टौहड़ा साहिब की ज़रूरत ही नहीं, बल्कि समकालीन हालात की मज़बूरी व ज़रूरत भी थी। टौहड़ा साहिब राज्यों की भीतरी स्वतंत्रता के पक्ष में थे। उनका कहना था कि आधुनिक राजनीतिक वातावरण में हलेमी (नम्र) राज्य संभव नहीं। समकालीन हालात की मज़बूरियों के कारण टौहड़ा साहिब सिक्ख कौम, पंजाब व पंजाबियत के बारे में वो कुछ नहीं कर सके जो करना सोचते व चाहते थे। समय-स्थान की मज़बूरियों की कलराठी धरती पर उगे गुलाब - टौहड़ा साहिब राजनीतिक मज़बूरियों के कारण मुरझा गए। टौहड़ा साहिब सोचते थे कि सिक्ख सियासत सिक्ख सिद्धांतों तथा जज़्बों पर आधारित होनी चाहिए। यही कारण था कि उनकी ज्यादातर शक्ति सिक्ख सियासत को सिक्ख जज़्बों के साथ जोड़ने में ही गुज़र गई। उनका दृढ़ विश्वास था कि अकाली कहलाने वालों को केवल अकाल का पुजारी होना ज़रूरी है परंतु सरकार चलाने के लिए धर्म-निष्पक्ष होना मज़बूरी है। दरवेश, दानिशवर, सिक्ख नेता टौहड़ा साहिब सिक्ख विद्वानों, विचारवानों तथा बुद्धिजीवियों के कद्रदान थे। टौहड़ा साहिब ऐसी शख़्सियत थे जिनको पंथ का रौशन-दिमाग अगुआ, बाबा बोहड़ तथा आदर्श सिक्ख नेता के तखल्लस मिले किंतु उनके विरोधी इनको कामरेड, मौकाप्रस्त तथा दगाबाज़ भी कह जाते और वे हंसकर सहन कर लेते थे।

पंथ के रौशन-दिमाग अगुआ के रूप में

जाने जाते जत्थेदार टौहड़ा साहिब को राजशाही, रजवाड़ाशाही ज़मींदारी-प्रथा, कथित साधवाद, डेरावाद के विरुद्ध लंबा संघर्ष करना पड़ा। लंबा संघर्षमयी जीवन होने के कारण उनके बोलों से गुरबाणी की महक, सिक्खी सिद्धांतों के प्रति बद्धता, पंथप्रस्ती, पंजाब तथा पंजाबियत के लिए दर्द बोलता प्रकट होता था। जीवन भर उनको कई तरह के उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ा। कई बार ज्वार-भाटों का सामना करना पड़ा और कई बार शांत सागरों का अंत पाना पड़ा। सिक्ख जज़्बातों की तर्जमानी, जो टौहड़ा साहिब कर गए हैं, वह एक मिसाल है। टौहड़ा साहिब को लोगों से मिलने के लिए अमृत वेले उठना पड़ता। टौहड़ा साहिब तैयार-बर-तैयार होकर प्रात: छ: बजे आए मेहमानों से मिलते थे। सफेद लिबास, नीली दसतार, चेहरे की गंभीरता तथा नैनों का तेज, सफेद दाहड़ा (दाढ़ी) टौहड़ा साहिब की शख़्सियत को बयान करने में काफी सहायक होते। टौहड़ा साहिब की बहुपक्षीय शख़्सियत के पास से दर्शन करने को मन लोचता था; विचार श्रवण करने को मन तरसता था। टौहड़ा साहिब की प्रभावशाली शख़्सियत के सत्कार तथा प्रभाव को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के सेवादार से सचिव तक कबूल करते थे। उनका फोन सुनने के समय संबंधित अधिकारी चैन से नहीं बैठ सकता था। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के कार्यालयों में छाई ख़ामोशी टौहड़ा साहिब की आमद को मूक भाषा में प्रस्तुत करती। टौहड़ा साहिब के पंथक वचनों का असर केवल पंजाब तक ही सीमित नहीं था, बल्कि केंद्रीय सरकार भी उनको प्राथमिकता देती थी। टौहड़ा साहिब उचित समय पर बोलते थे तथा उनका हर बोल ख़बर होता था।

अप्रैल, १९७८ ई में घटित हुए निरंकारी कांड, जून, १९८४ ई में घटित घल्लूघारे तथा आप्रेशन ब्लैक थंडर ने टौहड़ा साहिब को गहरे मानसिक जख़्म दिए। किसानों की कंगाली एवं उनको खुदकुशियां करने के रास्ते पर ले जाने वाली किसान मारू नीतियां तथा मज़दूरों की मज़बूरियों से टौहड़ा साहिब भली-भांति वाकिफ़ थे। विद्या के क्षेत्र में आई गिरावट, नकल, नंगेज तथा नशों की दीमक से पंजाब व पंजाबियत का जो नुकसान हुआ उससे वे बेहद निराश थे। वे कहते थे कि शारीरिक नशे बहुत बुरे हैं। ये केवल शरीर को ही गालते हैं, जबकि हकूमत का नशा कई बार कौमों को बर्बाद कर देता है। पंजाब के बुरे दिनों में जितने भी प्रतिनिधि-मंडल प्रधानमंत्री तथा केंद्रीय सरकार को मिलने गए, उनमें टौहड़ा साहिब की हाज़री आवश्यक थी। जिस बेबाकी से टौहड़ा साहिब सिक्खों व पंजाब के मामलों के बारे में वार्तालाप करने का ढंग व सामर्थ्य रखते थे, वह किसी अन्य में नहीं थी। टौहड़ा साहिब कहते थे कि केंद्र सरकार पंजाब एवं सिक्खों के प्रति सतर्क नहीं है, यूं ही बातचीत द्वारा ड्रामेबाज़ी करती है। मातृ-भाषा पंजाबी व पंजाबी सभ्याचार में आ रही गिरावट से भी परेशान थे टौहड़ा साहिब। उनकी गैरहाज़री में प्रबंधकीय कमियों के कारण कार्यालय द्वारा पंथ-प्रसिद्ध कथावाचक ज्ञानी संत सिंघ जी मसकीन तथा अमेरिकन सिक्खों के साथ हुए अभद्र व्यवहार एवं अपमान की टौहड़ा साहिब ने लिखित क्षमा-याचना की। उनके माफीनुमा पत्र को पढ़कर ज्ञानी संत सिंघ जी मसकीन की आंखें भर आईं।

जीवन-संग्राम के दौरान टौहड़ा साहिब को बहुत सारी मुश्किलों, रुकावटों, दुश्वारियों, कठिन हालातों तथा कठिन रास्तों को नंगे पांव तय करना पड़ा परंतु वे सदैव सद-जागृत गुरसिक्ख के रूप में चढ़दी कला में विचरण करते रहे। टौहड़ा साहिब पंथक गुलशन में बहार और खुशी देखना चाहते थे। उनके विरोधियों द्वारा उन पर जानलेवा हमले भी किए गए। उनके

प्यारे साथी शहीद भी हुए परंतु उन्होंने सिद्धांतों के साथ समझौता नहीं किया। पंथक जज़्बों तथा मामलों के दफ़न होने के कारण टौहड़ा साहिब उदास, खिन्न एवं तटस्थ थे।

ज़िंदगी के अंतिम वर्ष में जत्थेदार टौहड़ा साहिब खुशमिज़ाज एवं हंसमुख नहीं रहे। वे उदास, गमगीन तथा चिंतित दिखाई देते थे। वे प्रत्येक से मिलना चाहते थे परंतु उनके कथित नज़दीकी आम आदमी को उनके पास न आने देते। जत्थेदार हरबंस सिंघ मंझपुर की प्रबल इच्छा थी कि उनकी जीवन-कहानी रिकार्ड हो सके। उन्होंने मुझे इस कार्य के लिए प्रेरित भी किया परंतु हम कामयाब न हो सके और हमसे शती का सिक्ख इतिहास जाता रहा, जिसका हमें सदैव अफसोस रहेगा।

१९९९ ई में लीडरशिप के विचारों की भिन्नता के कारण टौहड़ा साहिब को अकाली दल में से निकाल दिया गया तथा शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अध्यक्ष की सत्कारयोग्य पदवी से भी अलग कर दिया गया। उन हालातों का संताप दोनों पक्षों को भुगतना पड़ा और लाभ कांग्रेस ले गई। टौहड़ा साहिब की इच्छा थी कि 'पंथ-तंत्र' स्थापित हो सके क्योंकि वे जानते थे कि 'गुरु-पंथ' ने ही 'गुरु-ज्योति' के अधीन अगुआई करनी है। उनको दर्द था कि पंथक-उमंग पंथक कहलाने वालों में से कम हो रही है।

आखिरी बार शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अध्यक्ष बनकर भी वे कभी प्रसन्नचित्त नज़र नहीं आए, बल्कि उनको पास से देखने से ऐसे महसूस होता था कि उनके स्वाभिमान को भारी ठेस पहुंची है, जिसका दर्द उनके उतरे हुए चेहरे से दीख पड़ता था। उनको चिंता एवं उदासी ने घेरा हुआ था। जो वे करना चाहते थे वो कर न सके।

टौहड़ा साहिब उदास थे कि उनको खालसा पंथ की तृतीय शताब्दी समारोह के समय पंथ की अगुआई करने से वंचित कर दिया गया। शायद ईश्वर को यही मंजूर था। २००४ ई. में श्री गुरु अंगद देव जी की जन्म-शताब्दी के समय उनका संदेश ई. टी. सी. चैनल को रिकार्ड करवाने का सौभाग्य दास को प्राप्त हुआ और यही संदेश उनका अंतिम संदेश बन गया। यह भी विचित्र इत्तफाक था कि पहली बार अध्यक्ष बनने पर श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर के अमृत सरोवर की कार-सेवा आरंभ हुई तथा उनके जीवन-काल की संपूर्णता भी श्री हरिमंदर साहिब के पावन सरोवर की कार-सेवा आरंभ करने के साथ हुई। २५ मार्च, २००४ को अमृत-सरोवर, श्री अमृतसर की कार-सेवा आरंभ कराते हुए वे करता पुरख के साथ अभेद होने के लिए तैयार हो गए। ३१ मार्च, २००४ ई. की आधी रात के बाद जत्थेदार गुरचरन सिंघ 'टौहड़ा' इस नाशमान तथा चलायमान संसार को अंतिम फ़तहि बुला गुरु-चरणों में जा बिराजे।

जीते-जी तथा अकाल चलाना कर जाने के उपरांत जो मान-सम्मान टौहड़ा साहिब को मिला उसने नये कीर्तिमान स्थापित किए। सिक्ख नेताओं के अलावा देश की हर पार्टी के अकावा धार्मिक, सामाजिक नेताओं ने उनको श्रद्धा-सत्कार भेंट किया। टौहड़ा साहिब के परलोक गमन कर जाने पर जहां उनके सगे-सम्बंधी, रिश्तेदार, सज्जन-मित्र, स्नेही, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के मुलाज़िम एवं अधिकारी रोए, वहीं दुश्मन भी गमगीन चेहरों तथा नम आंखों से उनकी अंतिम यात्रा में शामिल हुए। चाहे शारीरिक रूप से वे हम सब को सदा के लिए बिछोड़ा दे गए परंतु सिक्ख सोच के अनुसार जैसा उन्होंने जीवन गुज़ारा वो हम जैसे बहुत-से गुरु नानक-नाम लेवा गुरसिक्खों के लिए सदा प्रेरणा-स्रोत रहेगा। ❂

ख़बरनामा

प्रो. दविंदरपाल सिंघ की फांसी की सज़ा उम्र कैद में करना सराहनीय

श्री अमृतसर : ३१ मार्च : देश की सर्वोच्च अदालत सुप्रीम कोर्ट द्वारा प्रो. दविंदरपाल सिंघ (भुल्लर) की फांसी की सज़ा को उम्र कैद में परिवर्तित कर देने वाले फैसले को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने सराहनीय बताया है।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि बेशक यह फैसला आने में बहुत देर हुई है, फिर भी सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले से सिक्खों के मन में न्यायपालिका के प्रति और भी विश्वास की भावना पैदा हुई है। उन्होंने कहा कि इसके लिए शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा पंजाब के गवर्नर तथा देश के राष्ट्रपति के पास अपीलें की गई थीं। उन्होंने कहा कि प्रो. दविंदरपाल सिंघ (भुल्लर) के मामले में अदालत में पेश १३३ गवाहों में से किसी एक ने भी इसके विरुद्ध गवाही नहीं दी थी और इसी कारण इसे फांसी की सज़ा सुनाते वक्त जज भी एकमत नहीं थे। उन्होंने कहा कि प्रो. दविंदरपाल सिंघ (भुल्लर) का मामला सिक्ख भावनाओं के साथ जुड़ा है। इसने पहले से ही लंबा समय जेल काट ली है। जेल की कालकोठरी ने इसे मानसिक रोगी बना दिया है। सरकार को चाहिए कि वो इसे तुरंत रिहा कर दे।

अमेरिका सरकार कैफे प्रेस नामक कंपनी के डिज़ाइनर के विरुद्ध सख़्त कार्यवाही करे : जत्थेदार अवतार सिंघ

श्री अमृतसर : ७ अप्रैल : कैफे प्रेस नामक कंपनी द्वारा सिक्ख भावनाएं भड़काने की कोशिश के रूप में अपने विभिन्न उत्पादों-- चप्पलों, टी-शर्टों एवं अंडर गारमेंट्स पर श्री हरिमंदर साहिब, खंडा, सिक्ख गुरु साहिबान तथा अन्य सिक्खों की तसवीरें छापे जाने की सख़्त शब्दों में निंदा करते हुए जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने अमेरिका सरकार से अपील की है कि इस कंपनी के काम पर तुरंत पाबंदी लगाई जाए तथा इसके मालिक, अधिकारियों एवं डिज़ाइनर के खिलाफ सिक्खों की धार्मिक भावनाओं को भड़काने के दोष के तहत केस दर्ज किया जाए।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि इस कंपनी व इसके डिज़ाइनर की इस घटिया करतूत से सिक्खों के हृदय को भारी ठेस पहुंची है। उन्होंने कहा कि यह सब कुछ कंपनी द्वारा जान-बूझकर किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि सरबत्त का भला मांगने वाली तथा दूसरे देशों के विकास में भी अहम योगदान देने वाली सिक्ख कौम की भावनाओं के साथ इस कंपनी तथा इसके डिज़ाइनर ने खिलवाड़ किया है। कंपनी तथा इसके डिज़ाइनर द्वारा किया गया यह गुनाह क्षमायोग्य नहीं है। उन्होंने कहा कि सिक्ख हर धर्म का दिल से सम्मान करते हैं, अत: वे अपने धर्म का अपमान कभी बर्दाश्त नहीं कर सकते।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी सिक्ख पंथ की धार्मिक संस्था है। किसी के द्वारा की गई ऐसी घिनौनी

हरकत को वो बर्दाश्त नहीं करेगी। उन्होंने कहा कि इस कंपनी तथा इसके डिज़ाइनर के खिलाफ जल्दी ही साइबर क्राइम के पास शिकायत की जाएगी। उन्होंने विश्व भर के लोगों से अपील की है कि इस कंपनी का पूर्ण रूप से बहिष्कार किया जाए तथा इस कंपनी द्वारा एतराज़योग्य डिज़ाइन किए उत्पाद न खरीदे जाएं ताकि प्रत्येक धर्म का सम्मान बहाल रह सके।

बरतानिया में सिक्खों को दसतार सजाकर काम करने की आज्ञा देना प्रशंसनीय

श्री अमृतसर : ९ अप्रैल : जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने बरतानिया के प्रधानमंत्री डेविड कैमरून द्वारा निर्माण-कार्य वाली जगहों पर काम करते समय सिक्खों को लोह टोप से छूट देकर दसतार सजाकर काम करने की आज्ञा देने को प्रशंसनीय बताया है।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि बरतानिया में सिक्खों का सफलता वाला इतिहास रहा है तथा बरतानिया की उन्नति के लिए विभिन्न क्षेत्रों में सिक्खों द्वारा अच्छा योगदान डाला गया है, जिसे हमेशा याद रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि बरतानिया के प्रधानमंत्री डेविड कैमरून द्वारा दसतार को सम्मान भेंट करते हुए निर्माण-कार्य के समय सिक्खों को दसतार सजाकर काम करने की अनुमति देने से सिक्ख कौम में खुशी की लहर है। उन्होंने डेविड कैमरून के इस फैसले का स्वागत किया है। उन्होंने कहा कि दूसरे देशों को भी चाहिए कि वे भी सिक्खों की धार्मिक भावनाओं को समझकर सिक्ख भाईचारे की मुश्किलों को दूर करने की तरफ ध्यान दें।

स. खुशवंत सिंघ तथा डॉ. गुरभगत सिंघ के देहांत पर जत्थेदार अवतार सिंघ द्वारा शोक प्रकट

श्री अमृतसर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने सिक्ख जगत के प्रसिद्ध विद्वान लेखक स. खुशवंत सिंघ तथा डॉ. गुरभगत सिंघ के देहांत पर गहरे शोक का प्रकटावा किया है।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि स. खुशवंत सिंघ ने पत्रकारिता के साथ-साथ अपनी कलम से लगभग चालीस पुस्तकों की रचना की। उन्होंने कहा कि स. खुशवंत सिंघ ने जून, १९८४ में श्री अकाल तख़्त साहिब पर हुए फौजी हमले के रोष में भारत सरकार द्वारा मिला पदम भूषण अवार्ड वापिस कर दिया था। उन्होंने कहा कि डॉ. गुरभगत सिंघ ने ऐतिहासिक शोध के साथ-साथ सिक्ख विचारधारा को राजनीतिक दृष्टिकोण से भी स्थापित किया। उन्होंने बताया कि डॉ. गुरभगत सिंघ श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी के अंग्रेजी अनुवाद के कार्य में संलिप्त थे कि उन्हें अकाल पुरख का बुलावा आ गया। डॉ. गुरभगत सिंघ ने सिक्ख इतिहास एवं समाज-शास्त्र के प्रसंग को स्थापित करने के लिए बड़े प्रयत्न किए। जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि उनकी अकाल पुरख के चरणों में अरदास है कि इन दोनों बिछुड़ी रूहों को वे अपने चरणों में निवास दें।

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०५-२०१४